उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

हल्द्वानी

एम.ए. (ज्योतिष)

MAJY-610

चतुर्थ सेमेस्टर

ज्योतिष शास्त्र एवं यात्रा विमर्श-02

मानविकी विद्याशाखा

ज्योतिष विभाग

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं0- 05946-288052
टॉल फ्री नं0- 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

अध्ययन समिति – (फरवरी 2020)

अध्यक्ष

कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

प्रोफेसर एच.पी. शुक्ल – (संयोजक)

निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी – (समन्वयक)

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ज्योतिष विभाग

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर देवीप्रसाद त्रिपाठी

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रोफेसर विनय कुमार पाण्डेय

अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी।

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय

अध्यक्ष, पौरोहित्य विभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री
राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सम्पादन एवं संयोजन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

इकाई लेखन	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी **असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**1**	**1, 2, 3, 4**
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी **असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**2**	**1, 2, 3, 4**

प्रकाशन वर्ष- 2022

प्रकाशक - उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

मुद्रक: - सहारनपुर इलेक्ट्रिक प्रेस, सहारनपुर (उ0प्र0)

ISBN NO. -

नोट : - (इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।)

एम.ए. (ज्योतिष) MAJY- 610

चतुर्थ सेमेस्टर - पंचम पत्र

अनुक्रम

प्रथम खण्ड - यात्रा मुहूर्त्त	**पृष्ठ - 2**
इकाई :1 घात विचार	3-13
इकाई :2 यात्रा में शकुन विचार	14-24
इकाई :3 यात्रा में कृत्याकृत्य विचार	25-35
इकाई:4 गुरू एवं शुक्र विचार	36-47
द्वितीय खण्ड – यात्रा में शुद्धि विचार	**48**
इकाई :1 यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार	49-58
इकाई :2 यात्राकाल में दिक्शुद्धि विचार	59-72
इकाई :3 त्रिविधयात्रा में शुद्धि विचार	73-90
इकाई: 4 यात्राकाल में भावफल	91-103

एम.ए. (ज्योतिष)

(MAJY-20)

चतुर्थ सेमेस्टर

पंचम पत्र

ज्योतिष शास्त्र एवं यात्रा विमर्श-02

MAJY-610

खण्ड - 1
यात्रा में शुद्धि विचार

इकाई - 1 घात विचार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 घात परिचय
1.4 यात्रा में घात विचार
1.5 सारांश
1.6 पारिभाषिक शब्दावली
1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.9 सहायक पाठ्यसामग्री
1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एम.ए. ज्योतिष चतुर्थ सेमेस्टर (एमएजेवाई -610) के प्रथम खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है–घात विचार। इससे पूर्व आपने यात्राकालिक वार एवं लग्न शुद्धि से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'यात्राकालिक घात विचार' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

घात का सामान्य अर्थ अशुभकारक से है। यात्रा में घात लगने से अशुभकारी घटनायें घटित होती है। अत: इसका ज्ञान आप सभी के लिए आवश्यक है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'घात विचार' के बारे में तथा उसके विविध पक्षों को जानने का प्रयास करते है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- घात को परिभाषित कर सकेंगे।
- यात्रा में घात विचार के अवयवों को समझा सकेंगे।
- यात्रा में घात विचार कैसे किया जाता है, इसको समझ लेंगे।
- घात विचार का महत्व जान जायेंगे।

1.3 घात परिचय

यात्रा मानव जीवन से जुड़ा एक विशेष हिस्सा है। जीवन क्षेत्र में वह प्रतिदिन स्वगृह से कहीं न कहीं तक की यात्रा करता है। ऐसे यात्रा को सामान्योद्देशक यात्रा कहते है। घात का अर्थ है – अशुभ। आपने देखा होगा कि काफी बड़े तादाद में लोग गन्तव्य स्थल तक कहीं जाते हैं, रास्ते में ही उनका दुर्घटना हो जाता है और वह अपने स्थल पर पहुॅच नहीं पाते है। इसी प्रकार छोटी छोटी दुर्घटनायें तो आमतौर पर प्रतिदिन ही देखी जाती है। ऐसी परिस्थितियों में ही कहा जाता है कि अमुक के लिए वह यात्रा घातक हो गया आदि ... इत्यादि। यात्रा जब घातक होता है तो मनुष्य को शारीरिक पीड़ा के साथ – साथ उसकी मृत्यु तक हो जाती है। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आचार्यों ने ज्योतिष में घात विचार किया है।

आइए अब इस इकाई में ज्योतिषोक्त घात विचार का अध्ययन करते हैं, जिससे आपलोग भली – भॉति यात्रा में कथित घात का ज्ञान कर लेंगे तथा स्वजीवन को इस प्रकार की समस्याओं से बचा पाने में भी समर्थ होंगे।

1.4 यात्रा में घात विचार –

यात्राकालिक घात विचार के अन्तर्गत सर्वप्रथम हमें यह जानना चाहिए कि घात के दृष्टिकोण से चन्द्रमा यात्रा में सबसे प्रमुख माना गया है। इसलिए यहाँ घात चन्द्र का विचार करते है। यथा –

भूपञ्चाङ्कद्वयंगदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशाकश्चि घाताख्यचन्द्रः।
मेषादीनां राजसेवाविवादे वर्ज्यो युद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः।।

मेषादि 12 राशियों के लिए क्रम से प्रथम, पंचम, नवम, द्वितीय, षष्ठ, दशम, तृतीय, सप्तम, चतुर्थ, अष्टम, एकादश एवं द्वादश चन्द्रमा घातक होता है। यथा मेष राशिवालों के लिए मेषस्थ, वृष राशि – वालों के लिए पंचम कन्या राशिगत, मिथुन राशिवालों के लिए द्वितीय कर्क राशिगत चन्द्रमा घातक होता है। इसी प्रकार सभी राशियों में समझना चाहिए।

घात चन्द्र में त्याज्य नक्षत्र पाद (परिहार) -

आग्नेयत्वाष्ट्रजलपपित्रयवासवरौद्रभे
मूलब्राह्मजपादर्क्षे पित्रयमूलाजभे क्रमात्।
रूपद्वयग्न्यग्निभूरामद्वयब्ध्यग्न्यब्धियुगाग्नयः
घातचन्द्रे विष्ण्यपादा मेषाद्वर्ज्या मनीषिभिः।।

मेषादि राशियों में क्रम से कृत्तिका प्रथम पाद, चित्रा का द्वितीय, शतभिष का ३ , मघा का तृतीय, धनिष्ठा का प्रथम, आर्द्रा का तृतीय, मूल का द्वितीय, रोहिणी का चतुर्थ, पूर्वाभाद्रपदा का तृतीय, मघा का चतुर्थ, मूल का चतुर्थ, तथा पूर्वाभाद्रपदा का तृतीय चरण त्याज्य कहा गया है ।

घात तिथि –

गोस्त्रीझषे घाततिथिस्तु पूर्णा भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नन्दा।
कौर्प्याजयोर्नक्रधटे च रिक्ता जया धनुःकुम्भहरौ न शस्ताः।।

वृष – कन्या और मीन राशि वालों के लिए पूर्णा (५,१०,१५) तिथियॉ, मिथुन, कर्क राशि वालों के लिए भद्रा (२,७,१२) तिथियॉ, वृश्चिक और मेष राशि के लिए नन्दा (१,६,११) तिथियॉ मकर और तुला के लिए, रिक्ता (४,९,१४) तिथियॉ, धनु , कुम्भ और सिंह राशि वालों के लिए जया (३,८,१३) तिथियॉ घात संज्ञक होती है। ये घात तिथियॉ यात्रा के लिए अशुभ होती है ।

घात वार –

नक्रे भौमो गोहरिस्त्रीषु मन्दश्चन्दो द्वन्द्वेऽर्कोऽजभे ज्ञश्च कर्के।
शुक्रः कोदण्डालिमीनेषु कुम्भे जूके जीवो घातवारा न शस्ताः।।

मकर राशि के लिए मंगलवार, वृष- सिंह-कन्या राशियों के लिए शनिवार, मिथुन के लिए सोमवार,

मेष राशि के लिए रविवार, कर्क राशि के लिए बुधवार, धनु – वृश्चिक और मीन राशि के लिए शुक्रवार तथा कुम्भ और तुला राशियों के लिए गुरूवार, घातवार होते हैं। ये शुभ नहीं होते है।

घात नक्षत्र –

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम्।
याम्यब्राह्मेशसार्पञ्च मेषादेर्घातभं न सत्॥

मेषादि राशियों में क्रम से मघा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, शतभिष,रेवती, भरणी, रोहिणी,आर्द्रा, आश्लेषा घात नक्षत्र होते हैं अर्थात् मेष राशिवालों के लिए मघा, वृष के लिए हस्त, मिथुन के लिए स्वाती, कर्क के लिए अनुराधा, सिंह के लिए मूल, कन्या के लिए श्रवण, तुला के लिए शतभिषा, वृश्चिक के लिए रेवती, धनु के लिए भरणी मकर के लिए रोहिणी, कुम्भ के लिए आर्द्रा तथा मीन के लिए आश्लेषा नक्षत्र घात संज्ञक होते हैं। जो शुभ नहीं होते है।

घात लग्न –

भूमिद्वयब्ध्यद्रिदिक्सूर्याङ्गाष्टाङ्केशाग्निसायकाः ।
मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः॥

मेष राशि के लिए मेष, वृष के लिए वृष, मिथुन के लिए कर्क, कर्क के लिए तुला, सिंह के लिए मकर, कन्या के लिए मीन, तुला के लिए कन्या, वृश्चिक के लिए वृश्चिक, धनु के लिए धनु, मकर के लिए कुम्भ, कुम्भ के लिए मिथुन, तथा मीन के लिए सिंह लग्न घात संज्ञक होते हैं । अत: इनमें यात्रा नहीं करनी चाहिए।

घात बोधक चक्र -

राशि	घातचन्द्र	नक्षत्रों के त्याज्य पाद	घात तिथि	घातवार	घात नक्षत्र	घात लग्न
मेष	मेष	कृत्तिका १	१,६,११	रविवार	मघा	मेष १
वृष	कन्या	चित्रा २	५,१०,१५	शनिवार	हस्त	वृष २
मिथुन	कुम्भ	शत. ३	२,७,१२	सोमवार	स्वाती	कर्क ४
कर्क	सिंह	मघा. ३	२,७,१२	बुधवार	अनु0	तुला ७
सिंह	मकर	धनि0 १	३,८,१३	शनिवार	मूल	मकर १०
कन्या	मिथुन	आर्द्रा. ३	५,१०,१५	शनिवार	श्रवण	मीन १२
तुला	धनु	मूल. २	४,९,१४	गुरूवार	शत.	कन्या ६

वृश्चिक	वृष	रोहि0४	१,६,९	शुक्रवार	रेव.	वृश्चिक ८
धनु	मीन	पू.भा.३	३,८,१३	शुक्रवार	भर.	धनु ९
मकर	सिंह	मघा. ४	४,९,१४	भौमवार	रोहि.	कुम्भ ११
कुम्भ	धनु	मूल. ४	३,८,१३	गुरूवार	आर्द्रा	मिथुन३
मीन	कुम्भ	पू.भा.३	५,१०,१५	शुक्रवार	आश्ले.	सिंह ५

योगिनी वास ज्ञान –

नवभूम्य: शिववह्नयोऽक्षविश्वेऽर्ककृता: शक्ररसास्तुरङ्गतिथ्य: ।

द्विदिशोऽमावसवश्च पूर्वत: स्युस्तिथय: सम्मुखवामगा न शस्ता: ।।

पूर्वादि दिशाओं में क्रम से प्रतिपदा और नवमी को पूर्व में, तृतीया और एकादशी को अग्निकोण में, पंचमी-त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी – द्वादशी को नैऋत्य में, षष्ठी - चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी – पूर्णिमा को वायव्य में, द्वितीया – दशमी को उत्तर में तथा अमावस्या -अष्टमी को ईशान कोण में योगिनी का निवास होता है। यात्रा में ये तिथियॉ योगिनी सम्मुख और वामभाग में शुभ नहीं होती।

कालपाश विचार –

कौबेरीतो वैपरीत्येन कालो वारेऽर्काद्ये सम्मुखेतस्य पास: ।

रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ यात्रा युद्धे सम्मुखे वर्जनीयौ ।।

रवि आदि वारों में उत्तर दिशा से विपरीत क्रम से काल का निवास रहता है। यथा – रविवार को उत्तर, सोमवार को वायव्य, मंगलवार को पश्चिम, बुधवार को नैर्ऋत्य, वृहस्पतिवार को दक्षिण, शुक्रवार को अग्निकोण एवं शनिवार को पूर्वदिशा में काल का वास रहता है। काल के सामने की दिशा में पाश का वास रहता है। रात में काल और पास विपरीत दिशा में वास करते है। ये दोनों युद्ध और यात्रा में सम्मुख हो तो वर्जित है।

काल पाश बोधक सारिणी –

		रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
दिन में	काल	उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य	दक्षिण	आग्नेय	पूर्व
	पाश	दक्षिण	आग्नेय	पूर्व	ईशान	उत्तर	वायव्य	पश्चिम
रात में	काल	दक्षिण	आग्नेय	पूर्व	ईशान	उत्तर	वायव्य	पश्चिम
	पाश	उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य	दक्षिण	आग्नेय	पूर्व

परिघ दण्ड विचार –

भानि स्थाप्यान्याब्धिदिक्षु सप्तसप्तानलर्क्षतः।
वायव्याग्नेयदिक्संस्थं परिघं नैव लङ्घयेत्॥

कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ करके ७-७ नक्षत्र पूर्वादि ४ दिशाओं में स्थापित करें और उसमें वायव्य और अग्निकोण में लगी हुई रेखा को कालदण्ड कहते हैं। यात्रा में कालदण्ड का उल्लंघन करना सर्वथा निषिद्ध है।

परिहार –

अग्नेर्दिशं नृपं इयात्पुरूहूतदिग्भैरेवं प्रदक्षिण गता विदिशोऽथ कृत्ये ।
आवश्यकेऽपि परिघं प्रविलङ्घ्य गच्छेदच्छूलं विहाय यदि दिक्तनुशुद्धिरस्ति॥

राजा को अग्निकोण की यात्रा पूर्व के नक्षत्रों कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु,पुष्य, आश्लेषा, में नैर्ऋत्य कोण की यात्रा दक्षिण के नक्षत्रों में मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा में वायव्य कोण की यात्रा पश्चिम के नक्षत्रों अनुराधा, ज्येष्ठा , मूल,पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण में तथा ईशान कोण की यात्रा उत्तर के नक्षत्रों में धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा , रेवती, अश्विनी, भरणी में करनी चाहिए । कार्य आवश्यक हो तो परिघदण्ड का उल्लंघन करके शूल को छोड़कर यदि दिग्द्वार लग्न शुद्ध हो तो यात्रा की जा सकती है।

प्रश्न लग्न से यात्राभंग योग –

विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टेऽथ चन्द्रे
मृतिभमदनसंस्थे लग्नगे भास्करेऽपि।
हिबुकनिधनहोराद्यूनगे चापि पापे
सपदि भवति भङ्गः प्रश्नकर्तुस्तदानीम्॥

प्रश्न काल में चन्द्रमा और मंगल से युत लग्न को शनि देखता हो, प्रश्न लग्न से सप्तम – अष्टम भाव में चन्द्रमा तथा लग्न में सूर्य हो, चतुर्थ, अष्टम, लग्न और सप्तम भाव में पापग्रह गये हों तो प्रश्न कर्ता का प्रश्न भंग हो जाता है। अर्थात् युद्ध में पराजय होती है अथवा यात्रा में सफलता नहीं मिलती है।

जीवपक्षादि नक्षत्र फल –

मार्तण्डे मृतपक्षगे हिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा।
यात्रा स्याद्विपरीतगे क्षयकरी द्वौ जीवपक्षे शुभा॥

ग्रस्तर्क्षे मृतपक्षतः शुभकरं ग्रस्तात्तथा कर्तरी।

यायीन्दुः स्थितिमान् रविर्जयकरौ तौ द्वौ तयोर्जीवगौ।।

सूर्य यदि मृतसंज्ञक नक्षत्रों में हो तथा चन्द्रमा जीवपक्ष संज्ञक नक्षत्रों में हो तो यात्रा शुभकारक होती है। यदि दोनों विपरीत स्थिति में चन्द्रमा मृतपक्ष में और सूर्य जीवपक्ष में हो तो यात्रा अशुभ कारक होती है। यदि दोनों जीवपक्ष में हो तो यात्रा शुभ होती है। मृतसंज्ञक नक्षत्रों की अपेक्षा ग्रस्त संज्ञक नक्षत्र शुभ होते हैं तथा ग्रस्त संज्ञक नक्षत्रों की अपेक्षा कर्त्तरी संज्ञक नक्षत्र शुभ होते हैं।चन्द्रमा यायी तथा सूर्य स्थायी होता है। यदि रवि – चन्द्र दोनों ही जीव पक्ष में स्थित हो तो उन दोनों यायी (यात्रा करने वाले या युद्ध में आक्रमण करने वाले) तथा स्थायी (जो स्थिर है अथवा जिस पर आक्रमण किया गया हो) दोनों की विजय होती है, अर्थात् सन्धि होती है।

स्थायी और यायी का विचार प्रमुख रूप से युद्ध यात्रा के लिए तथा किसी प्रकार के वाद – विवाद के प्रसंग में किया जाता है। जीव – मृत आदि का फल से आशय यह है कि वादी – प्रतिवादी के सूचक ग्रह क्रम से चन्द्रमा और सूर्य है। जब दोनों जीव पक्ष में होंगे तो दोनों पक्ष समान होंगे अर्थात् सन्धि होगी यदि चन्द्र और सूर्य दोनों ही मृत पक्ष में हो तो दोनों का नाश होता है। तथा जीवपक्ष में चन्द्रमा तथा मृतपक्ष में सूर्य हो तो यायी की, इससे विपरीत स्थिति सूर्य जीवपक्ष में चन्द्रमा मृत पक्ष में हो तो स्थायी की विजय होती है। ग्रस्त और कर्त्तरी योगों में अपेक्षाकृत कर्त्तरी योग शुभ होता है।

अकुल – कुल - कुलाकुल संज्ञा विचार –

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा –

दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः।

सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुला ज्ञो

मूलाम्बूपेशविधिभं दशषड्द्वितिथ्यः ।।

पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा

शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोऽर्काष्टेन्द्रवेदैमिताः।

यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले

सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः ।।

स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु और ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा रोहिणी) नक्षत्रों की १,३,५,७९,११,१३,१५ विषम तिथियों एवं सूर्य, चन्द्र , शनि और गुरूवासरों की अकुल संज्ञा होती है।

बुधवार , मूल, शतभिषा, आर्द्रा, अभिजित् नक्षत्रों एवं १०,६,२ तिथियों की कुलाकुल संज्ञा होती है।

तीनों पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा, चित्रा नक्षत्रों शुक्र और मंगलवासरों एवं १२,८,१४,४ तिथियों की कुल संज्ञा होती है।

अकुल संज्ञक तिथि – वार- नक्षत्रों में वाद – विवाद युद्ध आदि करने से यायी (वादी, आक्रामक) की विजय होती है, कुल संज्ञक तिथिवार नक्षत्रों में स्थायी (स्थिर, जिस पर आक्रमण होता है) की विजय होती है। कुलाकुल गणों में युद्ध करने वाले दोनों राजाओं की सन्धि होती है।

कुल, अकुल और कुलाकुल गणों का उपयोग प्राचीनकाल में युद्धादि कार्यों में किया जाता था। आजकल इनका उपयोग मात्र मुकदमा एवं वाद – विवाद में किया जाता है। अकुलसंज्ञक तिथि वार नक्षत्रों में मुकदमा दायर करने से मुकदमा करने वालो की विजय होती है। इनको आप चक्र से भी समझ सकते है।

संज्ञा	नक्षत्र	तिथि	वार	परिणाम
अकुल	भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, उ.फा., हस्त, स्वाती, अनुराधा, उ0षा0, धनिष्ठा, उ.भा., रेवती	१,३,५,७,९,११,१३,१५	रविवार,सोम गुरूवार शनिवार	यायी की विजय
कुलाकुल	आर्द्रा, मूल,अभिजित्, शतभिषा	२,६,१०	बुधवार	यायी और स्थायी की सन्धि
कुल	अश्विनी, कृत्तिका, मृगशीर्ष, पुष्य, मघा, पू0फा0, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पू0षा0, श्रवण, पू0भा0	४,८,१२,१४	भौमवार शुक्रवार	स्थायी की विजय

पथिराहुचक्रम् –

स्युधर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यर्थे
याम्याजाङ्घ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथो भानि कामे।
वह्नयार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि मोक्षेऽथ रोहि –
ण्याप्येन्द्रन्त्यर्क्षविश्वार्यमभदिनकरर्क्षाणि पथ्यादिराहौ ।।

पथि राहुचक्र के धर्ममार्ग में अश्विनी, पुष्य,आश्लेषा,धनिष्ठा, शतभिषा, विशाखा एवं अनुराधा नक्षत्र, अर्थ मार्ग में भरणी, पूर्वभाद्रपद, ज्येष्ठा, श्रवण, पुनर्वसु, मघा और स्वाती नक्षत्र, काममार्ग

में कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तरभाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित् और पूर्वाफाल्गुनि नक्षत्र, तथा मोक्ष मार्ग में रोहिणी, पूर्वाषाढा, मृगशिरा, रेवती, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनि तथा हस्त नक्षत्र होते है।

विशिष्ट यात्रा में पथि राहुचक्र का विचार किया जाता है। २८ नक्षत्रों को धर्म-अर्थ–काम-मोक्ष इन चार मार्गों में विभक्त कर दिया गया है। इन चारों भागों में सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति के अनुसार शुभाशुभ का विचार किया जाता है।

मार्ग	**नक्षत्र**
धर्म	अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा
अर्थ	भरणी, पुनर्वसु, मघा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, पू0भा0
काम	कृत्तिका, आर्द्रा, पू.फा., चित्रा, मूल, अभिजित्, उ.भा.
मोक्ष	रोहिणी, मृगशिर्ष, उ.फा., हस्त, पू.षा., उ.षा., रेवती

पथिराहु फल –

धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी वित्तगे धर्ममोक्षस्थितः शस्यते।
कामगे धर्ममोक्षार्थगः शोभनो मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते।।

पथिराहु चक्र में सूर्य यदि धर्ममार्ग में स्थित हो तथा चन्द्रमा धन मार्ग या मोक्ष मार्ग में स्थित हों अथवा धनमार्ग में सूर्य स्थित हों तथा धर्म – मोक्ष मार्ग में चन्द्रमा हो तो शुभ होताहै। काम मार्ग में सूर्य तथा धर्म और मोक्ष मार्ग में चन्द्रमा हों अथवा मोक्ष मार्ग में सूर्य एवं केवल धर्ममार्ग में चन्द्रमा हो तो शुभ फल कहा गया है।

बोध प्रश्न –

१. वृष राशि के लिए कौन सा चन्द्रमा घातक होता है –
   क. नवम ख. पंचम ग. दशम घ. सप्तम
२. घात चन्द्र में मघा नक्षत्र का कौन सा चरण त्याज्य है –
   क. प्रथम ख. द्वितीय ग.तृतीय घ. चतुर्थ
३. रिक्ता संज्ञक तिथि हैं –
   क. १,११,६ ख. २,७,१२ ग. ९,४,१४ घ. ५,१०,१५
४. कर्क राशि के वालों के लिए घात संज्ञक तिथि है -
   क. नन्दा ख. भद्रा ग. जया घ. रिक्ता
५. मेष राशि के लिये कौन सा वार घात संज्ञक है –
   क. रविवार ख. सोमवार ग. मंगलवार घ. बुधवार

६. मिथुन राशि वालों के लिये कौन सा नक्षत्र घात संज्ञक है –

क. हस्त ख. चित्रा ग. स्वाती घ. विशाखा

1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि यात्रा मानव जीवन से जुड़ा एक विशेष हिस्सा है। जीवन क्षेत्र में वह प्रतिदिन स्वगृह से कहीं न कहीं तक की यात्रा करता है। ऐसे यात्रा को सामान्योद्देशक यात्रा कहते है। घात का अर्थ है – अशुभ। आपने देखा होगा कि काफी बड़े तादाद में लोग गन्तव्य स्थल तक कहीं जाते हैं, रास्ते में ही उनका दुर्घटना हो जाता है और वह अपने स्थल पर पहुँच नहीं पाते है। इसी प्रकार छोटी छोटी दुर्घटनायें तो आमतौर पर प्रतिदिन ही देखी जाती है। ऐसी परिस्थितियों में ही कहा जाता है कि अमुक के लिए वह यात्रा घातक हो गया आदि ... इत्यादि। यात्रा जब घातक होता है तो मनुष्य को शारीरिक पीड़ा के साथ – साथ उसकी मृत्यु तक हो जाती है। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आचार्यों ने ज्योतिष में घात विचार किया है।
मेषादि 12 राशियों के लिए क्रम से प्रथम, पंचम, नवम, द्वितीय, षष्ठ, दशम, तृतीय, सप्तम, चतुर्थ, अष्टम, एकादश एवं द्वादश चन्द्रमा घातक होता है। यथा मेष राशिवालों के लिए मेषस्थ, वृष राशि – वालों के लिए पंचम कन्या राशिगत, मिथुन राशिवालों के लिए द्वितीय कर्क राशिगत चन्द्रमा घातक होता है। इसी प्रकार सभी राशियों में समझना चाहिए।

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

घात – अशुभ, कष्टप्रद
मेषस्थ - मेष राशि में स्थित
लग्नस्थ – लग्न में स्थित
राशिगत – राशि में गया हुआ
षष्ठ – ६
द्वादश – १२
पंचम– ५
पथिक – पथ में चलने वाला
पुरूषार्थ – धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. ग
4. ख
5. क
6. ग

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्त्तचिन्तामणि – यात्राप्रकरण
2. नारद संहिता – यात्राप्रकरण
3. प्रश्नमार्ग – यात्राप्रकरण
4. पूर्वकालामृतम् – यात्राप्रकरण

1.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. वशिष्ठ संहिता
2. अग्नि पुराण
3. पूर्वकालामृत
4. प्रश्नमार्ग

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. घात का परिचय दीजिये।
2. यात्राकालिक घात का वर्णन कीजिये।
3. घात नक्षत्र, घात वार एवं घात लग्न का उल्लेख कीजिये।
4. यात्रा में घात विचार क्यों आवश्यक है। लिखिये।

इकाई - 2 यात्रा में शकुन विचार

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 शकुन परिचय
2.4 यात्रा में शकुन विचार
2.5 सारांश
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 सहायक पाठ्यसामग्री
2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-610 के प्रथम खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – यात्रा में शकुन विचार। इससे पूर्व आपने यात्रा में घात से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप यात्राजन्ति क्रम में ही इस इकाई में 'शकुन' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

शकुन का सामान्य अर्थ है – पक्षी। यात्रा में पशु-पक्षी, मानव, दानव आदि इत्यादि से जुड़े शकुन प्रभावों कैसे होते है। मानव जीवन में उस शकुन का क्या भूमिका है। इन सभी विषयों का अध्ययन हम इस इकाई में करेंगे।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग यात्राकालिक 'शकुन' के बारे में तथा उसके शुभाशुभ प्रभावों को जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- शकुन को परिभाषित कर सकेंगे।
- शकुन के अवयवों को समझा सकेंगे।
- शकुन लगने वाले कारणों को समझ लेंगे।
- शकुन में कृत्याकृत्य को जान लेंगे।
- शकुन के महत्व को समझ लेंगे।

2.3 शकुन परिचय

मनुष्य जब यात्रा करता है तो यात्रा आरम्भ करने के स्थान से ही मार्ग में विविध प्रकार के जीव, जन्तु इत्यादि दिखलाई पड़ने लगते है। उन समस्त जीव-जन्तुओं का शकुन विचार के माध्यम से ज्योतिष शास्त्र के आचार्यों द्वारा उसका शुभाशुभ फल का विवेचन किया गया है। अत: अलग-अलग पदार्थों का अलग-अलग शकुन फल बतलाया गया है। इस इकाई में हम यात्राकालिक विविध शकुन का शुभाशुभ फल का ज्ञान करने जा रहे हैं।

शकुन के मुख्यत: दो प्रभाव है – एक शुभ शकुन दूसरा अशुभ शकुन। इस प्रकार आचार्यों ने अपने-अपने ग्रन्थों में शकुन का उक्त दोनों फलों का वर्णन किया है।

2.4 यात्रा में शकुन विचार

शकुन विचार –

चेतोनिमित्तशकुनैः खलु सुप्रशस्तै
र्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति।
सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोऽपि
चेतोविशुद्धिरधिका न च तो विनेयात्।।

राजा से सम्बन्धित शकुन का विचार करते हुए आचार्य कथन है कि मन की प्रसन्नता, अंग लक्षणादि शुभ निमित्तों तथा पशु – पक्षी एवं आकाश जन्य शुभ शकुनों के साथ – साथ लग्न के बल का ज्ञान कर जो राजा प्रस्थान करता है उसकी अभीष्ट सिद्धि होती है। शकुन आदि की अपेक्षा मन की शुद्धि अधिक महत्वपूर्ण होती है। यदि यात्रा काल में मन की प्रसन्नता न हो तो यात्रा नहीं करनी चाहिये।

निषिद्धकाल –

व्रतबन्धनदेवप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ।
न कदापि चलेदकालविद्युदधनवर्षातुहिनेऽपि सप्तरात्रम्।।

यज्ञोपवीत संस्कार में, देवालय में प्राणप्रतिष्ठा के समय, विवाहोत्सव में, जन्म सम्बन्धी सूतक और मृत्यु सम्बन्धी सूतक के समाप्त होने के पूर्व यात्रा नहीं करनी चाहिये।

शुभ शकुन –

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम्।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीर्षासतोक्षमद्यससुततस्त्रीदीप्तवैश्वानराः।।
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनार्ज्यासिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम्।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा मांगल्यगीताङ्कुशा
दृष्टः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तौ घटः स्वानुगः।।

ब्राह्मण (एक से अधिक ब्राह्मण), घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गाय, सरसों , कमल, वस्त्र, वेश्या, वाद्य, मयूर, नीलकण्ठ, नेवला, बँधा हुआ पशु, मॉस, शुभवाणी, पुष्प, ईख जल से भरा कलश, छत्र, मिट्टी, कन्या, रत्न, पाडी, श्वेत बैल, शराब, पुत्रसहित स्त्री, प्रज्वलित अग्नि, दर्पण,

काजल, धुले वस्त्रों के साथ धोबी, मछली, सिंहासन,रूदन रहित शव (मृत शरीर), पताका, शहद, बकरा, अस्त्र, गोरोचन, भारद्वाज (चातक) पक्षी, पालकी, वेदध्वनि, मांगलिक गीत, अंकुश तथा खाली घड़ा यात्री के पीछे की तरह जाता हुआ यदि यात्रा के समय दिखलाई पड़े तो शुभफलदायक होता है।

अशुभ शकुन -

बन्ध्या चर्म तुषास्थि सर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राटतृणव्याधिताः।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिता व्यंगक्षुधार्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम्।।
काषायी गुडतक्रपंकविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलि –
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च।।
कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरूट् गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्यो न दृष्टाः शुभाः।।

बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, भूसी, हड्डी , नमक, आग का अंगारा, इन्धन , नपुंसक,विष्ठा, तेल, पागल, चर्बी, औषधी, शत्रु, जटाधारी, सन्यासी, तृण, रोगी, वस्त्रहीन मानव, तेल उबटन लगाया हुआ व्यक्ति, विखरे बालों वाला स्त्री, पापी व्यक्ति, विकलांग, भूख से व्याकुल मनुष्य, रक्त, स्त्री का रजस्राव, गिरगिट , अपने घर का जलना, बिल्ली का युद्ध, छींक, काषाय वस्त्र धारण किये हुए मनुष्य, गुड़, मट्ठा, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ा , पारिवारिक कलह, शरीर से वस्त्र - छत्र आदि का गिरना, भैसों का युद्ध, काले रंग के अन्न, रूई, उल्टी, दाहिनी और गधे का शब्द, अधिक क्रोधी प्राणी, गर्भिणी स्त्री, मुण्डित व्यक्त, गीला वस्त्र, अपशब्द का प्रयोग, अन्धा, बहरा, तथा इन सभी का यात्रा के समय दिखलाई पड़ना शुभ नहीं होता है। ये अशुभ शकुन कहे गये है।

अन्य शकुन –

गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं
नो शब्दो न विलोकनं च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः।
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शोभनाः।।

गोह, जाहक (अंगसंकोची पशु), सर्प एवं खरगोश का नामोच्चारण ही शुभ होता है, परन्तु इन का शब्द या दर्शन यात्रा के समय शुभ नहीं होता है। बन्दर और भालू का गोह आदि से विपरीत

फल होता है, अर्थात बन्दर और भालू का शब्द (बोलना) और दर्शन होना शुभ तथा नामोच्चारण अशुभ होता है।

नदी पार करते समय, भय के उपस्थित होने पर या भय से भागते समय, गृहप्रवेश, युद्ध तथा नष्ट वस्तु के अन्वेषण के समय विपरीत शकुन ही शुभ अर्थात् अशुभ शकुन शुभ फलदायक तथा शुभ शकुन अशुभ फलदायक होते हैं तथा राजा के दर्शन सम्बन्धी कार्यों में यात्रा प्रसंग में बताये गये शुभ शकुन ही शुभदायक होते हैं।

वामांगे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला।
पिंगला छुच्छुका श्रेष्ठाः शिवाः पुरूषसंज्ञिताः॥

कोयल, छिपकली, पोतकी, सूकरी रला (एक प्रकार का पक्षी) , पिंगला भैरवी, छछुन्दर, श्रृंगाली (गीदड़ी) तथा पुरूष संज्ञक पक्षी (कबूतर, खंजन, तित्तिर, हंसा आदि) यात्रा के समय वाम भाग में शुभ माने जाते है।

छिक्करः पिक्कको भासः श्रीकण्ठो वानरो रूरूः।
स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभाः॥

छिक्कर मृग, हाथी का बच्चा, भास पक्षी, मयूर, बन्दर, रूरूमृग, स्त्री संज्ञक पक्षी कौवा, भालू तथा कुत्ता यात्रा के समय दक्षिण भाग में शुभ होते हैं।

शकुन में विशेष –

प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रज्ञयां मृगपक्षिणः।
ओजा मृगा व्रजन्तोऽतिधन्या वामे खरस्वनः॥

यात्रा के समय दक्षिण भाग में जाते हुए मृग और पक्षी शुभ फलदायक होते हैं। यदि विषम संख्यक मृग हों तो अत्यन्त शुभ होते है। वाम भाग में गधे का शब्द सुनाई पड़े तो वह भी यात्रा में शुभ होता है।

अशुभ शकुनों के परिहार –

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत्।
द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजत्॥

यात्रा के समय यदि प्रथम बार अपशकुन दिखलाई पड़े तो ११ प्राण (ग्यारह बार श्वास आने तक जितना समय हो उतने समय) तक रूक कर यात्रा करें। यदि द्वितीय बार अपशकुन दिखाई पड़े तो १६ प्राण तक रूक कर यात्रा करें। यदि तृतीय बार अपशकुन का दर्शन हो तो कहीं भी नहीं जाना चाहिये।

एकदिवसीय यात्रा में विशेष –

यदि राजा एक नगर से यात्रा आरम्भ कर उसी दिन दूसरे नगर में प्रविष्ट हो जाता है तो इस प्रकार की एक दिवसीय यात्रा में नक्षत्रशूल-वारशूल, सम्मुख शुक्र एवं योगिनी आदि का विचार पुरूष को नहीं करना चाहिए।

यदि राजा का यात्रारम्भ और अभीष्ट स्थान में प्रवेश दोनों एक ही दिन में सम्पन्न हो जाता हो तो वहॉ केवल प्रवेशकाल का ही विचार विद्वानों को करना चाहिये यात्राकाल का नहीं।

गृह में प्रवेश करते समय जो तिथि - नक्षत्र वार हों उनसे नवम तिथि नक्षत्र वारों में यात्रा तथा यात्राकालिक तिथि - नक्षत्र - वारों से नवमम तिथि नक्ष्ज्ञत्र वारों में पुन: गृह में प्रवेश कथमपि नहीं करना चाहिये।

यात्रा में निषिद्ध काल -

यज्ञोपवीत संस्कार में , देवालय में प्राणप्रतिष्ठा के समय, विवाहोत्सव में, जन्म सम्बन्धी सूतक और मृत्यु सम्बन्धी सूतक के समाप्त होने के पूर्व यात्रा नहीं करनी चाहिये।

भूपाल वल्लभ में कहा गया है कि गर्गाचार्य के मत से यात्रा में उष:काल या सुबह का समय विशेष शुभ होता है। वृहस्पति जी के अनुसार तथा शकुन अंगिरा के मत से मन का उत्साह तथा विद्वान या श्रेष्ठ पुरूष का आदेश ही यात्रा में विशेष विचारणीय है - यथा

उष: प्रशस्यते गर्ग: शकुनं च वृहस्पति: ।
अंगिरा मन उत्साहो विप्रवाक्यं जनार्दन: ॥

काक शब्द शकुन विचार –

काक अर्थात् कौवा का शब्द सुनकर अपने पैरों से छाया नापकर उसमें १३ और जोड़ दें एवं ६ का भाग दे, शेष १ बचें तो लाभ, २ में खेद, ३ में सुख, ४ में भोजन, ५ में धन, तथा शून्य शेष बचे तो अशुभ फल जानना चाहिये।

पिंगल शब्द शकुन विचार -

यात्रा में किल्किल शब्द होने से उल्लास, चिल्पित शब्द होने से भोजन की प्राप्ति, खिट – खिट शब्द होने से बंधन और कुर्कुर शब्द होने से महाभय होता है।

छींक के अनुसार शकुन विचार –

छींक के शब्द को सुनकर अपने पैर की छाया नाप कर उसमें १३ और जोड़ दे, ८ से भाग दे, जो शेष रहे उसका फल इस प्रकार है - १ शेष बचे तो लाभ, २ से सिद्धि, ३ से हानि, ४ से शोक, ५ से भय, ६ से लक्ष्मी, ७ से दु:ख और ८ शेष होने पर निष्फल समझना चाहिये।

पुन: दिशा के अनुसार छिक्क का शकुन विचार करते है। पूर्व दिशा की छींक अशुभ है। आग्नेय कोण की छींक शोक और दु:ख देती है। दक्षिण की कष्ट देती है, नैर्ऋत्य कोण की छींक शुभ ह । पश्चिम दिशा की छींक मधुर भोजन कराती है, वायव्य धन देती है। उत्तर की क्लेश प्रदान करती है ईशान की शुभ , एवं अपनी छींक अधिक भयदायक होती है, उपर की छींक शुभ है। मध्य की छींक अधिक भयदायक होती है। आसन पर बैठते समय, सोते समय, दान के समय भोजन करते समय, बाई ओर या पीछे की छींक शुभ होती है।

छिपकिली के गिरने और गिरगिट के चढ़ने का फल –

स्थान	**फल**	**स्थान**	**फल**	**स्थान**	**फल**	**स्थान**	**फल**
शिरसि	राज्यलाभ	**कण्ठ में**	शत्रुनाश	दोनों हाथ पर	वस्त्र लाभ	वामपाद	नाश
नासाग्रे	व्याधि	**दोनों जंघो पर**	शुभ	वाम दक्षिण बन्ध	कीर्तिविनाश	अधरोष्ठ	ऐश्वर्य
वामभुजे	राजभिति	**दाहिने**	मनसन्ताप	दक्षिणपादे	गमन	द.भुजा	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभासामन	**मणिबन्ध**	धननाश	उत्तर ओष्ठ पर	धननाश	पृष्ठ भाग	बुद्धिनाश
कटिभागे	अश्वलाभ	**केशान्त**	मरण	दोनों नेत्र पर	धन प्राप्ति	नासिका	बहु धन
गुल्फयो:	धनलाभ	**भ्रुवमध्य**	राज्य समक्ष	उदर पर	भूषण लाभ	मुख	मिष्ठान्न प्राप्ति
ललाटे	बन्धुदर्शन	**वाम कर्ण**	बहुलाभ	स्कन्ध	विजय	पादमध्य	धननाश
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	स्तनद्वय	दुर्भाग्य	हृदय	धन लाभ	पादान्ते	मरण कष्ट

चक्र द्वारा इसका शुभाशुभ फल को समझना चाहिये।

यात्रा में छींक के अनुसार शुभाशुभ चक्र -

पूर्व	अग्निकोण	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	वार
विघ्न	विलंब	उत्तम	मृत्यु भय	शुभ	आगमन	लाभ	विलंब	रविवार
लाभ	विलंब	मृत्युभय	लाभ	शुभ	उत्तम	अल्पलाभ	विलंब	सोमवार
मित्र आगमन	लाभ	विलंब	मृत्युभय	लाभ	विदेश यात्रा	सुख	लाभ	मंगलवार
सिद्धि	शारीरिक	अरिष्ट	विलंब	मृत्यु	धननाश	चोरभय	कष्ट	बुधवार

	कष्ट							
चिन्ता	वार्ता	विलंब	उत्तम	चोरभय	मृति	कष्ट	वार्ता	गुरूवार
धनादि	कलह	मित्रागमन	धनलाभ	उत्तम	विलंब	मरण	कलह	शुक्रवार
धननाश	कष्ट	वार्ता	मित्रआगमन	उत्तम	शुभ	विलंब	दु:खदूर	शनिवार

अन्य अशुभ शकुन -

दवा के लिए जाता हुआ मनुष्य, कालाधान्य, कपास, सूखे तृण और सुखा हुआ गोबर, प्रस्थान के समय यदि सामने से आवे तो यात्रा में अशुभ जानना चाहिए।

ईंधन जलती हुई आग, गुड़, घी, शरीर में तेल लगायें, मलिन, मन्द और नंगा मनुष्य प्रस्थान के समय सम्मुख आवे तो अशुभ शकुन समझना चाहिये।

बिखरे बालों वाला मनुष्य, रोगी, गेरूआ वस्त्र पहने हुए, उन्मत्त कथरी लिए हुए, पापी, दरिद्र, नपुंसक प्रस्थान के समय सामने आये तो अशुभ जानना चाहिये।

लोह खण्ड, कीचड़, चर्म, केश बॉधता हुआ मनुष्य, नि:सार पदार्थ और खली सामने आने से प्रस्थान के समय अशुभ जाननी चाहिए।

चाण्डाल का मुर्दा, राजबन्धन का पालक, वध करने वाला, पापी और गर्भवती स्त्री के भी प्रस्थान के समय सामने आने पर अशुभ शकुन जानना चाहिए।

भुसी, भस्म, खोपड़ी, टूटै एवं खाली बर्तन, मारा हुआ सारंग पक्षी आदि का प्रस्थान के समय सम्मुख आना अशुभ है।

बोध प्रश्न –

१. यात्रा के समय यदि चार ब्राह्मणों का दर्शन हो तो –

क. शुभ शकुन होता है। ख. अशुभ शकुन होत है।

ग. शुभाशुभ घ. कोई नहीं

२. निम्न में अशुभ शकुन है –

क. तेल ख. ईन्धन ग. नमक घ. तीनों

३. यात्रा के समय वाम भाग में शुभ माने जाते है –

क. मृग ख. भालू ग. कोयल घ. मयूर

४. रविवार को पूर्व दिशा की यात्रा में छींक आने से क्या फल होता है –

क. लाभ ख. विघ्न ग. मित्र आगमन घ. विलम्ब

५. गुरूवार को पश्चिम दिशा की यात्रा में छींक का फल है –

क. लाभ ख. हानि ग. चोरभय घ. कोई नहीं

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि राजा से सम्बन्धित शकुन का विचार करते हुए आचार्य कथन है कि मन की प्रसन्नता, अंग लक्षणादि शुभ निमित्तों तथा पशु – पक्षी एवं आकाश जन्य शुभ शकुनों के साथ – साथ लग्न के बल का ज्ञान कर जो राजा प्रस्थान करता है उसकी अभीष्ट सिद्धि होती है। शकुन आदि की अपेक्षा मन की शुद्धि अधिक महत्वपूर्ण होती है। यदि यात्रा काल में मन की प्रसन्नता न हो तो यात्रा नहीं करनी चाहिये।

शुभ शकुन - ब्राह्मण (एक से अधिक ब्राह्मण), घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गाय, सरसों , कमल, वस्त्र, वेश्या, वाद्य, मयूर, नीलकण्ठ, नेवला, बँधा हुआ पशु, मॉस, शुभवाणी, पुष्प, ईख जल से भरा कलश, छत्र, मिट्टी, कन्या, रत्न, पाडी, श्वेत बैल, शराब, पुत्रसहित स्त्री, प्रज्वलित अग्नि, दर्पण, काजल, धुले वस्त्रों के साथ धोबी, मछली, सिंहासन, रूदन रहित शव (मृत शरीर), पताका, शहद, बकरा, अस्त्र, गोरोचन, भारद्वाज (चातक) पक्षी, पालकी, वेदध्वनि, मांगलिक गीत, अंकुश तथा खाली घड़ा यात्री के पीछे की तरह जाता हुआ यदि यात्रा के समय दिखलाई पड़े तो शुभफलदायक होता है।

अशुभ शकुन - बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, भूसी, हड्डी , नमक, आग का अंगारा, इन्धन, नपुंसक, विष्ठा, तेल, पागल, चर्बी, औषधी, शत्रु, जटाधारी, सन्यासी, तृण, रोगी, वस्त्रहीन मानव, तेल उबटन लगाया हुआ व्यक्ति, विखरे बालों वाला स्त्री, पापी व्यक्ति, विकलांग, भूख से व्याकुल मनुष्य, रक्त, स्त्री का रजस्राव, गिरगिट , अपने घर का जलना, बिल्ली का युद्ध, छींक, काषाय वस्त्र धारण किये हुए मनुष्य, गुड़, मट्ठा, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ा , पारिवारिक कलह, शरीर से वस्त्र - छत्र आदि का गिरना, भैसों का युद्ध, काले रंग के अन्न, रूई, उल्टी, दाहिनी और गधे का शब्द, अधिक क्रोधी प्राणी, गर्भिणी स्त्री, मुण्डित व्यक्त, गीला वस्त्र, अपशब्द का प्रयोग, अन्धा, बहरा, तथा इन सभी का यात्रा के समय दिखलाई पड़ना शुभ नहीं होता है। ये अशुभ शकुन कहे गये है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

शकुन – शाब्दिक अर्थ – पक्षी।

अपशकुन - अशुभ

प्रस्थान – जाना

गर्भिणी – जिसके गर्भ में शिशु हो

आगमन – आना

विप्र – ब्राह्मण

अपशब्द – बुरा शब्द

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. घ
1. ग
2. ख
3. ग

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्तचिन्तामणि – यात्रा प्रकरण
2. वशिष्ठ संहिता – यात्रा अध्याय
3. नारद संहिता – यात्रा अध्याय

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. प्रश्नमार्ग
2. पूर्वकालामृत
3. भृगु संहिता
4. अग्नि पुराण

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. शकुन से आप क्या समझते है।
2. यात्राकालिक शुभ शकुन का वर्णन कीजिये।
3. अशुभ शकुन का उल्लेख कीजिये।
4. यात्रा में शकुन की महत्ता पर प्रकाश डालिये।
5. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यात्राजनित शुभाशुभ शकुन का प्रतिपादन कीजिये।

इकाई - 3 यात्रा में कृत्याकृत्य विचार

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 यात्रा परिचय
3.4 यात्रा में कृत्याकृत्य विचार
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -610 के प्रथम खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – यात्रा में कृत्याकृत्य विचार। इससे पूर्व आपने यात्राजनित शकुन विचार से जुड़े विभिन्न तथ्यों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'यात्रा में कृत्याकृत्य' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

यात्रा में कृत्याकृत्य से तात्पर्य है – यात्रा काल में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। कृत्य का अर्थ करना और अकृत्य का अर्थ नहीं करना होता है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'यात्राकालिक कृत्याकृत्य' के बारे में तथा उसके विविध पक्षों को जानने का प्रयास करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- यात्रा को परिभाषित कर सकेंगे।
- यात्रा में क्या कृत्य है उसे समझा सकेंगे।
- यात्राकालिक अकृत्य तत्वों को समझ लेंगे।
- यात्राकालिक कृत्याकृत्य तत्वों को समझा सकेंगे।

3.3 यात्रा मुहूर्त्त परिचय

सामान्यतया एक निश्चित स्थान से दूसरे स्थान तक जाने को यात्रा से सम्बोधित किया जाता है। यात्रा प्रयोजनवशात् की जाती है जो मुख्यत: दो उद्देश्यों को लेकर होती है- सामान्योद्देश्य एवं विशेषोद्देश्य। यात्रा में कृत्य विचार से पूर्व हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि मूल रूप से यात्रा के कौन – कौन से मुहूर्त्त है। यात्रा का मुहूर्त्त है –

अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा ये नक्षत्र यात्रा के लिए उत्तम होता है। रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल और शतभिषा ये नक्षत्र मध्यम एवं भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा ये नक्षत्र निन्द्य है। तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी और त्रयोदशी शुभ बतायी गयी है। यात्रा के लिए वारशूल, नक्षत्रशूल, दिक्शूल , चन्द्रवास और राशि से चन्द्रमा का विचार करना चाहिए कहा भी गया है कि –

दिशाशूल ले आओ वामें राहु योगिनी पीठ।

सम्मुख लेवे चन्द्रमा लावे लक्ष्मी लूट।।

यात्रा मुहूर्त्त को आप चक्र में भी समझ सकते है –

श्रेणियॉ	**नक्षत्र**
उत्तम	अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा
मध्यम	रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल और शतभिषा
निन्द्यनीय	भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा

तिथि – २,३,५,७,१०,११,१३ ये तिथियॉ यात्रा में शुभ है।

3.4 यात्रा में कृत्याकृत्य विचार

यात्रा में कृत्य से तात्पर्य है – यात्रा काल में करणीय। यात्रा के लिए हमें ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किन-किन तत्वों को जान लेना चाहिए। इसका विचार करते है- यात्रा के लिए सर्वप्रथम चन्द्रवास ज्ञान एवं उसका फल विचार नितान्त आवश्यक है। मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व दिशा में, वृष, कन्या और मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में, तुला मिथुन व कुम्भ राशि का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का चन्द्रमा उत्तर दिशा में वास करता है।

चन्द्रफल -

सम्मुख चन्द्रमा धन लाभ करने वाला, दक्षिण चन्द्रमा सुख सम्पत्ति देने वाला, पृष्ठ चन्द्रमा शोक सन्ताप देने वाला और वाम चन्द्रमा धननाश करने वाला होता है।

इसी क्रम में भद्रा का विचार –

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च ह्यधोमुखी।

उर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा।।

मृत्युलोक की भ्रदा सम्मुख, पाताल लोक की अधोमुखी और स्वर्ग की उर्ध्वमुखी होती है। सम्मुख भद्रा मरण करती है।

जो व्यक्ति भद्रा के सम्मुख एक क्रोश भी जाता है, वह पुन: लौट कर आ नहीं पाता है, वैसे ही जैसे समुद्र में जाकर नदियॉ नहीं लौटती।

यात्रा विधि –

उद्धृत्य प्रथमत एव दक्षिणांघ्रि द्वात्रिंशत्पदमधिगत्य दिश्ययानम।
आरोहेत्तिलघृतहेमताम्रपात्रं दत्वाऽऽदौ गणकवराय च प्रगच्छेत्।।

यात्रा आरम्भ करते समय पहले अपनी दाहिने पैर को उठा कर बत्तिस पग चलकर गन्तव्य दिशा सम्बन्धि वाहन पर आरोहण करें तथा श्रेष्ठ दैवज्ञ को तिल – घी – सोना तथा ताम्रपात्र पहले प्रदान कर बाद में यात्रा करनी चाहिये।

दिक्शूल विचार –

शनिवार, सोमवार को पूरब दिशा, वृहस्पतिवार के दिन दक्षिण दिशा रविवार, शुक्रवार के दिन पश्चिम, बुध और मंगल के दिन उत्तर दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिये।

ऐशान्यं ज्ञे शनौ शूलमाग्नेयां गुरूसोमयो:।
वायव्यां भूमिपुत्रे तु नैर्ऋत्यां सूर्यशुक्रयो:।।

बुध और शनिवार के दिन ईशान कोण में सोमवार और वृहस्पतिवार के दिन आग्नेय कोण में, मंगलवार को वायव्य कोण में रवि और शुक्र को नैऋत्य कोण में दिक्शूल रहता है। सम्मुख दिक्शूल गमन निषेध है।

दिक्शूल परिहार –

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेसोमे पयस्तथा।
गुडमङ्गारवारे तु बुधवारे तिलानपि।।
गुरूवारे दधि प्राश्य शुक्रवारे यवानपि
माषान्भुक्त्वा शनौ वारे शूलदोषोपशान्तये।।

दिक्शूल में आवश्यक कार्यवश दोष की शान्ति के लिए रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगलवार को गुड़, बुध को तिल, वृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को यव और शनिवार को उड़द भक्षण कर यात्रा करनी चाहिये।

यात्रा आरम्भ स्थान –

देवमन्दिर से अथवा गुरूगृह से अथवा अपने गृह से अथवा यदि कई स्त्रियॉ हो तो मुख्य स्त्री के गृह से पहले हविष्य खाकर, ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर मंगलमय वस्तुओं को देखता हुआ, मांगलिक शब्दों को सुनता हुआ राजा अथवा अन्य व्यक्ति यात्रा करें।

दिशानुरूप यात्रा विधि –

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम्।

भक्षयेद् दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत्।।

पूर्व दिशा में घी, दक्षिण दिशा में तिलमिश्रित भात, पश्चिम दिशा में मछली और उत्तर दिशा में दूध पीकर यात्रा करना चाहिये।

तिथि के अनुरूप यात्रा विधि –

प्रतिपदा तिथि में मदार का पत्ता, द्वितीया में चावल का धोया हुआ जल, तृतीया में घी, चतुर्थी में इमली, पंचमी में मूँग, षष्ठी में सोना का धोवन, सप्तमी में पूआ, अष्टमी में रूचक, नवमी में शुद्ध जल, दशमी में गोमूत्र, एकादशी में यव का चावल, द्वादशी में खीर, त्रयोदशी में गुड़, चतुर्दशी में रक्त और पूर्णिमा में मूँग मिला भात खाकर यात्रा करनी चाहिये।

तिथि – दोष की निवृत्ति के लिए तिथियों में जो ग्रहणीय वस्तु है। इसका प्रयोग करके यात्रा करनी चाहिए।

मास परक यात्रा मुहूर्त्त –

इषमासि सिता दशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता।

श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गते जयसन्धिकरी।।

आश्विन मास में शुक्लपक्ष की दशमी को विजया तिथि कहते है। वह विजयादशमी सम्पूर्ण शुभ कर्मों में विजय देने वाली कही गई है। यदि श्रवण नक्षत्र से युत हो तो अत्यन्त शुभफल दायक होता है। राजा की यात्रा में विजय अथवा सन्धि कराने वाली होती है। वैश्य वर्ग इस तिथि को बहुत उत्तम मानता है और धूमधाम से लक्ष्मी पूजा करता है।

अयन के अनुसार यात्रा विचार –

चन्द्रार्कौ दक्षिणगतौ यायाद्याम्यां परां प्रति।

सौम्यायनगतौ यायात्प्राचीं सौम्यां दिशं प्रति।।

सूर्य और चन्द्रमा दोनों यदि उत्तरायण मकरादि अर्थात् उत्तराषाढ़ा के 2 चरण से मिथुनान्त अर्थात् मृगशिरा के 2 चरण तक में हो तो उतृतर और पूर्व दिशा में यात्रा करें। यदि दोनों दक्षिणायन में हो तो दक्षिण पश्चिम दिशा में यात्रा उत्तम होती है। यदि सूर्य और चन्द्रमा का अयन भिन्न – भिन्न हो तो सूर्य के अयन की दिशा का यात्रा दिन में और चन्द्रमा के अयन की दिशा की यात्रा रात में करनी चाहिए। इसके विपरीत अर्थात् सूर्य के अयन की दिशा में रात में चन्द्र के अयन की दिशा में दिन में यात्रा करने से यात्री का वध होता है।

शुभ शकुन –

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं

वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम्।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीर्षासतोक्षमद्यससुततस्त्रीदीप्तवैश्वानराः।।
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनार्ज्यासिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम्।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा मांगल्यगीताङ्कुशा
दृष्टः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तौ घटः स्वानुगः।।

ब्राह्मण (एक से अधिक ब्राह्मण), घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गाय, सरसों , कमल, वस्त्र, वेश्या, वाद्य, मयूर, नीलकण्ठ, नेवला, बँधा हुआ पशु, मॉस, शुभवाणी, पुष्प, ईख जल से भरा कलश, छत्र, मिट्टी, कन्या, रत्न, पाडी, श्वेत बैल, शराब, पुत्रसहित स्त्री, प्रज्वलित अग्नि, दर्पण, काजल, धुले वस्त्रों के साथ धोबी, मछली, सिंहासन,रूदन रहित शव (मृत शरीर), पताका, शहद, बकरा, अस्त्र, गोरोचन, भारद्वाज (चातक) पक्षी, पालकी, वेदध्वनि, मांगलिक गीत, अंकुश तथा खाली घड़ा यात्री के पीछे की तरह जाता हुआ यदि यात्रा के समय दिखलाई पड़े तो शुभफलदायक होता है।

3.4.1 यात्रा में अकृत्य –

व्रतबन्धनदैवतप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ
न कदापि चलेदकालविधुदघ्ज्ञनवर्षातुहिनेऽपि सप्तरात्रम्।।

उपनयन, देवताओं की प्रतिष्ठा, विवाह, उत्सव होलिका,दीपावली आदि सूतक जननाशौच – मरणाशौच इनकी असमाप्ति में जब तक ये सभी कार्य पूर्णरूपेण सम्पन्न न हो जायें तब तक कदापि यात्रा नहीं करनी चाहिए। एवं अकाल में विजली चमके, बादल बरसे, पाला पड़े तो भी रात तक २४ ×७ = १६८ घंटे तक यात्रा नहीं करनी चाहिये ।

सम्मुख शुक्र दोष विचार –

उदेति यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद्वाथ ककुब्भसंघे।
त्रिधोच्यते सम्मुख एव शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात्।।

शुक्र जिस दिशा में उदित हो (अपने कालांश वश सूर्य से राश्यादि अधिक हो तो पश्चिम में, सूर्य की राश्यादि से शुक्र राश्यादि कम हो तो पूर्व दिशा में) अथवा गोलभ्रमणवश उत्तर या दक्षिण दिशा में हो तो अथवा कृत्तिका से मघा पर्यन्त ७ नक्षत्र पूर्व के, मघा से विशाखा तक ७ नक्षत्र दक्षिण के अनुराधा से श्रवण तक ७ नक्षत्र पश्चिम के , धनिष्ठा से भरणी तक ७ नक्षत्र उत्तर के दिग् नक्षत्र

कहे जाते है। इन नक्षत्रों पर स्थिति वश जिस दिशा में हो, इस प्रकार 3 प्रकार का शुक्र होता है। जिस दिशा में शुक्र हो उस दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

प्रस्थान काल विशेष -

प्रस्थाने भूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य नैकत्रतिष्ठेत्
सामन्त: सप्तरात्रं तदितरमनुज: पंचरात्रं तथैव।
उर्ध्वं गच्छेच्छुभाहेऽप्यथ गमनदिनात् सप्तरात्राणिपूर्वं
चाशक्तौ तद्दिनेऽसौ रिपुविजयमना मैथुनं नैव कुर्यात्॥

जो राजा अपने देश का एकतन्त्र शासक हो, उसे प्रस्थान में १० दिनों तक एक जगह नहीं ठहरना चाहिए। सामन्त राजा ७ दिनों तक एक जगह न रूके और अन्य सामन्त राजा ७ दिनों तक एक जगह न रूके और अन्य साधारण जन ५ दिनों तक एक स्थान पर न ठहरें अर्थात् अपनी – अपनी अवधि के पहले ही उस पड़ाव से यात्रा आरम्भ कर दें। यदि किसी कारणवश कहे हुए दिनों से अधिक दिनों तक रूकना पड़े तो फिर शुभ मुहूर्त्त देखकर वहॉ से यात्रा करें।

अपने शत्रु पर विजय प्राप्ति की इच्छा रखने वाला राजा यात्रा दिन से ७ रात पहले से ही स्त्री के साथ मैथुन न करें। यदि ऐसा करें तो कम से कम यात्रा करने वाले दिन त्याज्य करना चाहिये।

यात्रा के निश्चित दिन से ३ दिन – रात पहले दुग्ध पान , ५ रात पहले क्षौर कर्म त्याज्य है। यात्रा के दिन मधु, तेल का सेवन और वमन निश्च ही त्याग देना चाहिये।

जो यात्रा के दिन तेल, गुड़, क्षार तथा पका हुआ मॉस खाकर यात्रा करता है, वह रोगी होकर लौटता है। स्त्री और ब्राह्मण का अनादर करके यात्रा करने वाले की मृत्यु होती है।

यात्रा में वर्षा तथा दुष्ट शकुन परिहार –

यदि पौष से लेकर 4 महीनों पौष,माघ, फाल्गुन, चैत्र में वर्षा हो तो अकाल वृष्टि कही जाती है। परन्तु जब तक पशुओं तथा मनुष्यों के पैर से पृथ्वी अंकित न हो जाये तब तक दोष नहीं होता। जब भूमि पर कीचड़ हो जाय तभी दोष होता है।

अल्प अकाल वृष्टि होने पर थोड़ा दोष, बहुत वृष्टि होन पर अधिक दोष होता है। जब मेघों का गर्जन अथवा वर्षा हो तो उस दोष की निवृत्ति के लिए राजा सुवर्ण का सूर्य और चन्द्रमा का बिम्ब बनवाकर ब्राह्मण को दान करें । यात्रा के समय अशुभ शकुन हो, तो राजा घी और सोना ब्राह्मण को देकर अपनी इच्छा के अनुसार यात्रा करें ।

अशुभ शकुन -

बन्ध्या चर्म तुषास्थि सर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्

तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राटतृणव्याधिताः ।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिता व्यंगक्षुधार्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥
काषायी गुडतक्रपंकविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलि –
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ॥
कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरूट् गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्यो न दृष्टाः शुभाः ॥

बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, भूसी, हड्डी , नमक, आग का अंगारा, इन्धन , नपुंसक,विष्ठा, तेल, पागल, चर्बी, औषधी, शत्रु, जटाधारी, सन्यासी, तृण, रोगी, वस्त्रहीन मानव, तेल उबटन लगाया हुआ व्यक्ति, विखरे बालों वाला स्त्री, पापी व्यक्ति, विकलांग, भूख से व्याकुल मनुष्य, रक्त, स्त्री का रजस्राव, गिरगिट , अपने घर का जलना, बिल्ली का युद्ध, छींक, काषाय वस्त्र धारण किये हुए मनुष्य, गुड़, मट्ठा, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ा , पारिवारिक कलह, शरीर से वस्त्र - छत्र आदि का गिरना, भैसों का युद्ध, काले रंग के अन्न, रूई, उल्टी, दाहिनी और गधे का शब्द, अधिक क्रोधी प्राणी, गर्भिणी स्त्री, मुण्डित व्यक्त, गीला वस्त्र, अपशब्द का प्रयोग, अन्धा, बहरा, तथा इन सभी का यात्रा के समय दिखलाई पड़ना शुभ नहीं होता है। ये अशुभ शकुन कहे गये है।

अन्य शकुन –

गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं
नो शब्दो न विलोकनं च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः।
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शोभनाः ॥

गोह, जाहक (अंगसंकोची पशु), सर्प एवं खरगोश का नामोच्चारण ही शुभ होता है, परन्तु इन का शब्द या दर्शन यात्रा के समय शुभ नहीं होता है। बन्दर और भालू का गोह आदि से विपरीत फल होता है, अर्थात बन्दर और भालू का शब्द (बोलना) और दर्शन होना शुभ तथा नामोच्चारण अशुभ होता है।

नदी पार करते समय, भय के उपस्थित होने पर या भय से भागते समय, गृहप्रवेश, युद्ध तथा नष्ट वस्तु के अन्वेषण के समय विपरीत शकुन ही शुभ अर्थात् अशुभ शकुन शुभ फलदायक तथा शुभ शकुन अशुभ फलदायक होते हैं तथा राजा के दर्शन सम्बन्धी कार्यों में यात्रा प्रसंग में बताये गये शुभ शकुन ही शुभदायक होते हैं।

वामांगे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला।

पिंगला छुच्छुका श्रेष्ठाः शिवाः पुरूषसंज्ञिताः।।

कोयल, छिपकली, पोतकी, सूकरी रला (एक प्रकार का पक्षी) , पिंगला भैरवी, छछुन्दर, श्रृंगाली (गीदड़ी) तथा पुरूष संज्ञक पक्षी (कबूतर, खंजन, तित्तिर, हंसा आदि) यात्रा के समय वाम भाग में शुभ माने जाते है।

छिक्करः पिक्कको भासः श्रीकण्ठो वानरो रूरूः।

स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभाः।।

छिक्कर मृग, हाथी का बच्चा, भास पक्षी, मयूर, बन्दर, रूरूमृग, स्त्री संज्ञक पक्षी कौवा, भालू तथा कुत्ता यात्रा के समय दक्षिण भाग में शुभ होते हैं।

शकुन में विशेष –

प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रज्ञयां मृगपक्षिणः ।

ओजा मृगा व्रजन्तोऽतिधन्या वामे खरस्वनः।।

यात्रा के समय दक्षिण भाग में जाते हुए मृग और पक्षी शुभ फलदायक होते हैं। यदि विषम संख्यक मृग हों तो अत्यन्त शुभ होते है। वाम भाग में गधे का शब्द सुनाई पड़े तो वह भी यात्रा में शुभ होता है।

अशुभ शकुनों के परिहार –

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत्।

द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजत्।।

यात्रा के समय यदि प्रथम बार अपशकुन दिखलाई पड़े तो ११ प्राण (ग्यारह बार श्वास आने तक जितना समय हो उतने समय) तक रूक कर यात्रा करें। यदि द्वितीय बार अपशकुन दिखाई पड़े तो १६ प्राण तक रूक कर यात्रा करें। यदि तृतीय बार अपशकुन का दर्शन हो तो कहीं भी नहीं जाना चाहिये।

बोध प्रश्न -

१. यात्रा हेतु निम्नलिखित में उत्तम नक्षत्र है –

क. रोहिणी ख. मृगशिरा ग. चित्रा घ. स्वाती

२. यात्रा में तिथि शुभ है –

क. ७ ख. १ ग. ४ घ. ६

३. मृत्युलोक की भद्रा होती है –

क. सम्मुख ख. अधोमुखी ग. उर्ध्वमुखी घ. कोई नहीं

४. धनु राशि का चन्द्रमा किस दिशा में होता है –

क. दक्षिण दिशा में ख. पूर्व दिशा में

ग. उत्तर दिशा में घ. पश्चिम दिशा में

५. सोमवार को क्या भक्षण करने से दिक्शूल परिहार होता है –

क. घृत ख. गुड़ ग. तिल घ. दूध

3.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि सामान्यतया एक निश्चित स्थान से दूसरे स्थान तक जाने को यात्रा से सम्बोधित किया जाता है। यात्रा प्रयोजनवशात् की जाती है जो मुख्यत: दो उद्देश्यों को लेकर होती है- सामान्योद्देश्य एवं विशेषोद्देश्य। यात्रा में कृत्य विचार से पूर्व हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि मूल रूप से यात्रा के कौन – कौन से मुहूर्त्त है। यात्रा का मुहूर्त्त है –

अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा ये नक्षत्र यात्रा के लिए उत्तम होता है। रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल और शतभिषा ये नक्षत्र मध्यम एवं भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा ये नक्षत्र निन्द्य है। तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी और त्रयोदशी शुभ बतायी गयी है। यात्रा में कृत्य ज्ञान के अन्तर्गत चन्द्रवास ज्ञान एवं उसका फल विचार नितान्त आवश्यक है। मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व दिशा में, वृष, कन्या और मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में, तुला मिथुन व कुम्भ राशि का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का चन्द्रमा उत्तर दिशा में वास करता है।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

प्रयोजन – उद्देश्य

मुहूर्त्त - मुह धातु में उरट प्रत्यय लगकर मुहूर्त्त शब्द बना है।

वास – रहना

कृत्य - करणीय

अकृत्य – अकरणीय

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. क
3. क
4. ख
5. घ

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्तचिन्तामणि – यात्रा प्रकरण
2. वशिष्ठ सिद्धान्त – यात्रा प्रकरण
3. मुहूर्तपारिजात – यात्रा अध्याय
4. नारद संहिता – यात्रा प्रकरण

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. पूर्वकालामृत
2. प्रश्नमार्ग
3. भृगु संहिता
4. योग यात्रा

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. यात्रा पर टिप्पणी लिखिये।
2. यात्राकाल में कृत्य अवयवों का वर्णन कीजिये।
3. यात्राकालिक अकृत्य अवयव क्या है।
4. यात्रा के कृत्याकृत्य पक्षों का प्रतिपादन कीजिये।
5. यात्रा का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई – 4 गुरू एवं शुक्र विचार

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 यात्राकालिक गुरु एवं शुक्र परिचय
4.4 यात्रा में गुरु एवं शुक्र विचार
4.5 सारांश
4.6 पारिभाषिक शब्दावली
4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.9 सहायक पाठ्यसामग्री
4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -610 के प्रथम खण्ड की चतुर्थ इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – गुरू एवं शुक्र विचार। इससे पूर्व आपने ज्योतिष शास्त्रोक्त यात्रा से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'यात्रा कालिक गुरु एवं शुक्र विचार' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

गुरु एवं शुक्र विचार से तात्पर्य है कि यात्रा के समय हमें गुरु एवं शुक्र ग्रह की स्थिति का विचार करना होता है। उसके सम्मुख, वाम, पृष्ठ आदि इत्यादि अनेक विचार यात्रा के दौरान करना आवश्यक होता है।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'यात्रा में गुरु एवं शुक्र विचार' के बारे में जानने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- गुरु विचार क्या है, समझा सकेंगे।
- यात्रा में शुक्र का विचार कैसे करते है, बता सकेंगे।
- यात्रा में गुरु सम्बन्धित विभिन्न तत्वों को समझ लेंगे।
- यात्राकालिक शुक्र के विभिन्न अवयवो को समझाने में समर्थ हो जायेंगे।

4.3 यात्राकालिक गुरू एवं शुक्र परिचय

ज्योतिष शास्त्रान्तर्गत यात्रा विधान में गुरु एवं शुक्र विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें मुख्यत: गुरु एवं शुक्र ग्रहों की उदयास्त स्थिति का पता लगाते हुए तदनुरूप यात्रा का विधान बतलाया गया है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से ग्रहों का सूर्य के साथ समागम अस्त कहलाता है तथा सूर्य से अपने-अपने कालांश तुल्य अन्तरित होने पर ग्रह उदित होते हैं। मेष राशि से कन्या राशि पर्यन्त ग्रह उत्तर गोल में तथा तुला से मीन पर्यन्त दक्षिण गोल में रहते हैं। ग्रहों की इन स्थितियों से आप सभी को परिचित होना चाहिए। अब यात्रा में गुरु एवं शुक्र विचार की बात करते हैं।

4.4 यात्रा में गुरु एवं शुक्र विचार

सामान्यतया हम जानते है कि गुरु और शुक्र के अस्त होने पर विवाह, यात्रा और मुण्डनादि कार्य नहीं किया जाता। विशेष रूप से गुरु एवं शुक्र के अस्त होन पर त्याज्य कर्म का विचार नीचे

किया जा रहा है। रेवती से छ: नक्षत्र तक शुक्रान्ध होता है। इन नक्षत्रों का प्रयोग शुक्रास्त निवारणार्थ विशेष प्रयोजन में किया जाता है।

गुरु एवं शुक्र के अस्त होने पर त्याज्य कर्म विचार – कुआँ, तालाब, बावड़ी, उद्यान, गृहादि के आरम्भ एवं अवस्थान, व्रतारम्भोद्यापन, वधूप्रवेश, षोडशमहादान, सोमयादि सप्तमी, अष्टमी, नवमी को करिष्यमाण अष्टकाश्राद्ध, प्रथमक्षौरकर्म, नवान्नभक्षण, प्याउ लगाना, नवानश्रौतयज्ञ, प्रथमश्रावणीकर्म, वेदोपनिषद, महानाम्नीव्रत, काम्यवृषोत्सर्ग, त्रिपिण्डीश्राद्ध, अनैमित्ति शिशु संस्कार, देवप्रतिष्ठा, दीक्षामन्त्रोपनिषद, उपनयन, पाणिग्रहण (विवाह), मुण्डन, तीर्थदर्शन, सन्यास ग्रहण, चातुर्मास्याग, राजादर्शन, राज्याभिषेक, सकाम यात्रा, समावर्तन, कर्णवेध एवं दन्तरत्नभूषणादि कर्म गुरु एवं शुक्र के अस्त होने पर वर्जित है अर्थात् नहीं करना चाहिए। यात्रा काल में भी गुरु यदि अस्त हो तो शुभकार्य हेतु यात्रा वर्जित है।

यात्राजनित गुरु का विचार करते हुए आचार्य कथन है कि –

जीवे लग्नगते शुक्रे केन्द्रे वापि त्रिकोणगे।
गतो जयत्यरीन् राजाकृष्णवत्यां यथा व्रणम्।।

अर्थात् यात्रा के समय गुरु लग्न में हो और शुक्र केन्द्र में अथवा त्रिकोण ५,९ में हो तब गमन करने वाला अर्थात् यात्रा करने वाला शत्रु को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे कृष्णवती (एक जड़ी है) व्रण को नष्ट कर देती है।

स्वोच्चस्थे लग्नगे जीवे चन्द्रे लाभगते यदि।
गतोराजा रिपून्हन्ति पिनाकी त्रिपुरं यथा।।

गुरु उच्चराशि का होकर लग्न में बैठा हो तथा चन्द्रमा लाभ स्थान में बैठा हो तो इस प्रकार के लग्न में यात्रा करने वाला राजा उसी प्रकार शत्रुओं को मार डालता है जैसे भगवान शंकर ने त्रिपुरासासुर को मारा था।

मित्रभस्थे गुरौ केन्द्रे त्रिकोणस्थेऽथवा सिते।
शत्रून् हन्ति गतो राजा भुजंगं गरुडो यथा।।

मित्रगृही होकर गुरु केन्द्र में अथवा शुक्र त्रिकोण में हो तो ऐसी स्थिति में यात्रा करने वाला उसी प्रकार शत्रु को नष्ट कर देता है जैसे गरुड़ सर्पों को नष्ट कर देता है।

शुक्र विचार -

आचार्य रामदैवज्ञ ने मुहूर्त्तचिन्तामणि में तीन प्रकार से शुक्र को सम्मुख होने की बात कही है। यथा -

उदेति यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद्वाऽथ ककुब्भसंघे।

त्रिधोच्यते सम्मुख एवं शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात्।।

शुक्र जिस दिशा में उदित होता है उस दिशा में यात्रा करने से शुक्र सम्मुख होता है। अथवा गोल भ्रमण के द्वारा जब शुक्र उत्तर या दक्षिण गोल में होता है तो तत्तददिशाओं की यात्रा में सम्मुख होता है तथा कृत्तिकादि नक्षत्रों का पूर्वादि दिशाओं में न्यास कर जिस नक्षत्र पर शुक्र हो उस नक्षत्र की दिशा में यात्रा करने पर शुक्र सम्मुख होता है।

यात्रा काल में जब किसी भी प्रकार से शुक्र सम्मुख हो तो यात्रा नहीं करना चाहिए।

शुक्र के वक्र, अस्तंगत एवं नीचराशि में स्थित होने पर अन्य प्रदेश की यात्रा करने वाला राजा शत्रु के वशीभूत हो जाता है। यदि उक्त स्थिति में बुध अनुकूल हो तो राजा शत्रु को जीत लेता है। परन्तु बुध भी सम्मुख हो तो किसी भी प्रकार राजा की विजय नहीं होती। शुक्र सम्मुख जिस प्रकार दोषकारक होता है उसी प्रकार बुध भी दोषकारक होता है। महात्मा वशिष्ठ के अनुसार मंगल-बुध और शुक्र तीनों

ही सम्मुख होने पर दोषकारक होते हैं। यथा -

प्रतिशुक्रं प्रतिभौमं गतो नृपः।

बलेन शक्रतुल्योऽपि हतसैन्यो निवर्तते।।

वशिष्ठ संहिता के अनुसार शुक्र विचार -

शुक्र विचार -

पश्चादभ्युदिते शुक्रे यायात्प्राचीं तथोत्तराम्।

प्राच्यामभ्युदिते तस्मिन्प्रतीचीं दक्षिणां दिशम्।।

शुक्र के पश्चिम उदय होने पर पूरब दिशा या उत्तर दिशा में यात्रा करना चाहिए। जबकि पूरब में उदित होने पर पश्चिम एवं दक्षिण दिशा की यात्रा श्रेष्ठ होती है।

सम्मुखे चन्द्रजे यत्र मार्गमध्योदिते यदि।

यावदस्तमिते तस्मस्तावत्तत्रैव संवसेत्।।

जिसके बुध यात्रा में सामने हो और मार्ग मध्य में उदित हुए हो तो जब तक अस्त न हो जाये तो वहां तब तक बसना चाहिए जब तक बुध उस राशि में स्थित रहे।

प्रतिशुक्रं प्रतिबुधं प्रतिभौमं गतो नरः।

बलेन शक्रतुल्योऽपि हतसैन्यो निवर्तते।।

शुक्र के सामने, बुध के सामने या मंगल के सामने यदि कोई यात्री यात्रा करता है तो इन्द्र के तुल्य बल होने पर भी उसकी सेना मारी जाती है। और उसे लौटना पड़ता है।

प्रवेशे स्वगृहे ग्रामे विवाहे देशविभ्रमे।

प्रतिशुक्रोवो दोषो नैव भौमज्ञयोरपि।

तीर्थयात्राविधौ तेषां प्रतिशुक्रं न विद्यते।।

अपने घर या ग्राम में प्रवेश के समय विवाह में या देश में अकाल के समय सामने शुक्र से उत्पन्न दोष मंगल या बुध का दोष नहीं होता। तीर्थयात्रा में भी सामने शुक्र का दोष नहीं लगता।

काश्यपेषु वशिष्ठेषु भृग्वत्र्यङ्गसेषु च।

भरद्वाजेषु वत्सेषु प्रतिशुक्रं न विद्यते।।

कश्यप, वशिष्ठ भृगु, अंगिरा, भरद्वाज, वत्स, ऋषियों के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति के लिए सामने शुक्र का दोष नहीं लगता।

अयमर्थमनुक्तत्वाच्छास्त्रे पैतामहे क्वचित्।

तस्मात्संमुखदोषोऽस्ति प्रतिशुक्रस्य सर्वदा।।

इस अर्थ के न कहे जाने पर कहीं पितामह शास्त्र में ऐसा अर्थ नहीं किया गया है इसलिए सामने शुक्र का दोष सबको होता है।

तद्दोषशमनार्थाय शान्तिं वक्ष्ये समासतः।

कृत्वा शान्तिं प्रयत्नेन पश्चात्कार्यं समाचरेत्।।

इस सम्मुख शुक्र के दोष के लिए संक्षेप में शान्ति प्रक्रिया को कह रहा हूँ। प्रयत्नपूर्वक शान्ति करके कार्य सम्पन्न करना चाहिए।

भृगोर्लग्ने भृगोर्वर्गे भृगोर्वारे भृगूदये।

उपोष्य भृगुवारेऽपि यावच्छुक्रोदयं व्रती।।

शुक्र का लग्न हो, शुक्र का वर्ग हों, शुक्र का वार हो और शुक्र उदित हो तो जब तक शुक्र उदित रहे। शुक्रवार के दिन व्यक्ति को व्रत करके उपवास करना चाहिए।

रजतेन सुशुद्धेन प्रतिमां कारयेद्भृगोः।

लिखेदष्टदलं पद्मं कांस्यपात्रे च तण्डुलैः।।

शुद्ध चाँदी के द्वारा शुक्र की प्रतिमा बनवानी चाहिए। कांस्य पात्र में चावलों से अष्टदल कमल का निर्माण करें।

शुक्लसूक्ष्माम्बरैर्वेष्ट्य प्रतिमां तत्र पूजयेत्।

शुक्लपुष्पाक्षतैर्गन्धैर्मुक्ताहारैर्विचित्रितैः।।

सफेद, सूक्ष्म प्रतिमा को लपेटकर पूजा करें। पुनः सफेद फूल अक्षत, गन्ध, मोती की माला आदि विचित्र पदार्थों से।

उपचाराणि कार्याणि शुक्रं ते अन्यदित्यृचा।

तन्मन्त्रेण जपं कुर्यात्सम्यगष्टोत्तरं शतम्।।

शुक्र का अन्यदित्य इस मन्त्र से उपचार आदि के द्वारा शुक्र की पूजा करनी चाहिए और इस मन्त्र का 108 बार जाप करना चाहिए।

कर्मान्ते तेन मन्त्रेण भक्त्या चाघ्र्यं प्रदापयेत्।

श्वेतगन्धाक्षतैः पुष्पैः क्षीरमिश्रितवारिभिः।।

उसी मन्त्र के द्वारा पूजन के अन्त में भक्तिपूर्वक सफेद गन्ध, अक्षत्र, फूल तथा दुग्ध मिश्रित जल के द्वारा अर्घ देना चाहिए।

दैत्यमन्त्री दिवादर्शी चोशना भार्गवः कविः।

श्वेतोऽथ मण्डली काव्यो विधिस्थो भृगवे नमः।।

दैत्य मन्त्री, दिवादर्शी, उशना, भार्गव, कवि, श्वेत, मण्डली, काव्य, विधि, भृगु इन नामों में चतुर्थी विभक्ति लगाकर प्रणाम करना चाहिए।

दत्त्वा ह्यर्घं प्रयत्नेन प्रार्थयेच्चैव भक्तितः।

अनेनैव च मन्त्रेण प्रांजलिः प्रणतः स्थितः।।

इसी मन्त्र के द्वारा अंजलि बनाकर खड़े होकर झुककर शुक्र को अर्घ दे करके प्रयत्नपूर्वक भक्तिभाव से प्रार्थना करनी चाहिए।

त्वत्पूजयाऽनया शुक्र मे संमुखसमुöवम्।

दोषं विनाशय क्षिप्रं रक्ष मां तेजसां निधे।।

हे शुक्र! आपकी इस पूजा के द्वारा आप मेरी वृद्धि को करें अर्थात् सन्मुख दोष का शीघ्र विनाश करें और हे तेजस्वी शुक्र! मेरी रक्षा करें।

इति प्राथ्र्य प्रयत्नेन प्रतिमा भूषणान्विता।

दैवज्ञायैव दातव्या श्वेताश्वसहितेन च।।

ऐसी प्रार्थना करके प्रयत्नपूर्वक प्रतिमा को आभूषण से युक्त करके ज्योतिषी को सफेद घोड़े सहित दे देना चाहिए।

शिष्टेभ्यो दक्षिणां दद्याद्यथावित्तानुसारतः।

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्स्वयं भुंजीत बन्धुभिः।।

शिष्ट व्यक्तियों को अपने धन के अनुसार दक्षिणा देनी चाहिए। पुनः ब्राह्मणों को भोजन करावें। अन्त में बन्धु-बान्धवों के सहित स्वयं भी भोजन करें।

एवं यः कुरुते सम्यक्प्रतिशुक्रप्रपूजनम्।

न तस्य सम्मुखो दोषो विजयी चार्थवान्भवेत्।।

जो इस प्रकार से ठीक ढंग से सन्मुख शुक्र का पूजन करता है उसे सन्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता वह धनवान एवं विजयी होता है।

इतरेषां ग्रहाणां च पूजां कुर्यात्प्रयत्नतः।

तत्तत्संमुखजं दोषं तत्क्षणादेव नयति।।

शुक्र से अतिरिक्त अन्य ग्रहों की भी पूजा प्रयत्नपूर्वक करनी चाहिए। उसी-उसी प्रकार से सन्मुख उत्पन्न दोषों को वह तक्षण ही नष्ट कर देता है।

सूर्याय कपिलां दद्याच्छंखं चन्द्रमसेऽपि च।

कुजाय वृषभं दद्यात्स्वर्णं दद्याद्बुधाय च।।

सूर्य के लिए कपिला गऊ तथा चन्द्रमा के लिए शंख, मंगल के लिए बैल तथा बुध के लिए सोने का दान करना चाहिए।

तनुरर्थाहयो धन्वी वाहनो मन्त्रसंज्ञकः।

शत्रुर्मार्गस्तथायुश्च मनोव्यापारसंज्ञकः।।

द्वादशभावों के नाम क्रमशः बताए जा रहे हैं। तनु1, अर्थ2, पराक्रम3, वाहन4, मन्त्र5, शत्रु6, मार्ग7, आयु8, मन9, व्यापार10।

लाभश्च व्ययसंज्ञश्च तन्वादीनां च संज्ञकाः।

खेटे तन्वादिभावेषु ज्ञेयं यातुः फलं त्विदम्।।

लाभ और व्यय संज्ञक, तनु आदि संज्ञक, ग्रहों के तनु आदि भावों में जो फल कहे गये हैं उन्हें यहां भी जानना चाहिए।

घ्नन्ति क्रूरास्त्रिषष्ठायभावान्हित्वा परान्सदा।

पुष्णन्ति सौम्यखचराः षष्ठाष्टान्त्यविना परान्।।

क्रूर ग्रह तीसरे, छठें और ग्यारहवें भाव को छोड़कर अन्य भावों में सदा कार्यों को नष्ट करते हैं। जबकि शुभग्रह छठें, आठवें और बारहवें के बिना दूसरे भावों को पुष्ट करते हैं।

लग्ने षष्ठाष्टमं हन्ति चन्द्रः शुक्रोऽस्तगः सदा।

मृत्युलग्नस्थितश्चन्द्रो यातुर्मृत्युप्रदः सदा।।

लग्न से छठें, आठवें, भावों में स्थित चन्द्रमा नष्ट करता हैं तथा शुक्र अस्त हो जाने पर सदैव कष्ट देता हैं मृत्यु लग्न में स्थित चन्द्रमा यात्रा करने वाले को सदैव मृत्यु देता हैं।

एवमुक्तप्रकारेण यात्रां नूनं करोति यः।

सर्वान्कामानवाप्नोति त्वरितन्तु न संशयः।।

इस प्रकार पूर्व में कहे गये के अनुसार जो निश्चित ही यात्रा करता है वो सम्पूर्ण कामनाओं को शीघ्र ही प्राप्त करता है इसमें सन्देह नहीं हैं।

उक्त्वा साधारणां यात्रां युद्धयात्रां ब्रवीमि ताम्।

व्रजन्ति ये नृपाः सूक्ष्मलग्ने ते यायिनः सदा।।

इस साधारण यात्रा को कहकर अब उस युद्ध यात्रा को कह रहा हूँ जिसमें यात्रा करने वाले राजा लोग सदैव सूक्ष्म लग्न में यात्रा करते हैं।

फलसिद्धिर्धिष्ण्यगुणैरग्रजानां भवेत्सदा।

योगलग्ने क्षितीशानां चैराणां शकुनैर्भृशम्।।

ब्राह्मणों के लिए फल की सिद्धि नक्षत्र के गुणों के अनुसार सदैव होती हैं। जबकि राजाओं के लिए योग, योगलग्न के अनुसार यात्रा का फल होता है जबकि चोरों को शकुन के अनुसार फल होता है।

मुहूत्र्तशक्तितोऽन्येषां निमित्तैश्च फलोदयः।

तत्तदुक्तप्रकारेण तस्माद्यात्रां करिष्यति।।

अन्य लोगों को यात्रा फल मुहूर्त की शक्ति से अथवा निमित्त के अनुसार प्राप्त होती है। उस-उस प्रकार से ऊपर कहे गये प्रकार के द्वारा यात्रा करनी चाहिए।

तिथिवारसनक्षत्रयोगेषु करणेषु च।

यात्रानुक्तेष्वथैतेषु चन्द्रताराबलेऽपि च।।

तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करणों में, जिसमें यात्रा न कही गयी हो उन मुहूर्तोंर में चन्द्र एवं तारा बल में थी।

योगलग्नयुता राज्ञां यात्रा च विजयप्रदा।

विचित्रान्योगलग्नांस्तान्सम्यग्वक्ष्ये समासतः।।

योग लग्न से युत राजा की यात्रा विजय देने वाली होती है। अतः विचित्र योग लग्नों के फल को ठीक ढंग से संक्षेप में कहेंगे।

गुरौ वीर्ये केन्द्रगते बुधे वा भृगुनन्दने।

विजयो नामयोगोऽयं यातुर्विजयदः सदा।।

गुरु के बलवान होकर केन्द्र में स्थित होने पर अथवा बुध एवं शुक्र के बलवान होकर केन्द्र में आने पर यह योग विजय नाम का होता है। यह यात्रा करने वाले को सदा विजय देता है।

लक्षदोषान्बुधो हन्ति सितो लक्षद्वयं बली।

कोटिदोषान्गुरुर्हन्ति एको वा केन्द्रगो यदि।।

बुध एक लाख दोष दूर करता है जबकि शुक्र बलवान होने पर दो लाख दोषों को दूर करता है किन्तु किसी भी केन्द्र में गया हुआ अकेला बृहस्पति एक करोड़ दोषों को नष्ट करता है।

स्वराशिगे बुधे लग्ने सिते वा सुरवंदिते।

नद्यावर्ताहयो योगो यातुरिष्टार्थसिद्धिदः।।

अपने राशि में बुध लग्न में स्थित हो अथवा शुक्र या गुरु अपने राशि का होकर लग्न में स्थित हों तो इस योग को नद्यावर्त योग कहा है जो यात्री के लिए अभीष्ट धन और सिद्धि को देने वाला होता है।

स्वांशसंस्थे बुधे लग्ने शुक्रे वा देवपूजिते।

शंखसंज्ञो महायोगो यातुः कीर्तिप्रदः सदा।।

अपने नवांश में स्थित गुरु, बुध एवं शुक्र यदि लग्न में स्थित हों तो यह शंख नामक महायोग होता है। और यह यात्रा करने वाले को सदैव यश प्रदान करता है।

स्वराशिस्वांशगे सौम्ये लग्नस्थे वा भृगोः सुते।

जीवे वा पद्ययोगोऽयं यातुः कल्याणदः सदा।।

अपने राशि और अपने नवांश में गये हुए लग्न मंे स्थित बुध, शुक्र या बृहस्पति हों तो यह पद्य नामक योग होता है जो यात्रा करने वाला का सदैव कल्याण करता है।

अधिमित्रगृहस्थे ज्ञे लग्नगे वा भृगोः सुते।

यात्रा में शुक्रदोष एवं परिहार

यात्रा में शुक्र का विचार करते हुए नारदपुराण में कहा गया है कि यदि शुक्र अस्त हो, तो यात्रा में हानि होती है। यदि वह सम्मुख हो, तो यात्रा करने वाले की पराजय होती है। सम्मुख शुक्र के दोष को कोई भी ग्रह नहीं हटा सकता है। किन्तु वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, भरद्वाज और गौतम-इन पाँच गोत्र वालों को सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है।

मूढे शुक्रे कार्यहानिः प्रतिशुक्रे पराजयः।

प्रतिशुक्रकृतं दोषं हन्तुं शक्ताग्रहा नहि।।

वासिष्ठकाश्यपेयात्रिभारद्वाजाः सगौतमाः।

एतेषां पंचगोत्राणां प्रतिशुक्रो न विद्यते।।

यदि एक ग्राम के भीतर ही यात्रा करनी हो या विवाह में जाना हो या दुर्भिक्ष होने पर अथवा राजाओं में युद्ध होने पर तथा राजा या ब्राहमणों का कोप होने पर कहीं जाना पड़े, तो इन अवस्थाओं में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है। शुक्र यदि नीच राशि में या शत्रुराशि में अथवा वक्रगति या पराजित हो, तो यात्रा करने वालों की पराजय होती है। यदि शुक्र अपनी उच्चराशि (मीन) में हो, तो यात्रा में विजय होती है।

नीचगोऽरिगृहस्थो वा वक्रगो वा पराजितः।

यातुमंगप्रदः शुक्रः स्वोच्चस्थश्चेज्जयप्रदः।।

जब मंगल आदि ग्रहों में किन्हीं दो ग्रहों की एक राशि में अंश कला बराबर हो, तो दोनों में युद्ध समझा जाता है। उन दोनों में जो उत्तर रहता है, वह विजयी तथा दक्षिण रहने वाला पराजित होता

है। इस प्रकार वहाँ यात्रा के अनेक योगों का वर्णन किया गया है।

बोध प्रश्न -

1. सैद्धान्तिक रीति से ग्रहों का उदयास्त किस पर निर्भर करता है।
   क. कालांश ख. सूर्य ग. चन्द्र घ. मंगल
2. यदि शुक्र सम्मुख हो तो क्या नहीं करना चाहिए।
   क. विवाह ख. यात्रा ग. मुण्डन घ. कोई नहीं
3. गुर्वस्त में क्या नहीं किया जाता है।
   क. विवाह ख. उपनयन ग. यात्रा घ. सभी
4. पाणिग्रहण संस्कार किसे कहते है।
   क. उपनयन ख. मुण्डन ग. कूप घ. विवाह
5. सूर्य मेष राशि से कन्या राशि तक किस गोल में रहते हैं।
   क. उत्तर ख. दक्षिण ग. पूर्व घ. पश्चिम
6. रेवती से क्रमशः छः नक्षत्र तक शुक्र क्या होता है।

क. शुक्रोदय ख. शुक्रास्त ग. सम्मुख घ. शुक्रान्ध

4.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ज्योतिष शास्त्रान्तर्गत यात्रा विधान में गुरु एवं शुक्र विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें मुख्यत: गुरु एवं शुक्र ग्रहों की उदयास्त स्थिति का पता लगाते हुए तदनुरूप यात्रा का विधान बतलाया गया है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से ग्रहों का सूर्य के साथ समागम अस्त कहलाता है तथा सूर्य से अपने-अपने कालांश तुल्य अन्तरित होने पर ग्रह उदित होते हैं। मेष राशि से कन्या राशि पर्यन्त ग्रह उत्तर गोल में तथा तुला से मीन पर्यन्त दक्षिण गोल में रहते हैं। गुरु एवं शुक्र के अस्त होने पर त्याज्य कर्म विचार – कुआँ, तालाब, बावड़ी, उद्यान, गृहादि के आरम्भ एवं अवस्थान, व्रतारम्भोद्यापन, वधूप्रवेश, षोडशमहादान, सोमयादि सप्तमी, अष्टमी, नवमी को करिष्यमाण अष्टकाश्राद्ध, प्रथमक्षौरकर्म, नवान्नभक्षण, प्याउ लगाना, नवानश्रौतयज्ञ, प्रथमश्रावणीकर्म, वेदोपनिषद, महानाम्नीव्रत, काम्यवृषोत्सर्ग, त्रिपिण्डीश्राद्ध, अनैमित्ति शिशु संस्कार, देवप्रतिष्ठा, दीक्षामन्त्रोपनिषद, उपनयन, पाणिग्रहण (विवाह), मुण्डन, तीर्थदर्शन, सन्यास ग्रहण, चातुर्मास्याग, राजादर्शन, राज्याभिषेक, सकाम यात्रा, समावर्तन, कर्णवेध एवं दन्तरत्नभूषणादि कर्म गुरु एवं शुक्र के अस्त होने पर वर्जित है अर्थात् नहीं करना चाहिए। यात्रा काल में भी गुरु यदि अस्त हो तो शुभकार्य हेतु यात्रा वर्जित है।

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

गुर्वस्त – गुरु ग्रह का अस्त होना

शुक्रास्त - शुक्र ग्रह का अस्त होना

शुक्रान्ध – शुक्र का अन्धे वाली स्थिति में रहना। रेवती से क्रमश: ६ नक्षत्रों में शुक्रान्ध होता है।

कालांश – ग्रह अपने-अपने कालांश तुल्य उदित और अस्त होते हैं।

पाणिग्रहण – विवाह

उपनयन – यज्ञोपवीत

कर्णवेध – कान छेदने वाला संस्कार कर्णवेध होता है।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क

2. ख
3. घ
4. घ
5. क
6. घ

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्त्तचिन्तामणि – यात्राध्याय
2. नारद संहिता – यात्रा प्रकरण
3. पूर्वकालामृत – यात्रा प्रकरण
4. प्रश्न मार्ग – यात्राध्याय

4.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. योग यात्रा
2. वशिष्ठ संहिता
3. नारद पुराण
4. गरूड़ पुराण

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. यात्रा में गुरु विचार का उल्लेख कीजिये।
2. यात्रा में शुक्र विचार का वर्णन कीजिये।
3. यात्रा काल में गुरु एवं शुक्र विचार क्यों आवश्यक है।
4. गुरु एवं शुक्र विचार के विभिन्न अवयवों को लिखिये।

खण्ड -2

यात्रा में शुद्धि एवं भावफल विचार

इकाई - 2 यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 ऋतुशुद्धि परिचय
1.4 यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार
1.5 सारांश
1.6 पारिभाषिक शब्दावली
1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.9 सहायक पाठ्यसामग्री
1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एम.ए. ज्योतिष चतुर्थ सेमेस्टर के पंचम पत्र (एमएजेवाई-610) के द्वितीय खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार। इससे पूर्व आपने यात्रा में गुरु एवं शुक्र विचार से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

ऋतुशुद्धि का सम्बन्ध यात्रा काल में ऋतुओं से है। विदित हो कि भारतवर्ष में 06 ऋतुओं का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। ऋतु सूर्य के संक्रमण द्वारा परिवर्तन होता है। 2-2 राशियों का सूर्य द्वारा भोग किये जाने पर ऋतुओं का निर्माण होता है। यथा - मकर-कुम्भ में सूर्य की स्थिति शिशिर ऋतु कहलाता है, उसी क्रम में दो-दो राशियों का क्रमश: भोग करने से वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद एवं हेमन्त ऋतुओं का निर्माण होता है। यात्रा काल में ऋतुओं की क्या महत्ता है। इसका अध्ययन हम इस इकाई में करने जा रहे है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार' के बारे में जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ऋतुशुद्धि को परिभाषित कर सकेंगे।
- ऋतुशुद्धि के अवयवों को समझा सकेंगे।
- यात्रा में ऋतुशुद्धि लगने वाले कारणों को समझ लेंगे।
- ऋतुशुद्धि में कृत्याकृत्य को जान लेंगे।
- ऋतशुद्धि के सिद्धान्तों को समझ लेंगे।

1.3 ऋतुशुद्धि परिचय

प्रिय अध्येताओं! आप सभी जानते ही होंगे कि ज्योतिष शास्त्र का क्षेत्र इतना विहंगम है कि उसमें सृष्टि के समस्त तत्व समाहित है, तभी तो बिन्दु से सिन्धु की यात्रा इसमें द्रष्टव्य होती है। इस इकाई में ऋतुशुद्धि का विचार किया जा रहा है जिसका सम्बन्ध यात्राकालिक ऋतुविचार से है। आप सभी को यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार से पूर्व ऋतुशुद्धि है क्या? इसे भी जान लेना चाहिए।

विदित हो कि सूर्य के राशि संक्रमण अर्थात् राशि परिवर्तन के कारण ऋतुओं की उत्पत्ति होती है। ऋतु से तात्पर्य - षड् (6) ऋतुओं से हैं। उनका नाम है – शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमन्त। सूर्य द्वारा दो राशिओं का भोग करने से एक ऋतु की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार वर्ष में दो-दो राशिओं के भोग करने से कुल 06 ऋतुओं की उत्पत्ति होती है।

स्पष्टार्थ चक्र –

क्रम संख्या	**सूर्य भोग राशि**	**ऋतु नाम**
1.	मकर, कुम्भ	शिशिर
2.	मीन, मेष	वसन्त
3.	वृष, मिथुन	ग्रीष्म
4.	कर्क, सिंह	वर्षा
5.	कन्या, तुला	शरद
6.	वृश्चिक, धनु	हेमन्त

यात्राकाल में ऋतुशुद्धि से तात्पर्य यह है कि किस ऋतु में यात्रा प्रशस्त होती है और किसमें अप्रशस्त, इसका ज्ञान करना। सूर्य जब कर्क, सिंह राशि में गमन करता है तो वर्षाऋतु होती है। इस कालखण्ड में यात्रा करना निषिद्ध कहा गया है। भगवान श्रीराम भी जब सीता की खोज करते हुए सुग्रीव तक पहुँचते है तो वर्षाकाल का समय हो गया होता है। उस कालखण्ड में श्रीराम द्वारा वर्षाकाल तक के लिए यात्रा स्थगित कर देने का विवरण प्राप्त होता है। किसी हिन्दी के कवि का कथन भी है कि –

''वर्षा विगत शरद ऋतु आई लछिमन देखइ परम सुहाई।''

इस पंक्ति में वर्षाकाल के बित जाने की बात आई है। क्योंकि उस काल के पश्चात् सीता की खोज की प्रक्रिया पुन: आरम्भ हो सकती है। यहाँ लक्ष्मण वर्षाकाल जो यात्रा में प्रशस्त नहीं माना गया है, उसके व्यतीत हो जाने से प्रसन्नचित्त होते है, यही बतलाया गया है।

यात्रा के लिए प्रशस्त ऋतु – वस्तुत: वर्षाऋतु को छोड़कर अन्य सभी ऋतुओं में यात्रा किया जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र में यात्राजनित ऋतुशुद्धि को लेकर विस्तृत उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं होता

है। तत्सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्त ही ग्रन्थों में दिखलाई पड़ते है।

अन्य ऋतु विचार -

आचार्य रामदैवज्ञ मुहूर्त्तचिन्तामणि में कन्याओं के प्रथम रजोदर्शन (ऋतुस्राव) वर्तमान में उसे मासिक धर्म के नाम से जानते हैं, कब शुभ और कब अशुभ होता है। उसका वर्णन करते हुए कहते है कि -'आद्यं रज: शुभं माघ: मार्गराधेष फाल्गुने। ज्येष्ठश्रावणयो: शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा।।' अर्थात् कन्याओं का सर्वप्रथम रजोदर्शन माघ, मार्गशीर्ष, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ और श्रावण मासों में शुक्ल पक्ष में, शुभ (सोम, बुध, गुरु और शुक्र) वारों में, शुभलग्नों में तथा दिन के समय शुभ होता है।

गर्भ स्त्रियों का फल है तथा ऋतुस्राव पुष्प है। अत: संस्कारों से पूर्व आचार्य ने रजोधर्म के शुभाशुभत्व का विचार किया है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार कन्याओं को १२ वर्ष से ४० वर्ष की आयु तक रजस्राव होता है। रजस्राव के उपरान्त ही स्त्रियों में गर्भधारण की क्षमता आती है। रजोधर्म की शुद्धि के अनुरूप ही गर्भ की पुष्टता होती है। अत: सर्वप्रथम इसके शुभाशुभ का विचार आवश्यक होता है।

ऋतुस्राव के शुभाशुभ नक्षत्र -

श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सिताम्बरे।
मध्यं च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत्।।

श्रवण नक्षत्र से तीन अर्थात् श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा, मृदु-क्षिप्र-ध्रुव संज्ञक (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी,पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी) और स्वाती नक्षत्रों में श्वेत वस्त्र पर प्रथम रजोदर्शन शुभ, मूल, पुनर्वसु, मघा और मिश्र संज्ञक (विशाखा, कृत्तिका) नक्षत्रों में मध्यम तथा शेष अन्य नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन अशुभ होता है।

निषिद्ध काल –

भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासन्ध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु।
रोगेऽष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते चाद्यं नो रजोदर्शनं सत्।।

भद्राकाल में, निद्रा समय, रविसंक्रान्ति में, अमावस्या, रिक्ता (४,९,१४) षष्ठी, द्वादशी एवं अष्टमी तिथियों में, वैधृति एवं व्यतिपात योगों में, रोग से ग्रसित रहने पर, सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण काल में प्रथम रजोदर्शन (ऋतुस्राव) शुभ नहीं होता है।

ऋतुमति स्नान मुहूर्त्त –

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रवाख्यै:
शाक्रान्वितै: शुभतिथौ शुभवासरे च।
स्नायादथार्तववती मृगपौष्णवायु
हस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम्।।

हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशीर्ष, अनुराधा, धनिष्ठा, ध्रुव संज्ञक और ज्येष्ठा नक्षत्रों में, शुभतिथियों एवं शुभ वारों में ऋतुमती स्त्री को स्नान करना चाहिए।

मृगशीर्ष, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी एवं रोहिणी नक्षत्रों में स्नान करने से स्त्री अतिशीघ्र गर्भ धारण करती है।

आधाने निषिद्धकाल –

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं
दास्रं पौष्णमघोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिम्।
पित्रो: श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षत: पापभम्।।

अर्थात् गर्भाधान हेतु अपनी पत्नी के साथ सहवास करते समय तीनों गण्डान्तों तिथि, नक्षत्र और लग्न गण्डान्त जन्म और मृत्युसंज्ञक ताराओं, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती एवं मघा नक्षत्रों, सूर्य-चन्द्रमा के ग्रहण दिवसों, व्यतिपात, वैधृति, योग माता-पिता के श्राद्ध दिन, दिन के समय, परिघयोग के पूर्वार्द्ध, योग, उत्पात से ग्रस्त नक्षत्र, जन्मनक्षत्र से अथवा जन्मराशि से अष्टम नक्षत्र एवं राशि तथा पापग्रह से युक्त लग्न एवं नक्षत्र का परित्याग करना चाहिए। अर्थात् उक्त कुयोगों का परित्याग कर शुभलग्न मुहूर्त्त में गर्भाधान करना चाहिये।

1.4 यात्रा काल में ऋतुशुद्धि विचार –

यात्रा करने से पूर्व यदि ऋतुस्राव आरम्भ हो जाय तो विशेष परिस्थिति में प्रथम तीन दिवसों का यात्रा हेतु त्याग करना चाहिये। उसके पश्चात् चौथे दिन केश धोकर यात्रा आरम्भ की जा सकती है। यदि संभव हो तो पूरे पाँच दिन के पश्चात् ही यात्रा करना शुभफलदायी होता है। सामान्यत: ये सभी लोग जानते हैं।

यदि यात्रा में ही ऋतुकाल आरम्भ हो जाय तो अन्य किसी दूसरे में स्पर्श करने से बचना चाहिए तथा गन्तव्य स्थल तक पहुँच कर सावधानीपूर्वक रहना चाहिए।

मुख्यतया निम्न प्रकार से यात्राकाल में बिन्दुवार ऋतुशुद्धि विचार करना चाहिए –

1. पाँच दिनों की प्रतीक्षा कर
2. मंगल शनि रवि एवं सोम वार को छोड़कर अन्य वारों में शुद्धि करनी चाहिए।
3. न्यूनतम तीन दिवसों तक सावधानीपूर्वक रहकर उसके पश्चात् शुद्धि करनी चाहिए।
4. रसोई, देवालय एवं अन्य किसी दूसरे व्यक्ति में स्पर्श करने से बचना चाहिए।
5. ऋतुमती कन्या अथवा स्त्री को एकाकी वास करना चाहिए।
6. ऋतुकाल में गृह के अन्य कार्य का भी यथासंभव त्याग करना चाहिए।

उक्त ये सभी कार्य ऋतुमती कन्या अथवा स्त्री को ध्यान में रखते हुए यात्रा में ऋतु सम्बन्धित शुद्धि आदि का विचार करना चाहिए।

यद्यपि आप ज्योतिष शास्त्र के होरा स्कन्ध से सम्बन्धित जितने भी उपलब्ध ग्रन्थ हैं उनका अवलोकन करेंगे तो पायेंगे कि उनमें यात्रा प्रकरण मुख्यत: राजा को ही केन्द्रित कर लिखा गया है। उसमें तिथि, वार, नक्षत्र, लग्नादि समस्त शुद्धि विचार का उल्लेख पर्याप्त मात्रा में मिलता है। किन्तु यात्राजनित ऋतुशुद्धि विचार नाममात्र के अर्थात् कुछ ही ग्रन्थों में प्राप्त होता है। अत: यात्राकाल की अन्य समस्त सामान्य योगों को भी यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

जैसे दिशाशूल का विचार ऋतुशुद्धि विचार में भी आवश्यक है -

दिशाशूल -

यात्रा के लिए दिक्शूल का विचार करते हुए नारदपुराण में कहा गया है कि शनि एवं सोमवार के दिन पूर्व दिशा की ओर न जाय, गुरुवार को दक्षिण न जाय, शुक्र और रविवार को पश्चिम न जाय तथा बुधवार और मंगलवार को उत्तर दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। यथा -

न मन्दून्दुदिने प्राचीं न व्रजेद् दक्षिणं गुरौ।
सितार्कयोर्न प्रतीचीं नोदीचीं ज्ञारयोर्दिने।।

इसी प्रकार ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रोहिणी और उत्तराफाल्गुनी-ये नक्षत्र क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में शूल होते हैं। तथा अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी क्रमश: पूर्वादि दिशाओं के लिए सिद्ध नक्षत्र कहे गये हैं। इनमें यात्रा सर्वदा शुभ फल देने वाली होती है।

ललाट योग –

यदि यात्राकाल के लग्न में सूर्य हो तो पूर्व दिशा में जाने वाले को ललाट योग होने से यात्रा कदापि नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार ११,१२ शुक्र हो तो अग्निकोण वाले के लिए ललाट योग

होगा। १० में मंगल दक्षिण के लिए, ८,९ राहु नैर्ऋत्य के लिए,७ में शनि पश्चिम के लिए। ५,६ चन्द्रमा वायव्य के लिए। ४ में बुध उत्तर दिशा के लिए और २,३ में गुरु स्थित हो तो ईशान कोण के लिए यात्रा करने वालों के लिए ललाट योग होगा। इन सभी ललाट योग का त्याज्य ऋतुशुद्धि के अन्तर्गत भी करना चाहिए।

शुक्र दोष –

उदेति यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद्वाऽथ ककुब्भसंघे।
त्रिधोच्यते सम्मुख एवं शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात्।।

शुक्र जिस दिशा में उदित होता है उस दिशा में यात्रा करने से शुक्र सम्मुख होता है। अथवा गोल भ्रमण के द्वारा जब शुक्र उत्तर या दक्षिण गोल में होता है तो तत्तददिशाओं की यात्रा में सम्मुख होता है तथा कृत्तिकादि नक्षत्रों का पूर्वादि दिशाओं में न्यास कर जिस नक्षत्र पर शुक्र हो उस नक्षत्र की दिशा में यात्रा करने पर शुक्र सम्मुख होता है।

यात्रा काल में जब किसी भी प्रकार से शुक्र सम्मुख हो तो यात्रा नहीं करना चाहिए। यात्रा में शुक्र का विचार सबके लिए आवश्यक होता है। विशेष रूप से स्त्रियों के लिए।

प्रतिशुक्रकृतं दोषं हन्ति शुक्रो ग्रहा नहि।
वशिष्ठः काश्यपेयोऽत्रिर्भरद्वाजः सगौतमः।।
एतेषां पंचगोत्राणां प्रतिशुक्रो न विद्यते।।

सम्मुख शुक्र का दोषोपशमन शुक्र ही करता है। अन्य ग्रहों से दोष दूर नहीं होता है। वशिष्ठ, अत्रि, कश्यप, भारद्वाज और गौतम इन ५ गोत्र वालों को शक्र के सम्मुख और वाम दक्षिणादि का दोष नहीं लगता।

एकग्रामे विवाहे च दुभिर्क्षे राजविप्लवे।
द्विजक्षोभे नृपक्षोभे प्रतिशुक्रो न विद्यते।।

एकग्राम, विवाह, दुर्भिक्ष, राज्यविप्लव, ब्राह्मण का शाप, राजा का क्रोध इनसे सम्बन्धित यात्रा में शुक्र का दोष नहीं लगता है।

इस प्रकार तिथि घात, वार घात, नक्षत्र घात आदि समस्त घात विचार भी सभी यात्राओं के लिए विचारणीय होता है। ऋतुशुद्धि विचार में भी उक्त ये समस्त विचार आवश्यक होते हैं।

यात्रा के लिए विशेषयोग

लग्न और ग्रहों की स्थिति से नाना प्रकार के यात्रा-योग होते हैं, राजाओं (क्षत्रियों) को योगबल से ही अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है। ब्राहमणों को नक्षत्रबल से तथा अन्य मनुष्यों को मुहूत्र्तबल से इष्टसिद्धि होती है। इसी प्रकार तस्करों को शकुल बल से अपने अभीष्ट की प्राप्ति होती है। जैसा कि नारदपुराण में कहा है-

यात्रायोग विचित्रास्तान् योगान् वक्ष्ये यतस्ततः।
फलसिद्धिर्योगलग्नाद्राज्ञां विप्रस्य धिष्ण्यतः।
मुहूत्र्तशक्तितोऽन्येषां शकुनैस्तस्करस्य च।।

नारदपुराण में यात्रा योग का कथन करते हुए कहा गया है कि शुक्र, बुध और बृहस्पति-इन तीनों में कोई भी यदि केन्द्र या त्रिकोण में हो, तो 'योग' कहलाता है। यदि उनमें दो ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो, तो 'अधियोग' कहलाता है और यदि तीनों ग्रह केन्द्र (1, 4, 7, 10) या त्रिकोण (9, 5) में हो, तो योगाधियोग कहलाता है। योग में यात्रा करने वालों का कल्याण होता है। अधियोग में यात्रा करने से विजय प्राप्त होती है और योगाधियोग में यात्रा करने वाले को कल्याण, विजय तथा सम्पत्ति का भी लाभ होता है।

केन्द्रत्रिकोणे ह्येकेन योगः शुक्रज्ञसूरिणाम्।
अभियोगो भवेद् द्वाभ्यां त्रिभिर्योगाधियोगकः।।
योगेऽपि यायिनां क्षेममधियोगे जयो भवेत्।
योगाधियोगे क्षेमं च विजयार्थविभूतयः।।

अन्य योगों का वर्णन करते हुए वहाँ कहा गया है कि लग्न से दसवें स्थान में चन्द्रमा, षष्ठ स्थान में शनि और लग्न में सूर्य हों, तो इस योग में यात्रा करने वाले राजा को विजय तथा शत्रु की सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। इसी प्रकार अनेक योगों का वर्णन प्राप्त होता है।

बोध प्रश्न -

1. सर्वप्रथम रजोदर्शन किस मास में शुभ होता है।
   क. माघ ख. मार्गशीर्ष ग. फाल्गुन घ.सभी
2. आयुर्वेद के अनुसार ऋतुस्राव का समय है।
   क. १२ से ५० ख. १२-४० वर्ष ग.१०-२५ घ. कोई नहीं

3. निम्न में शुभ वार है -

   क. मंगल ख. रवि ग. शनि घ. गुरु

4. सद्वारे शब्द का अर्थ क्या है।

   क. शुभ दिन में ख. अशुभ दिन में ग. रविवार घ. भौमवार

5. पूर्व दिशा की यात्रा किस दिन नहीं करनी चाहिए।

   क. शनि एवं सोम ख. मंगल ग. बुध घ. शनि

1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ऋतुशुद्धि का सम्बन्ध कन्याओं से है। आचार्य रामदैवज्ञ मुहूर्त्तचिन्तामणि में कन्याओं के प्रथम रजोदर्शन (ऋतुस्राव) वर्तमान में उसे मासिक धर्म के नाम से जानते हैं, कब शुभ और कब अशुभ होता है। उसका वर्णन करते हुए कहते है कि -

'आद्यं रज: शुभं माघ: मार्गराधेष फाल्गुने। ज्येष्ठश्रावणयो: शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा।।' अर्थात् कन्याओं का सर्वप्रथम रजोदर्शन माघ, मार्गशीर्ष, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ और श्रावण मासों में शुक्ल पक्ष में, शुभ (सोम, बुध, गुरु और शुक्र) वारों में, शुभलग्नों में तथा दिन के समय शुभ होता है। गर्भ स्त्रियों का फल है तथा ऋतुस्राव पुष्प है। अत: संस्कारों से पूर्व आचार्य ने रजोधर्म के शुभाशुभत्व का विचार किया है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार कन्याओं को १२ वर्ष से ४० वर्ष की आयु तक रजस्राव होता है। रजस्राव के उपरान्त ही स्त्रियों में गर्भधारण की क्षमता आती है। रजोधर्म की शुद्धि के अनुरूप ही गर्भ की पुष्टता होती है। अत: सर्वप्रथम इसके शुभाशुभ का विचार आवश्यक होता है। श्रवण नक्षत्र से तीन अर्थात् श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा, मृदु-क्षिप्र-ध्रुव संज्ञक (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी,पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी) और स्वाती नक्षत्रों में श्वेत वस्त्र पर प्रथम रजोदर्शन शुभ, मूल, पुनर्वसु, मघा और मिश्र संज्ञक (विशाखा, कृत्तिका) नक्षत्रों में मध्यम तथा शेष अन्य नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन अशुभ होता है।

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

ऋतुशुद्धि – ऋतुशुद्धि का सम्बन्ध कन्याओं से है।

रजस्राव - ऋतुस्राव

रिक्ता – ४,९,१४ तिथियाँ

जया – ३,८,१३ तिथि

मिश्र संज्ञक – विशाखा एवं कृत्तिका नक्षत्र

शुभाशुभ – शुभ और अशुभ

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. घ
2. ख
3. घ
4. क
5. क

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्त्तचिन्तामणि – मूल लेखक – भास्कराचार्य:, टिका – पं. सत्यदेव शर्मा
2. मुहूर्त्तपारिजात – आर्ष ग्रन्थ, टिका – कपिलेश्वर शास्त्री/ प्रोफे. रामचन्द्र पाण्डेय
3. नारद संहिता – मूल लेखक – कमलाकर भट्ट।
4. प्रश्न मार्ग – अवधबिहारी त्रिपाठी।

1.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. वशिष्ठ संहिता
2. पूर्वकालामृत
3. योग यात्रा
4. सुगम ज्योतिष

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. ऋतुशुद्धि से क्या तात्पर्य है।
2. यात्राकाल में ऋतुशुद्धि का वर्णन कीजिये।
3. ऋतुशुद्धि के विभिन्न अवयवों पर प्रकाश डालिये।
4. यात्रा में ऋतुशुद्धि का महत्व बतलाइये।
5. गर्भाधान काल का शुभाशुभ निर्णय कीजिये।

इकाई – 2 यात्रा काल में दिक्शुद्धि आदि विचार

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 दिक्शुद्धि परिचय
2.4 यात्राकाल में दिक्शुद्धि आदि विचार
2.5 सारांश
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 सहायक पाठ्यसामग्री
2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -610 के द्वितीय खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – यात्रा काल में दिक्शुद्धि आदि विचार। इससे पूर्व आपने यात्रा में ऋतुशुद्धि विचार से जुड़े विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'दिक्शुद्धि' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

दिक्शुद्धि से तात्पर्य है- दिशा शुद्धि। यात्रा में किस दिशा में कब जाना है और कब नहीं। उसमें शुद्धि-अशुद्धि का ज्ञान जानना चाहिए।

आइए इस इकाई में हम लोग 'दिक्शुद्धि' के बारे में तथा उसके अन्य विभिन्न रूपों को जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- दिक्शुद्धि को परिभाषित कर सकेंगे।
- दिक्शुद्धि के अवयवों को समझा सकेंगे।
- यात्रा में दिक्दोष को बता पायेंगे।
- यात्रा में दिक्शुद्धि का निरूपण कर सकेंगे।

2.3 यात्रा काल में दिक्शुद्धि परिचय

दिक्शुद्धि से तात्पर्य है – दिशा शुद्धि। यात्रा काल में किस दिशा में गमन करना चाहिए, किसमें नहीं। इसका शुद्धि –अशुद्धि विवेक आम जनमानस के ज्ञानार्थ ऋषियों ने अपने तपोबल के आधार पर बतलाया है। सर्वप्रथम आपको दिशाओं का ज्ञान होना चाहिए। दिशायें कितनी होती है इसके बारे में आचार्य कथन है कि -

पश्चिमोत्तर मध्यस्था वायवी वायुकोणकः।
ईशानकोण ऐशानी विदिक् पूर्वोत्तरान्तरे।।

अर्थात् पूर्व दक्षिण के बीच अग्निकोण (आग्नेयी) कहलाती है, दक्षिण पश्चिम के मध्य निऋति कोण (नैऋती), पश्चिम उत्तर के मध्य वायुकोण (वायव्यी), और उत्तर पूर्व के बीच ईशान कोण (ऐशानी) विदिक् कहलाती है। इस प्रकार पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ऐशान्य, और उर्ध्व (ऊपर), अधः (नीचे) ये दश (१०) दिशायें बतलायी गयी हैं।

दिशा निर्णय -

आग्नेयी पूर्वदिग्ज्ञेया दक्षिणादिक् च नैऋती।
वायवी पश्चिम दिक् स्यादैशानी च तथोत्तरा।।

अग्निकोण की गणना पूर्व दिशा में, वायु कोण की पश्चिम दिशा में, नैऋत कोण की दक्षिण दिशा में, ईशानकोण की उत्तर दिशा में गणना होती है।

अथ दिशाशूल

नैव पूर्वदिशं गच्छेत् ज्येष्ठायां शनि-सोमयोः।
तथैव दक्षिणा-माशां नैवाजपदभे गुरौ।।
पश्चिमाशां ब्रजत्रैव रोहिण्यां रवि-शुक्रयोः।
कुजे-बुधेऽर्यमर्क्षे च नो ब्रजेदुत्तरां दिशम्।।

ज्येष्ठा नक्षत्र शनि और सोमवार में पूर्व दिशा न जाय, पूर्वभाद्रपदा और गुरुवार में दक्षिण दिशा न जाय, रोहिणी और रवि शुक्रवार में पश्चिम न जाय, उत्तराफाल्गुनी और मंगल बुधवार में उत्तर दिशा न जाय।

दिक्शूलपरिहार

रविवारे घृतं भुक्त्वा सोमवारे पयस्तथा।
गुडं मंगलवारे तु बुधवारे तिलानपि।।8।।
बृहस्पतौ दधि प्राश्य शुक्रवारे यवाँस्तथा।
माषान् भुक्त्वा शनौ गच्छेत् शूलदोषोपशान्तये।।

रविवार में घृत, सोम में दूध, मंगल में गुड़, बुध में तिल, बृहस्पति में दही, शुक्र में जब, शनिवार में उड़द आहार करके यात्रा करै तो शूल का दोष नहीं होता है।

दिशा, वार तथा नक्षत्र दोहद

यात्रा आदि सभी कार्यों में निमित्त, शकुन, लग्न एवं ग्रहयोग की अपेक्षा भी मनोजय अर्थात् मन को वश में तथा प्रसन्न रखना प्रबल है। इसलिए मनस्वी पुरुषों के लिए यत्पूर्वक फलसिद्धि में मन की प्रसन्नता ही प्रधान कारण होता है। मन के प्रसन्न होने पर जो कार्य किया जाता है, वह सफल होता है। जैसा कि नारदपुराण में कहा गया है-

निमित्तशकुनादिभ्यः प्रधानं हि मनोदयः।

तस्मान्मनस्विनां यत्नात्फलहेतुर्मनोजय।।

जिसे जिस वस्तु की विशेष चाह होती है, जिसकी प्राप्ति से मन प्रसन्न हो जाता है, वह उसका 'दोहद' कहलाता है। पूर्व दिशा की अधिष्ठात्री देवी चाहती है कि लोग घृतमिश्रित अन्न खायँ। रविवार का अधिपति चाहता है कि लोग रसाला (सिखरन-मिसिरी और मसाला मिला हुआ दही) खायँ। इसी प्रकार अन्यवारादि में भी जानना चाहिए। दोहद भक्षण करने से उस वार आदि का दोष नष्ट हो जाता है। इसलिए नारदपुराण में दिशा, वार तथा नक्षत्र आदि का दोहद बतलाते हुए कहा गया है कि यदि राजा घृतमिश्रित अन्न खाकर पूर्व दिशा की यात्रा करे, तिलचूर्ण मिलाया हुआ अन्न खाकर दक्षिण दिशा को जाय और घृतमिश्रित खीर खाकर उत्तर दिशा की यात्रा करे, तो निश्चय ही वह शत्रुओं पर विजय पाता है।

घृतान्नं तिलपिष्टान्नं मत्स्यानां घृतपायसम्।
प्रागादिक्रमशो भुक्त्वा याति राजा जयत्यरीन्।।

इसी प्रकार रविवार को सज्जिका, मिसिरी और मसाला मिला हुआ दही, सोमवार को खीर, मंगलवार को काँजी, बुधवार को दूध, गुरुवार को दही, शुक्रवार को दूध तथा शनिवार को तिल और भात खाकर यात्रा करे, तो शत्रुओं को जीत लेता हैं।

सज्जिका परमान्नं कांचकं च पयो दधि।
क्षीरं तिलोदनं भुक्त्वा भानुवारादिषु क्रमात्।।

नक्षत्र दोहद बतलाते हुए वहाँ कहा गया है कि अश्विनी मे कुल्मा... (उडद का एक भेद), भरणी में तिल, कृत्तिका में उड़द, रोहिणी में गाय व दही, मृगशिरा में गाय का घी, आद्रा में गाय का दूध, आश्लेषा में खीर, मघा ... नीलकण्ड का दर्शन, हस्त में षाष्टिक्य (साठी धान्य) के चावल का भात, चित्रा ... प्रियंगु (कँगनी), स्वाती में अपूप (मालपूवा), अनुराधा में फल (आम, केला आदि), उत्तराषाढ़ में शाल्य (अगहनी धान्य का चावल), अभिजित में हविष्य श्रवण में कृशरान्न (खिचड़ी), धनिष्ठा में मूँग, शतभिषा में जौ का आटा, उत्तरभाद्रपद में खिचड़ी तथा रेवती में दही-भात खाकर राजा यदि हाथी, घोड़े, रथ या नरयान (पालकी) पर बैठकर यात्रा करे, तो वह शत्रुओं पर विजय पाता है और उसका अभीष्ट सिद्ध होता है।

अथ तारा विचार

जन्मभाद्दिनभं यावत् संख्यैव नवतष्टिता।

तारा तत्राद्यपंचाद्रित्रिसंख्या न शुभप्रदाः।।

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसमें नौ का भाग देने से जो शेष बचे वही तारा होती है। उनमें 1, 3, 5, 7, वीं तारायें शुभ नहीं होतीं अर्थात् 2, 4, 6, 8, 9, वीं तारायें शुभ हैं।।

उदाहरण-जैसे बाबू ''शिवशंकर'' चौधरी को पुनर्वसु नक्षत्र में पश्चिम दिशा की यात्रा करनी है तो यहाँ नाम के आद्य अक्षर (शि) के अनुसार जन्मनक्षत्र शतभिषा हुआ, इसलिए शतभिषा से दिन के नक्षत्र (पुनर्वसु) तक गिनने से 11 हुए इनमें 9 का भाग देने से 2 बचा अर्थात् दूसरी तारा हुई दूसरी शुभ है इसी प्रकार और भी समझना।

अथ तारा नाम

जन्माख्य सम्पद्-विपदः क्षेमप्रत्यरि-साधकाः।
वध-मैत्रा-तिमैत्रा-ख्यास्तारा नामसदृक्फलाः।।

जन्म, सम्पत् विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र, ये तारायें अपने 2 नाम तुल्य फल देती हैं।

विशेष

प्रथमे च द्वितीये च पर्यये प्रत्यरिः शुभः।
जन्मतारा विवाहादौ मांगल्ये च शुभा स्मृता।।

प्रथम और द्वितीय आवृत्ति की प्रत्यरि 5वीं तारा शुभ है, और जन्म की तारा तीनों आवृत्ति की विवाहादि शुभ कार्य में शुभ हैं।

दुष्ट तारा की शान्ति

प्रत्यरौ लवणं दद्यात् शाकं दद्यात् त्रिजन्मसु।
गुडं विपत्तितारायां वधे च तिलकांचनम्।।

(आवश्यक कार्य में) प्रत्यरि (5) तारा में लवण दान करै, जन्म (1) तारा में शाक, विपत् (3) तारा में गुड़, और बध (7) तारा में तिल और सुवर्ण दान करै तो शुभ होता है।

अथ चन्द्रविचार

जन्मराशिं समारभ्य या संख्या चन्द्रभावधिः।
चन्द्रस्तत्संख्यको ज्ञेयस्तथा च तत्फलं वदेत्।।

जन्मराशि से इष्ट दिन की चन्द्र राशि पर्यन्त गिनने से जो संख्या हो तत्संख्यक चन्द्रमा समझना और तदनुसार उसका फल कहना।

अथ चन्द्रफल

आद्ये चन्द्रे शुभं ज्ञेयं मनस्तोषं द्वितीयके।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः।।

पंचमे ज्ञानवृद्धिः स्यात् षष्ठे धान्यधनागमः।
सप्तमे राजसम्मानमष्टमे प्राणसंशयः।।
नवमे धर्मलाभः स्यात् सिद्धिस्तु दशमे भवेत्।
एकादशे जयो नित्यं द्वादशे सर्वथा क्षतिः।।

1 प्रथम चन्द्र में शुभ, 2 में मानस तुष्ट, 3 में धन सम्पत्ति, 4 में कलह (लड़ाई), 5 में ज्ञान की वृद्धि, 6 में धन धान्य प्राप्ति, 7 में राजा से सम्मान, 8 में प्राणसंशय, 9 में धर्मलाभ, 10 में सिद्धि, 11 में जय लाभ और 12वें चन्द्रमा में सर्वथा हानि होती है।

चन्द्रमा जानने का उदाहरण-जैसे बाबू ''जगन्नाथ'' चौधरी को रोहिणी नक्षत्र वृषराशि के चन्द्रमा में पूर्व दिशा की यात्रा करनी है तो नामाद्यक्षर (ज) के अनुसार जन्मराशि मकर हुई मकर में इष्ट दिन के वृष पर्यन्त गिनने से 5 संख्या हुई तो 5वां चन्द्रमा सिद्ध हुआ पांचवां चन्द्रमा का फल ज्ञान की वृद्धि है इसलिए शुक्लपक्ष में पांचवां चन्द्रमा शुभ हुआ ऐसे ही सर्वत्र जानना।

विशेष

कृष्णपक्षे द्वितीयस्तु पंचमो नवमोऽशुभः।
कृष्णे बलवती तारा शुक्ले पक्षे बली शशी।।

कृष्ण पक्ष में 2, 5, 9वें चन्द्र अशुभ है। कृष्ण पक्ष में तारा बलवती होती है और शुक्लपक्ष में चन्द्रमा बली होता है।

राशिवश से पूर्वादि दिशाओं में चन्द्रमवास

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषे सुतायां मकरे च याम्ये।
कुम्भे तुलायां मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीनेषु तथोत्तरायाम्।।
मेष सिंह धनु पूरब चन्द्र, दक्षिण कन्या वृष मकरन्द।
घट तुल मिथुन पश्चिमाधीन, उत्तर कर्कट वृश्चिक मीन।।

चन्द्रमा का वर्ण और फल

अलौ-मेष-सिंहेऽरुणोयुद्धकारी-सितोगोवणिकर्कटर्क्षेषु सिद्धिः।
धनु-मींन युग्मेषु पीतःशशी श्रीर्धटस्त्रीमृगाख्येषु कृष्णोभयं च।।

मेष, सिंह, वृश्चिक में चन्द्रमा अरुण (लाल) वर्ण और युद्ध कारक होते हैं, वृष, कर्क तुला में स्वेत वर्ण और सिद्धिदायक होते हैं मिथुन, धन मीन में पीत, वर्ण और लाभदायक होते हैं तथा कन्या मकर कुम्भ में कृष्ण वर्ण और भयकारक होते है।

सम्मुख आदि चन्द्र का फल

संमुखे चार्थलाभः स्पाद् दक्षिणे सुखसंपदः।
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षतिः।।

सम्मुख चन्द्रमा में धनलाभ, दक्षिण (दाहिने) भाग में सुख और सम्पत्ति, पृष्ठ दिशा के चन्द्रमा में शोक और सन्ताप और वाम चन्द्र में धनक्षति होती है।

अथ घात-चन्द्र-तिथि-वार-नक्षत्र

जन्मेन्दु-नन्दार्क-मघाश्चमेषे वृषे शनिः पंचम-हस्त-पूर्णाः।
स्वाती च युग्मे नवचन्द्रभद्राः कर्केऽनुराधा-बुध-युग्म-भद्राः।।
सिंहे जया षड्विजश्च मूलं पूर्णा-शनिर्दिक्-श्रवणः स्त्रियां च।
गुरु-त्रि-रिक्ताःशतभं तुलायां नन्दालिके रेवती-सप्त-शुक्राः।।
चापे चतुःशुक्र-जया-भरण्यो मृगेऽष्टमो रोहिणि भौम-रिक्ताः।
कुम्भे जयार्द्रा गुरु शम्भु घातो झषे भृगुश्चान्त्य भुजंगपूर्णाः।।

प्रथम चन्द्र, नन्दातिथि, रविवार, मघानक्षत्र ये भेष राशि के घातक हैं। इसी प्रकार वृष राश्यादिके घातचन्द्र आदि समझना स्पष्टार्थ-नीचे चक्र देखें-

अथ स्त्रीघातचन्द्र

मही-नाग-शैलांक-वेदाग्नि-तर्काः कराशाशिवाः पाण्डवाश्चित्रभानुः।
कुरंगीदृशां घातचन्द्रास्त्व-जादेर्नृनार्योः समं घात तिथ्यादिकं च।।

मेष आदि राशिवाली स्त्री के क्रम से 1, 8, 7, 9, 4, 3, 6, 2, 10, 11, 5, 12, ये घात चन्द्र होते हैं तथा तिथि, वार नक्षत्र ये पुरुष स्त्री के समान ही घातक होते हैं।

विशेष

तीर्थ-यात्रा-विवाहान्नप्राशनो - पनयादिषु।

सर्वमांगल्यकार्येषु घातचन्द्रं न चिन्तयेत्।।

तीर्थयात्रा विवाह अन्नप्राशन उपनयन, आदि सभी मंगलकार्य में घातचन्द्र का दोष नहीं है।

युद्धै चैव विवादे च कुमारी पूजने तथा।

राजसेवाप्रयाणादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत्।।

युद्ध में विवाद में कुमारी पूजन में राजसेवा में तथा यात्रादि में घातचन्द्र वर्जित है।

अथ दुष्टचन्द्रादि शान्ति

चन्द्रे शंख1 च तारासु2 लवणं तण्डुलास्तिथौ।

धान्यं दुष्टर्क्षवारे च दद्याल्लग्ने तिलांस्तथा।।

दुष्टचन्द्र में शंख, दुष्टतारा में लवण, अशुभ तिथि मेंर चावल तथा अशुभ नक्षत्र और वार में धान्य और अनिष्ट लग्न में तिल दान करके आवश्यक कार्य करे।

अथ योगिनीवास

पूर्वस्यां योगिनी ज्ञेया नवभ्यां प्रतिपद्यपि।

अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तथैव च।।

त्रयोदश्यां च पंचम्यां दक्षिणस्यां शिवा स्मृता।

द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैऋत्यां चैव योगिनी।

चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी।

सप्तम्यां पूर्णिमायां च वायव्यां पार्वती समृता।।

दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवप्रिया।

ऐशान्यां च तथाऽष्टम्यां दर्शे च योगिनी स्मृता।।

प्रतिपदा और नवमी में पूर्व दिशा में, 3, 11 में अग्निकोण में, 5, 13 तिथि में दक्षिण में, 12, 4 में नैऋतकोण में, 14, 6 में पश्चिम में पूर्णिमा, सप्तमी में वायुकोण में, 10-2 में उत्तर में, और अष्टमी अमावस्या में ईशानकोण में योगिनी का वास है।

अथ योगिनीफल

सुखदा योगिनी वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।

दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा।।

यात्रा में वाम भाग में योगिनी सुख देती है पृष्ठभाग में वांछित पदार्थ देती है। दाहिनें योगिनी पड़े तो धन को नाश करती है, संमुख पड़े तो मरण देती है।

अथकालवास

शनौ शुक्रे गुरौ ज्ञे च भौमे सोमे रवौ क्रमात्।
पूर्वादिषु दिशास्वत्र कालवासे निगद्यते।।

शनि में पूर्व में, शुक्र में अग्निकोण में, बृहस्पति में दक्षिण, बुध में नैऋत कोण, मंगल में पश्चिम, सोम में वायुकोण और रविवार में उत्तर दिशा में काल रहता है।

अथ राहुनिवास

धनुरलिमकरार्के राहुरास्ते च पूर्वे, सघटसफरमेषे दक्षिणे दिग्विभागे।
वृषमिथुनकुलीरे पश्चिमस्थश्च कालो, हरियुवतितुलायामुत्तरे सैंहिकेयः।।

वृश्चिक धन मकर के सूर्य में पूर्व, कुम्भ मीन मेष के सूर्य में दक्षिण, वृष मिथुन कर्क के सूर्य में पश्चिम तथा सिंह कन्या तुला के सूर्य में उत्तर दिशा में राहु वास (काल) रहता है।

सम्मुखे दक्षिणे राहौ स्त्री यात्रां परिवर्जयेत्।
गृहारम्भप्रवेशौ च सम्मुखे चैव वर्जयेत्।।

सम्मुख दक्षिण राहु में स्त्री यात्रा न करै और गृहारम्भ गृह प्रवेश केवल सम्मुख राहु (काल) में त्याग करै।

यात्रा में शुभ नक्षत्र

अश्विनी रेवती ज्येष्ठा पुष्यो हस्तः पुनर्वसुः।
मैत्रं मृगशिरो मूलं यात्रायामुत्तमाः स्मृताः।।

अश्विनी, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त, पुनवर्सु, अनुराधा, मृगशिरा, मूल ये यात्रा में उत्तम है।

यात्रा में अशुभ नक्षत्र

भरणी कृत्तिका ऽश्लेषा विशाखा चोत्तरात्रयम्।
मघाऽऽर्द्रा चाशुभा ज्ञेयास्तथा चान्याश्च मध्यमाः।।

भरणी, कृत्तिका, श्लेषा, विशाखा, तीनों उत्तरा, मघा, आर्द्रा, ये यात्रा में अशुभ है। और उपरोक्त से शेष मध्यम है।

अथ सर्वदिग्गमनार्ह नक्षत्र

कराश्विनीचान्द्रघनिष्ठमैत्रैः पौष्णामराचार्य चतुभुजैश्च।
प्रयाति सर्वां ककुभं मनस्वी नरः कृतार्थो गृहमेति भूयः।।

हस्त, अश्विनी, मृगशिरा, घनिष्ठा, अनुराधा, रेवती, पुष्य, श्रवण इन सर्वदिग्द्वार नक्षत्रों में सब दिशाओं में जाने से मनुष्य कृतकार्य होकर सकुशल घर आता है।

यात्रा में विहित लग्न

कन्यायां मिथुने लग्ने मकरे च तुलाधरे।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनंच विचारयेत्।।

कन्या, मिथुन मकर तुला इन लग्नों में चन्द्रमा का बल देखकर यात्रा करै और शकुन विचार करे।

यात्रा में वर्ज्य

जन्मतारेष्टमे चन्द्रे संक्रान्तौ सूर्यगे विधौ।
भद्रागण्डान्तरिक्तासु षष्ठ्यां नैव व्रजेत्क्वचित्।।
द्वादश्यामपि चाष्टम्यां न गच्छेत्प्रस्थितोऽपि सन्।
जन्ममासे न गन्तव्यं राज्ञा विजयमिच्छता।।

जन्मतारा, अष्टम चन्द्र, संक्रान्ति दिन (उपलक्षण से मासांत और मासादि दिन) अमावस्या, भद्रा, गण्डान्त, रिक्ता और षष्ठी में कदापि यात्रा न करै, तथा द्वादशी अष्टमी और जन्म मास में प्रस्थान करने पर भी विजय चाहने वाला यात्रा न करै।

लग्नशुद्धि

केन्द्रत्रिकोणद्विगताश्च यौम्यास्तृतीयलाभारिगताश्च पापाः।
एवं यदि स्याद् गमने नरस्य तदार्थसिद्धिः पुनरागमश्च।।

शुभग्रह केन्द्र (1/4/7/10) त्रिकोण (5/9) और 2 इन स्थानों में हो और पापग्रह 3, 11, 6, इन स्थानों में हो तो ऐसे लग्न में यात्रा करने से अर्थसिद्धि सहित भवन में सकुशल आता है।

अथ सर्वांकज्ञान

तिथिं वारंच नक्षत्रमेकीकृत्य त्रिधा पुनः।
द्वित्रि-चतुर्भिः गुणितं रस-सप्ताष्ट-भाजितम्।।
आदि शून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये दरिद्रता।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वांकी विजयी भवेत्।।

शुल्कपक्षकी प्रतिपदा से तिथि संख्या, रव्यादि-दिन संख्या और अश्विनी से नक्षत्र संख्या जो हो सबके योग करके 3 जगह धरै और क्रम से 2, 3, 4 से गुणा करके 6, 7, 8 से भाग देने से प्रथम स्थान में शून्य हो तो हानि, मध्य में शून्य हो तो दरिद्रता, अन्त्य में शून्य बचे तो मृत्यु होती है और तीनों जगह अंक बचे तो विजयी होता है यह युद्धयात्रा में विचार करना चाहिए।

कुम्भकुम्भांषकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः।
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे।।

कुम्भ लग्न और कुम्भ के नवांश यात्रा में अवश्य त्याग करै क्योंकि उसमें यात्रा करने से पद पद में अर्थनाश होता है।

त्र्यहं क्षीरं च पंचाहं क्षौरं सप्तदिनं रतम्।
वर्ज्यं यात्रादिनात् पूर्वमशक्तस्तद्दिनेऽपि च।।

यात्रा दिन से तीन दिन पूर्व दूध, 5 दिन पूर्व क्षौर और सात दिन पूर्व मैथुन त्याग करै ऐसा न हो सके तो यात्रा दिन में तो अवश्य त्याग करे।

सम्मुखे दक्षिणे शुक्रे युद्धयात्रां विवर्जयेत्।
रेवत्यादेर्मृगं यावदन्धः शुक्रो न दोषकृत्।।

सम्मुख और दक्षिण शुक्र में युद्धयात्रा न करे, परंच रेवती से मृगशिर पर्यन्त शुक्र अन्ध रहते हैं उनमें सम्मुख शुक्र दोष कारक नहीं होते हैं।।

यात्रा में प्रशस्त लग्न

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता यात्रार्थदात्री जयकारिणी च।
हानिं विनाशं रिपुतो भयं च कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने।।

दिग्द्वार राशि (''मेष सिंह धनु पूर्व चन्द्र'' इत्यादि) लग्न में यात्रा प्रशस्त है और धन जय को देने वाली होती है और पृष्ठ लग्न में (जैसे मेष लग्न में पश्चिम दिशा जाने में) हानि, धननाश और शत्रु से भय होता है।

समयफल

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना।
विनोत्तरं निशीथः स्याद्याने याम्यां विनाऽभिजित्।।

उषः काल में पूर्व दिशा में न जाय, तथा गोधूलि में पश्चिम न जाय, अर्धरात्रि में उत्तर न जाय और अभिजित (मध्याह) में दक्षिण न जाय।

सम्मुखस्थः शशी हन्ति दोषं तिथिभवारजम्।
सर्वे दोषा विनश्यन्ति मनश्शुद्धिर्यदा नृणाम्।।

यदि चन्द्रमा सम्मुख रहे तो तिथि नक्षत्र वार सम्बन्धी सब दोष नाश हो जाते है। और यदि मनःशुद्धि हो तो सब दोषों का नाश होता है।

उपरोक्त विषय का विचार

पुरात् पुरे यदैकस्मिन् दिने यात्राप्रवेशकौ।
तदा तु योगिनीशूलप्रतिशुक्रान्न चिन्तयेत्।।

यदि एक ही दिन में अपने स्थान से यात्रा करके गन्तव्य स्थान में पहुँच सके तो दिक्शुल योगिनी संमुख शुक्र आदि का विचार नहीं करना चाहिए।

सर्वारम्भ लग्नशुद्धि

सर्वकर्माणि कार्याणि शुभे लग्ने शुभांशके।
त्रिलाभारिगतैः पापैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः।।

शुभ राशि के लग्न में शुभ राशि के नवांश में पापग्रह 3, 6, 11 स्थान में, तथा शुभग्रह 1, 4, 7, 10, 5, 9 स्थान में हो तो सब कार्य का आरम्भ करना शुभ है।

अथ सर्वारम्भमुहूर्त

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चन्द्रे त्रिषड् दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्धति।।

जन्मराशि या जन्मलग्न से उपचय (3, 6, 10, 11) राशि लग्न में हो और द्वादश तथा अष्टमस्थान शुद्ध (ग्रहवर्जित) हो और चन्द्रमा 3, 6, 10, 11 इन स्थान में हो तो सभी कार्य का आरम्भ शुभ होता है।

बोध प्रश्न -

1. दिशाओं की संख्या कितनी कही गयी है।
   क. १० ख. ४ ग.१६ घ.१८
2. रविवार को किस दिशा में दिशाशूल होता है।
   क. उत्तर ख.दक्षिण ग. पश्चिम घ. पूर्व
3. मंगलवार का दिशाशूल परिहार किसके सेवन से होता है।
   क. गूड़ ख. दूध ग. तिल घ. घी
4. उर्ध्व एवं अधः ये किसके प्रकार है।
   क. दिक् के ख.छाया के ग. अग्रा के घ. चरखण्ड के

5. निम्न में उपचन स्थान कौन सा है।

क. २,५,८,११ ख. ३,६,१०,११ ग. १,४,७,१० घ. कोई नहीं

6. उत्तर दिशा की यात्रा किस वार में वर्जित है।

क. मंगल ख. बुध ग. दोनों घ. दोनों नहीं

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि दिक्शुद्धि से तात्पर्य है – दिशा शुद्धि। यात्रा काल में किस दिशा में गमन करना चाहिए, किसमें नहीं। इसका शुद्धि –अशुद्धि विवेक आम जनमानस के ज्ञानार्थ ऋषियों ने अपने तपोबल के आधार पर बतलाया है।

पूर्व दक्षिण के बीच अग्निकोण (आग्नेयी) कहलाती है, दक्षिण पश्चिम के मध्य निऋति कोण (नैऋती), पश्चिम उत्तर के मध्य वायुकोण (वायव्यी), और उत्तर पूर्व के बीच ईशान कोण (ऐशानी) विदिक् कहलाती है। इस प्रकार पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ऐशान्य, और उर्ध्व (ऊपर), अधः (नीचे) ये दश (१०) दिशायें बतलायी गयी हैं। अग्निकोण की गणना पूर्व दिशा में, वायु कोण की पश्चिम दिशा में, नैऋत कोण की दक्षिण दिशा में, ईशानकोण की उत्तर दिशा में गणना होती है। ज्येष्ठा नक्षत्र शनि और सोमवार में पूर्व दिशा न जाय, पूर्वभाद्रपदा और गुरुवार में दक्षिण दिशा न जाय, रोहिणी और रवि शुक्रवार में पश्चिम न जाय, उत्तराफाल्गुनी और मंगल बुधवार में उत्तर दिशा न जाय। दिशाशूल का परिहार बताते हुए आचार्य कहते है कि रविवार में घृत, सोम में दूध, मंगल में गुड़, बुध में तिल, बृहस्पति में दही, शुक्र में जब, शनिवार में उड़द आहार करके यात्रा करै तो शूल का दोष नहीं होता है। यात्रा आदि सभी कार्यों में निमित्त, शकुन, लग्न एवं ग्रहयोग की अपेक्षा भी मनोजय अर्थात् मन को वश में तथा प्रसन्न रखना प्रबल है। इसलिए मनस्वी पुरुषों के लिए यत्पूर्वक फलसिद्धि में मन की प्रसन्नता ही प्रधान कारण होता है। मन के प्रसन्न होने पर जो कार्य किया जाता है, वह सफल होता है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

दिक् – दिशा। ये १० होती है।

अग्नि कोण - पूर्व एवं दक्षिण का कोण

वायव्य कोण – उत्तर एवं पश्चिम का कोण

उर्ध्व – उपर

अध: – नीचे

विदिशा – चार कोण को विदिशा के रूप में जानते है।।

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ग
3. क
4. क
5. ख
6. ग

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्तचिन्तामणि – यात्राप्रकरण
2. नारद संहिता – यात्राध्याय
3. प्रश्नमार्ग – यात्राप्रकरण
4. वृहद्वकहड़ाचक्र – अवधबिहारी त्रिपाठी।

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. वशिष्ठ संहिता
2. भृगु संहिता
3. पूर्वकालामृत
4. योगयात्रा

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. दिक्शुद्धि से आप क्या समझते है।
2. यात्रा काल में दिशा शुद्धि का ज्ञान कैसे करते हैं।
3. दिशाशूल का विचार कैसे किया जाता है।
4. दिशाशुद्धि का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई - 3 त्रिविधयात्रा में शुद्धि विचार

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 त्रिविध यात्रा परिचय
3.4 त्रिविध यात्रा में शुद्धि विचार
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-610 के द्वितीय खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – त्रिविध यात्रा में शुद्धि विचार। इससे पूर्व आपने यात्रा में शुद्धि से जुड़े विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'त्रिविध यात्रा में शुद्धि' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

कतिपय आचार्यों द्वारा यात्रा के त्रिविध भेद बतलाये गये हैं। उन त्रिविध यात्राओं में शुद्धि का विचार कैसे करते है। इसका वर्णन इस इकाई में किया जा रहा है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'त्रिविध यात्रा में शुद्धि' के बारे में जानने का प्रयास करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- त्रिविध यात्रा को परिभाषित कर सकेंगे।
- त्रिविध यात्रा में शुद्धि के अवयवों को समझा सकेंगे।
- 'त्रिविध यात्रा में लगने वाले शुद्धि-अशुद्धि के कारणों को समझ लेंगे।
- यात्रा में कृत्याकृत्य को जान लेंगे।

3.3 त्रिविध यात्रा में शुद्धि विचार

त्रिविध यात्रा से तात्पर्य है – तीन प्रकार से की गयी यात्रा। पूर्व के इकाईयों में आपने दो मुख्य यात्रा के प्रकार सामान्य, विजयपरक यात्रा का अध्ययन कर लिया है। तीसरा यात्रा प्रयोजन के अनुसार होता है। जिस कार्य के उद्देश्य से यात्रा की जा रही हो, उसमें सफलता मिलेगी या नहीं। यह होता है प्रयोजनोद्देश्य यात्रा। यात्रा में मुख्यत: तिथि, वार, नक्षत्र एवं लग्न की शुद्धि देखी जाती है। पुन: उनका विविध योगों के आधार पर यात्रा के लिए मार्ग का विधान बतलाया गया है। त्रयंक और पंचकशुद्धि से सम्बन्धित यात्रा का भी उल्लेख पूर्वकालामृत में मिलता है। आइए सर्वप्रथम यात्रा करने की विधि, और प्रस्थान विधि को समझते है। पुन: त्रयंक और पंचकशुद्धि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

यात्रा करने की विधि

नारदपुराण में यात्रा करने की विधि का निर्देश करते हुए कहा गया है कि प्रज्वलित अग्नि में

तिलों से हवन करके जिस दिशा में जाना हो, उस दिशा के स्वामी को उन्हीं के समान रंगवाले वस्त्र, गन्ध, तथा पुष्प आदि उपचार अर्पण करके उन दिक्पालोंर के मन्त्रों द्वारा विधिपूर्वक पूजन करे। फिर अपने इष्टदेव और ब्राहमणों को प्रणाम करके ब्राहमणों से आशीर्वाद लेकर राजा को यात्रा करनी चाहिए।

हुताशनं तिलैर्हुत्वा पूजयेत् दिगीश्वरम्।
प्रणम्य देवभूदेवानाशीर्वादैर्नृपो व्रजेत्।।
यद्वर्णवस्त्रगन्धाद्यैस्तन्मन्त्रेण विधानतः।।

वहाँ यात्रा के समय दिक्पालों के स्वरूप औ ध्यान की विधि भी दी गयी। विशेष जिज्ञासु जन नारदपुराण का अवलोकन करें।

प्रस्थान रखने की विधि

नारदपुराण में बतलाया गया है कि यदि किसी आवश्यक कार्यवश निश्चित यात्रा-लग्न में राजा स्वयं न जा सके, तो छत्र, ध्वजा, शस्त्र, अस्त्र या वाहन में से किसी एक वस्तु को यात्रा के निर्धारित समय में घर से निकाल कर जिस दिशा में जाना हो, उसी दिशा की ओर दूर रखवा दे। अपने स्थान से निर्गम स्थान (प्रस्थान रखने की जगह) 200 दण्ड (चार हाथ की लग्गी) से दूर होना उचित है। अथवा चालीस या कम से कम बारह दण्डउ की दूरी होनी आवश्यक है। राजा स्वयं प्रस्तुत होकर जाय तो, किसी एक स्थान में सात दिन न ठहरे। अन्य (राज-मन्त्री तथा साधारण) जन भी प्रस्थान करके एक स्थान में छः या पाँच दिन न ठहरे। यदि इससे अधिक ठहरना पड़े, तो उसके बाद दूसरा शुभ मुहूर्त्त और
उत्तम लग्न विचार कर यात्रा करे।

पूर्वकालामृत में वर्णित यात्रा का त्रयंक स्वरूप –

यात्रावारभवासरांश्च मिलितान् स्वस्वादितस्तान् क्रमात्।
कृत्वा द्वित्रिचतुर्गुणान्प्रविभजेत्सप्ताष्टषडिभः क्रमात्।।
शून्येषु त्रिषु रोगभीतिमरणान्याशु प्रयातुः क्रमा-
च्छेषेषु त्रिषु राज्यरत्नपृथिवीवर्दद्यात्तु त्रयंकस्त्वयम्।।

अर्थात् यात्राकालिक वार नक्षत्र और तिथि को अपने-अपने आदि से (अर्थात् रवि से इष्टवार तक, अश्विनी से इष्ट नक्षत्र तक तथा शुक्ल प्रतिपदा से इष्ट तिथि तक) गणना करके पृथक्-पृथक् तीन स्थानों में रखना चाहिए। तीनों संख्याओं को क्रमशः २,३,४ से गुणाकर गुणनफल को पृथक्-पृथक्

क्रमश: ७,८, और ६ से भाग देना चाहिए। यदि तीनों स्थानों में शेष शून्य बचे तो शीघ्र ही यात्रा में रोग, भय और मृत्यु होती हे। यदि तीनों स्थानों में शेष अंक बचे तो क्रमश: राज्य, रत्न और पृथ्वी का लाभ होता है। इसी को त्रयंक मुहूर्त्त कहते हैं।

यात्रापंचक शुद्धि स्वरूप –

यात्रावारविलग्नधिष्ण्यदिवसान् स्वस्वादितस्सर्वतो
राशीकृत्य दिनार्कदिग्वसुजलेष्वेकैक संख्यां क्रमात्।
क्षिप्त्वा प्राग्धृतमेव तं प्रविभजेदंकैश्च सर्वं ध्रुवं
शेष: प्राक्तन् पंचके बहुधनं शून्ये फलं वक्ष्यते।।

अंगीकारार्थ स्वरूप –

व्याध्यग्निक्षितिपालोरमृतितोभीतिश्च शून्ये क्रमा
देतत्पंचदशादियोजितफलं मृत्योर्भयं सर्वदा।
चोरवधिभयं निशासु दिवसे भूपाग्नि भीर्तिर्भवेद्।
यात्रापंचकशुद्धिरेव गमने संजीवनीया खलु।।

अर्थात् यात्रा समय के वार, लग्न, नक्षत्र और तिथि को अपने-अपने आरम्भ बिन्दु से गणना कर तथा सभी संख्याओं का योग कर पाँच स्थानों में रखना चाहिए। प्रत्येक स्थानों में क्रमश: १५,१२,१०,८,४ को जोड़कर प्रत्येक को ९ से भाग देना चाहिये। यदि पाँचों स्थानों में शेष बचता है तो यात्रा शुभ होती है। पाँचों स्थानों में शून्य शेष रहने पर क्रमश: फल इस प्रकार कहना चाहिए।

प्रथम स्थान में शून्य हो तो – व्याधि
दूसरे स्थान में शून्य हो तो – अग्निभय
तृतीय स्थान में शून्य हो तो – राजभय
चतुर्थ स्थान में शून्य हो तो – चोरभय
पंचम स्थान में शून्य हो तो – मृत्यु भय

होता है। इस प्रकार १५ आदि संख्याओं के योग से उत्पन्न फलों में मृत्यु भय सदैव विचारणीय होता है। चोर और व्याधि भय रात्रि में, राजभय तथा अग्निभय दिन में होता है। यात्रा में जीवन की अभिलाषा वालों को इन पंचक शुद्धियों का विचार अवश्य करना चाहिए।

इस प्रकार यात्राजनित त्रयंक और पंचक शुद्धि का निरूपण किया गया है।

यात्रा में लालाटिक योग

नारदपुराण में कहा गया है कि जिस दिशा में यात्रा करनी हो, उस दिशा का स्वामी ललाटगत

(सामने) हो, तो यात्रा करने वाला लौटकर नहीं आता है। पूर्व दिशा में यात्रा करने वाले के लग्न में यदि

सूर्य हो, तो वह ललाटगत मान जाता है। यदि शुक्र लग्न से ग्यारहवें या बारहवें स्थान में हो, तो अग्निकोण में यात्रा करने से, मंगल दशम भाव में हो, तो दक्षिण यात्रा करने से, राहु नवें और आठवें भाव मं हो, तो नैर्ऋत्यकोण की यात्रा से, शनि सप्तम भाव में हो, तो पश्चिम यात्रा से, चन्द्रमा पाँचवें या छठे भाव में हो, तो वायुकोण की यात्रा से बुध चतुर्थ भाव में हो, तो ईशान कोण की करने से ललाटगत होते हैं।

जो मनुष्य जीवन की इच्छा रखता हो, वह इस ललाटयोग को त्याग कर यात्रा करे।

द्वित्रिस्थानगतो जीव ईशान्यां वै ललाटगः।
ललाटं तु परित्यज्य जीवितेच्छुव्र्रजेन्नरः।।

वहाँ यह भी कहा गया है कि लग्न में वक्रगति ग्रह या उसके षड्वर्ग (राशि होरादि) हों, तो यात्रा करने वाले राजा की पराजय होती है। जब जिस अयन में सूर्य और चन्द्रमा दोनों हो, उस समय उस दिशा की यात्रा शुभ फल देने वाली होती है। यदि दोनों भिन्न अयन में हों, तो जिस अयन में सूर्य हो, उधन दिन में तथा जिस अयन में चन्द्रमा हो, उधन रात्रि में यात्रा शुभ होती है। अन्यथा यात्रा करने

से यात्री की पराजय होती है।

रवीन्द्वयनयोर्यातमनुकूलं शुभप्रदम्।
तदभावे दिवरात्रौ या यायाद्यातुर्वधोऽन्यथा।

यात्रा में अभिजित् मुहूर्त्त

यात्रा के लिए अभिजित् मुहूर्त्त का कथन करते हुए नारदपुराण का कहना है कि दिन का मध्यकाल = 12 बजे से एक घटी आगे और एक घटी पीछे अभीष्ट फल सिद्ध करने वाला अभिजित् मुहूत्र्त कहलाता है। यह दक्षिण दिशा की यात्रा को छोड़कर अन्य दिशाओं की यात्रा में शुभ फल देता है। इस अभिजित् मुहूर्त्त में तिथि वारादि पंचांग शुभ न हो, तो भी यात्रा में वह उत्तम फल देने

वाला होता है।

याम्यादिग्गमनं त्यक्त्वा सर्वकाष्ठासु यायिनाम्।
अभिजित् क्षणयोगोऽयमभीष्टफलसिद्धिदः।।
पंचांगशुद्धिरहिते दिवसेऽपि फलपंदः।।

यात्रा में प्रतिबन्ध

नारदपुराण में कहा गया है कि यदि घर में उत्सव, उपनयन, विवाह, प्रतिष्ठा या सूतक उपस्थित

हो, तो जीवन की इच्छा रखने वालों को बिना उत्सव को समाप्त किये यात्रा नहीं करनी चाहिए।

उत्सवोपनयोद्वाहप्रतिष्ठाशौचसूतके।
असमाप्ते न कुर्वीत यात्रां मत्र्यो जिजीविषुः।।
अप्रयाणेर स्वयं कार्या प्रेक्षया भूभुजस्तथा।
कार्यं निगमनं छत्रं ध्वजशस्त्रास्त्रवाहनैः।।
स्वस्थानान्निर्गमस्थानं दण्डानां च शतद्वयम्।
चत्वारिंशद्द्वादशैव प्रस्थितः स स्वयं गतः।।
दिनान्येकत्र न वसेत्सत्पषट् वा परो गतः।
पंचरात्रं च पुरतः पुनर्लग्नान्तरे व्रजेत्।।

वहाँ यह भी निर्देश दिया गया है किर असमय में (पौष से चैत्रपर्यन्त) बिजली चमके, मेघ की गर्जना हो या वर्षा होने लगे तथा त्रिविध (दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम) उत्पात होने लग जाय, तो राजा को सात दिन रात तक अन्य स्थानों की यात्रा नहीं करनी चाहिए।

अकालजेषु नृपतिर्विद्युद्गर्जितवृष्टिषु।
उत्पातेषु त्रिविधेषु सप्तरात्रं तु न व्रजेत्।।

यात्रा में अपशकुन

नारदपुराण के अनुसार तस्करों को यात्रा में शकुनबल से अभीष्ट सिद्धि होती है। इसलिए वहाँ यात्रा में अपशकुन का निर्देश करते हुए कहा गया है कि यात्रा के समय यदि परस्पर दो भैंसों या चूहों में लड़ाई हो, स्त्री से कलेश हो या स्त्री का मासिक धर्म हुआ हो, वस्त्र आदि शरीर से खिसक कर गिर पड़े, किसी पर क्रोध हो जाय या मुख से दुर्वचन कहा गया हो, तो उस दशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

महिषोन्दुरयोर्युद्धे कलत्रकलहार्तवे।
वस्त्रादेः स्खलिते क्रोधे दुरुक्ते न व्रजेन्नृपाः।।

इसी प्रकार नवीन वस्त्र धारण करने वाले नक्षत्रों का कथन करते हुए कहा गया है कि हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा-ये पाँच नक्षत्र तथा उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, धनिष्ठा और पुनर्वसु नक्षत्र नवीन वस्त्र धारण करने के लिए श्रेष्ठ हैं।

हस्तादिपंचऋक्षाणि उत्तरात्रयमेव च।
अश्विनी रोहिणी पुष्पा धनिष्ठा च पुनर्वसु।।
वस्त्रप्रावरणे श्रेष्ठो नक्षत्राणां गणः स्मृतः।।

मुहूर्त्त बतलाने के क्रम में नक्षत्रों के विशेष संज्ञा एवं उनमें करणीय कृत्यों का वर्णन करते हुए गरुडपुराण में कहा गया है कि कृत्तिका, भरणी, आश्लेषा, मघा, मूल, विशाखा तथा पूर्वभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ और पूर्वाफाल्गुनी इन नक्षत्रों को अधोमुखी कहा गया है। इन अधोमुखी नक्षत्रों में वापी, तडाग, सरोवर, कूप, भूमि, तृण आदि का खनन, देवालय के लिए नींवादि के खनन का शुभारम्भ, भूमि आदि गड़ी हुई धन-सम्पत्ति की खुदाई, ज्योतिश्चक्र का गणनारम्भ और सुवर्ण, रजत, पन्ना तथा अन्य धातुओं को प्राप्त करने के लिए भू-खदानों में प्रविष्ट होना आदि अन्य अधोमुखी कार्य इन अधोमुखी नक्षत्रों में करना चाहिए।

कृत्तिका भरण्यश्लेषा मघा मूलविशाखयोः।
त्रीणि पूर्वा तथा चैव अधोवक्त्राः प्रकीर्तिताः।।
एषु वापीतडागादिकूपभूमितृणानि च।
देवागारस्य खननं निधानखननं तथा।
गणितं ज्योतिषारम्भं खनिबिलप्रवेशनम्।।
कुर्यादधोगतान्येव अन्यानि च वृषध्वज।।

इसी प्रकार रेवती, अश्विनी, चित्रा, स्वाती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा एवं ज्येष्ठा नक्षत्र पाश्र्वमुखी हैं। इन पाश्र्वमुखी नक्षत्रों में हाथी, ऊँट, अश्व, बैल तथा भैंसे को वश में करने का उपाय करना चाहिए अर्थात् इनके नाक आदि में छेद करके छल्ला या रस्सी डालने का कार्य करना चाहिए। खेतों में बीज बोना, गमनागमन, चक्रयन्त्र (चरखी, चरखा, रहट आदि यन्त्र) अथवा रथ एवं नौका का क्रय और निर्माण उक्त पाश्र्ववर्ती नक्षत्रों में करना चाहिए और अन्य पाश्र्व कार्यों को भी इन पार्श्व

नक्षत्रों में करना चाहिए।

रेवती चाश्विनी चित्रा स्वाती हस्ता पुनर्वसू।
अनुराधा मृगो ज्येष्ठा एते पाश्र्वमुखाः स्मृताः।।
गजोष्ट्राश्वबलीवर्ददमनं महिषस्य च।
बीजानां वपनं कुर्याद्गमनागमनादिकम्।।
चक्रयन्त्ररथानां च नावादीनां प्रवाहणम्।
पाश्र्वेषु यानि कर्माणि कुर्यादेतेषु तान्यपि।।

इसी क्रम में रोहिणी, आद्र्रा, पुष्य, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, शतभिष (वारुण) तथा श्रवण-इन नौ नक्षत्रों को ऊध्र्वमुखी कहा गया है। इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक और पट्टबन्ध आदि शुभ कार्य करवाने चाहिए। ऊध्र्वमुखी अर्थात् अभ्युदय प्रदान करने वाले अन्य विशिष्ट कार्यों को भी इन नक्षत्रों में कराना प्रशस्त होता है।

रोहिणाद्र्रा तथा पुष्या धनिष्ठा चोत्तरात्रयम्।
वारुणं श्रवणं चैव नव चोध्र्वमुखाः स्मृताः।।
एषु राज्याभिषेकं च पट्टबन्धं च कारयेत्।
ऊध्र्वमुखान्युच्छितानि सर्वाण्येतेषु कारयेत्।।

इसी प्रकार शुभाशुभ तिथियों का कथन करते हुए दग्धयोग, औत्पातिक योग, विष्कुम्भ, सिद्धि आदि योगों का कथन करते हुए उसमें करणीयाकरणीय कृत्यों का कथन किया गया है।

वलक्षपक्षे प्रतिपत्यप्रयाणे भंगप्रदा वा निधनप्रदा वा।
यातुर्मनोभीष्टकरा द्वितीया सम्पूर्णयात्रा फलदा तृतीया।।

शुक्ल प्रतिपदा के दिन यात्रा करने या पूछने वाले की यात्रा भंग होती है अथवा मृत्यु होती है। द्वितीया तिथि जाने वाले के मन को अभीष्ट फल देती है। जबकि तृतीया तिथि सम्पूर्ण यात्रा को शुभ देने वाली होती है।

तिस्त्रोऽपि रिक्तास्तिथयः प्रयातुर्मृत्युप्रदाश्चार्थविनाशदा वा।
यशस्करी भूरिधनप्रदा च या पंचमी मृत्युकरी च षष्ठी।।

तीनों रिक्ता तिथियां, नवमी, एवं चतुर्दशी में यात्रा करने वाले को कलह या मृत्यु प्रदान करती हैं अथवा मान को नष्ट कर देती हैं। यश देने वाली अनेक प्रकार से धन देने वाली पंचमी तिथि होती है जबकि षष्ठी मृत्यु देने वाली होती है।

सप्तमी विजयदा तथाऽष्टमी शोकदुःखभयदामयप्रदा।

सर्वदुःखशमनी यशस्करी लाभदा च दशमी निरन्तरम्।।

सप्तमी तिथि विजय देने वाली तथा अष्टमी तिथि शोक, दुःख, भय तथा रोग देने वाली होती है। सम्पूर्ण दुःखों का शमन करने वाली यश प्रदान करने वाली तथा निरन्तर लाभ देने वाली दशमी तिथि होती है।

पशुप्रदा मानकरी सुगन्धरक्ताम्बरानेकशुभप्रदा स्यात्।
एकादशी चित्रमृगप्रभूतधान्याकराद्युत्तमवस्तुदा स्यात्।।

पशु को प्रदान करने वाली, मान देने वाली, सुगन्धित वस्तु, लाल वस्त्र तथा अनेक शुभ प्रदान करने वाली एकादशी तिथि होती है। विचित्र मृग, बहुत अधिक धान्य करने वाली, उत्तम वस्तु भी देने वाली होती है।

भूरिभूतिनाशिनी भूरिधर्महारिणी।
भूरिभीतिदायिनी द्वादशी प्रभंगदा।।

बहुत अधिक सम्पत्ति को नष्ट करने वाली, और अधिक धर्म का हरण करने वाली तथा बहुत अधिक भय को देने वाली, यात्रा को नष्ट कर देने वाली द्वादशी तिथि होती है।

त्रयोदशी सुभोगदा विपक्षपक्षनाशिनी।।
विनाशदाथ पूर्णिमा यशःक्षयं करोति वा।।

त्रयोदशी तिथि सुन्दर भोग देने वाल, विपक्ष के पक्ष को नष्ट कर देने वाली होती है जबकि पूर्णिमा तिथि विनाश देने वाली तथा यश को क्षय करने वाली होती है।

सितेतराद्यवासरो विभूतिसौख्यभोगदः।
सितेतरे जघन्यके फलप्रदाश्च वासराः।।

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तिथि विभूति और सुख देने एवं ऐश्वर्य देने वाली होती है। जबकि कृष्ण के अतिरिक्त तिथि जघन्य फल प्रदान करने वाली होती है।

सुरेज्यदैत्येज्यशशीन्दुजानां वाराश्च वर्गाः शुभदाः प्रयाणे।
आदित्यभूसूनुशनैश्चराणां वाराश्च वर्गा न शुभप्रदाः स्युः।।

बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा एवं बुध का दिन हो और इन्हीं ग्रहों का वर्ग भी हो तो यात्रा करने पर शुभ होता है। जबकि सूर्य, मंगल एवं शनिवार अथवा उनका वर्ग यात्रा में शुभ फल नहीं देते।

पौष्णद्वयादित्यकरेज्यमित्रविष्णिवन्दुवस्वाहंभानि यानि।
श्रेष्ठानि यात्रासु नवैव तानि मुक्त्वा त्रिपंचादिमसप्तभानि।।

रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, पुष्य, अनुराधा, श्रवण, मृगशिरा तथा धनिष्ठा, ये नौ नक्षत्र श्रेष्ठ हैं, अपने जन्म नक्षत्र से तीसरा, पांचवा एवं सातवां नक्षत्र छोड़कर यात्रा श्रेष्ठ शुभ देने वाली होती है।

तिस्त्रोत्तरा वारुणनैर्ऋतेन्द्रपूर्वात्रयब्राह्मदशैव भानि।
मध्यानि कष्टान्यनिलानलेशद्वित्रैवचित्राहिमघान्तकानि।।

तीनों उत्तरा, शतभिषा, मूल, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा और रोहिणी ये दस नक्षत्र यात्रा में मध्यम कहे गये हैं। जबकि कृत्तिका स्वाती, विशाखा, चित्रा, आश्लेषा, मघा तथा भरणी यात्रा में कष्ट देने वाले नक्षत्र कहे गये हैं।

पुरुहूतदिशं पुरन्दरक्रषे नेयाद्याम्यादिशं त्वजांघ्रिधिष्ण्ये।
जलनाथदिशं पितामहक्रषे शूलाख्यान्यथ सौम्ययमक्रषे।।

पूरब दिशा में ज्येष्ठा नक्षत्र में तथा दक्षिण दिशा में पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में नहीं जाना चाहिए। शतभिषा नक्षत्र, रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम दिशा में और भरणी नक्षत्र में तथा शूल नामक योग में उत्तर दिशा में यात्रा कष्टदायक होती है।

तुहिनकिरणमन्दवारे शक्रदिशं न च व्रजेद्गुरौ च याम्यायाम्।
रविसितदिने प्रतीच्यां सौम्यदिशं ज्ञारयोश्च वारशूलाः स्युः।।

सोमवार एवं शनिवार के दिन पूरब दिशा में नहीं जाना चाहिए। गुरुवार के दिन दक्षिण दिशा में नहीं जाना चाहिए। रविवार एवं शुक्रवार के दिन पश्चिम दिशा में तथा बुध मंगल को उत्तर दिशा में दिकशूल होता है।

मेषादिमीनपर्यन्तं पश्चिमादिप्रदक्षिणम्।
चन्द्रकण्टकमित्याहुर्गमनं कार्यनाशनम्।।

मेष राशि से मीन राशि तक पश्चिम आदि प्रदक्षिणा क्रम से चन्द्रमा को कंक कहा गया है। इसमें गमन करने से कार्य नष्ट होता है।

शूलाख्यानि च धिष्ण्यानि शूलसंज्ञाश्च वासराः।
यायिनां मृत्युदाः शीघ्रमथवाऽश्वादिहानिदाः।।

शूल नामक नक्षत्रों में शूल संज्ञा दी गयी है। उस वार में यात्रा करने वाली यात्री का शीघ्र ही घोड़े आदि की हानि अथवा मृत्यु हो जाती है।

पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु वह्निधिष्ण्यान्निरन्तरम्।
सप्तसप्तक्रमेणैव दिग्द्वाराख्यानि भानि वै।।

पूर्व आदि चारों दिशाओं में कृत्तिका आदि नक्षत्र क्रमशः सात-सात के क्रम से दिकद्वार के नक्षत्र कहे गये हैं।

न लंघ्यः परिघो दण्डस्त्वाग्निवायुदिगाश्रितः।
पुष्यार्काश्विनमैत्राणि सर्वदिग्द्वारकाणि च।।

परिघ एवं दण्ड नामक योगों में अग्निकोण एवं वायुकोण का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। अर्थात् यात्रा नहीं करनी चाहिए। पुष्य, हस्त, अश्विनी एवं अनुराधा सर्वदिकद्वार नक्षत्र कहे गये है।

सर्वदिक्ष्वपि यातृणां सर्वकामार्थदानि च।
पूर्वादिदिक्षु मेषाद्याः क्रमाद्दिग्द्वारराशयः।।

सम्पूर्ण दिशाओं में यात्री के लिए ये नक्षत्र सम्पूर्ण कामनाओं एवं अर्थ को देने वाले होते हैं। पूर्व आदि दिशाओं में मेष आदि के क्रम से दिकद्वार राशियां कही गयी हैं।

सर्वदिक्षु प्रशस्तोऽपि पुष्यः सर्वार्थसाधकः।
प्रतीच्यां गमने त्याज्यः सौख्यसंपदमिच्छता।।

सम्पूर्ण दिशाओं में श्रेष्ठ तथा सभी धनों का साधक पुष्य नक्षत्र कहा गया है किन्तु पश्चिम दिशा में यात्रा करने पर सुख एवं सम्पत्ति की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को पुष्य नक्षत्र का त्याग करना चाहिए।

दिग्द्वारराशयः सर्वे तद्दिग्यातुर्जयप्रदाः।
तद्वर्गाश्च तदंशाश्च लग्नाधिपस्तथाविधः।।

दिकद्वार राशियों में उनकी दिशा में जाने पर विजय मिलती है। उसके वर्ग में अथवा उनके अंश में लग्नेश भी यदि उस प्रकार से हो तो जय देने वाला होता है।

एकोऽपि चक्रगः खेटो लग्नस्थश्चारिराशिगः।
नीचस्थो वा तदंशस्थो यात्राकाले विनाशदः।।

एक भी चक्र में गया हुआ ग्रह लग्न में स्थित हो या जल राशि में, नीच स्थान में स्थित हो या उस अंश में स्थित हो तो यात्रा के समय विनाश देने वाला होता है।

यात्रायां यस्य वा शुक्रः संमुखो दक्षिणस्थितः।
करोति बहुधा नाशं बुधश्चेन्निधनप्रदः।।

यात्रा में जिसका शुक्र सामने या दक्षिण दिशा में स्थित हो तो वह अनेक प्रकार से नाश करता है। यदि बुध भी हो तो अवश्य ही मृत्यु प्रदान करता है।

दिगीश्वरा भास्करशुक्रभौमराहार्किचन्द्रज्ञसुरार्चिताः स्युः।

दिगीश्वरे यत्र ललाटसंस्थे यात्रा न कार्या न च सन्निवेशः।।

सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चन्द्रमा, बुध तथा बृहस्पति क्रमशः दिशाओं के स्वामी होते हैं। दिशा का स्वामी जहाँ ललाट भाग में स्थित हो तो उसमें यात्रा नहीं करनी चाहिए न प्रवेश करना चाहिए।

राशीनेकं द्वाविनाक्रान्तराशेरप्रादक्षिण्यान्नयसेद्दिग्विदिक्षु।
यद्दिग्राशौ लग्नगे संमुखत्वे तद्दिग्यातुर्मृत्युदस्तद्दिगीशः।।

एक राशि दो के बिना आक्रान्त राशि में प्रदक्षिण क्रम में प्रत्येक दिशाओं और कोणों में न्यास करें। यदि अग्र राशि में लग्न में गये हुए ग्रह सन्मुख हो तो उस दिशा में गमन से दिशा के स्वामी के अस्त होने पर मृत्यु होती है।

प्रयाणसमये यस्य विद्युन्नीहारवृष्टयः।
अकालजा भवन्त्येते सदा भंगकरा मृशम्।।

जिसके यात्रा के समय में बिजली, कोहरा अथवा वर्षा हो रही हो तो अकाल में हुए ये सदा यात्रा भंग करने वाले होते हैं।

शुभाशुभनिमित्तानि ह्युत्पातशकुनानि च।
यात्राकाले नृणां तेषां निधनायाधनाय च।।

शुभ-अशुभ लक्षणों का उत्पात और शकुन यात्राकाल में मनुष्यों के लिए मृत्यु देने वाले या धनरहित करने वाले होते हैं।

वस्तूनां च शुभानां च पूर्वोक्तानां च वीक्षणम्।
प्रयाणसमये यस्य तस्य भंगो भवेत्तदा।।

पूर्व में कहे गये शुभ वस्तुओं का अवलोकन करके यदि प्रस्थान किया जाय तो दुर्योग भंग हो जाते हैं।

यात्रायां शकुनं यस्य यदि प्रावेशिकं भवेत्।
शोकदुःखं भवेत्तस्य गदो भवति निश्चयात्।।

जिसकी यात्रा में शकुन प्रावेशिक हो तो शोक, दुःख उसे प्राप्त होता है अथवा निश्चित ही रोगी हो जाता है।

पूर्वं प्रवेशिकं भूत्वा पश्चात्प्रास्थानिकं भवेत्।
सुखेन सिद्ध्यते कार्यं विपरीतं प्रवेशने।।

पहले प्रवेशिक होकर पुनः प्रास्थानिक होना चाहिए। ऐसा करने पर विपरीत योग में भी

प्रवेश करने पर कार्य आसानी से सिद्ध हो जाता है।

केन्द्रत्रिकोणगैः सौम्यैस्त्रिभवारिगतैः परैः।

अलग्नरिपुचन्द्रेण यात्राभीष्टफलप्रदा।

केन्द्र और त्रिकोण में गये हुए सौम्य ग्रह अथवा तीसरे, छठें या ग्यारहवे में स्थित में हो तो लग्न को छोड़ करके चन्द्रमा शत्रु स्थान में हो तो यात्रा मनवांछित फल देने वाली होती है।

यात्रा लग्नस्य केन्द्रेषु शून्येषु शुभखेचरैः।

निष्फलं गमनं तस्य जारजातस्य पिण्डवत्।।

यात्रा लग्न से यदि केन्द्र में कोई भी शुभग्रह न हो अथवा केन्द्र शुभग्रहों से रहित हो तो जैसे जार-जात का पिण्ड होता है उसी प्रकार यात्रा निष्फल हो जाती है।

त्रिकोणे द्वित्रिराशौ वा शून्ये यस्य शुभग्रहैः।

निष्फला तस्य यात्रा स्यान्मिथ्यावादस्य वाग्यथा।।

जिस यात्री के त्रिकोण या दो-तीन राशियों में शुभग्रह न हो तो मिथ्यावादी की वाणी जैसे व्यर्थ हो जाती है वैसे इसकी भी यात्रा निष्फल हो जाती है।

यस्मिन्वारे दुर्मुहूर्तलग्नं भंगप्रदं नृणाम्।

रुक्प्रदं वारदोषं च तस्मात्तत्त्रितयं त्यजेत्।।

जिस वार में दुष्ट मुहूर्त या दुष्ट लग्न हो तो वह मनुष्यों की यात्रा को निष्फल बना देता है। रोग प्रदान करने वाला वार होता है। इसलिए वार, मुहूर्त एवं लग्न तीनों के अशुभ होने पर त्याग कर देना चाहिए।

जीवे वा वज्रयोगोऽयं यातुः शत्रुविनाशकृत्।।

अधिमित्र के घर में स्थित बुध, शुक्र या बृहस्पति यदि लग्न में स्थित हो तो यह वज्र नामक योग होता है। जो यात्रा करने वाले के शत्रु का विनाश करता है।

अधिमित्रांशगे सौम्ये सिते वाथसुरार्चिते।

लग्नगे मित्रयोगोऽयं शत्रूणां सन्धिकृत्सदा।।

अधिमित्र के नवांश में स्थित होकर बुध, शुक्र या गुरु लग्न में स्थित हो जायें तो यह मित्र नामक योग होता है जो शत्रुओं से मेलजोल या मित्रता कराता है।

अधिमित्रगृहे स्वाधिमित्रांशस्थे भृगोः सुते।

गुरौ चानन्दयोगोऽयं सौम्ये चानन्ददः सदा।।

अधिमित्र के घर में अथवा अपने अधिमित्र के नवांश में स्थित शुक्र, गुरु या बुध हो तो यह

आनन्द नामक योग होता है और यह यात्री को सदैव आनन्द देने वाला होता है।

स्वोच्चगे लग्नगे सौम्ये शुक्रे वा देवपूजिते।

अमृतो नामयोगोऽयं यातुरायु:प्रदः सदा।।

अपने उच्च स्थान में गये हुए गुरु, शुक्र या बुध लग्न में स्थित हो तो यह अमृत नामक योग होता है यह यात्री के लिए सदैव आयु प्रदान करने वाला होता है।

उच्चगे लग्नसंस्थेषु बुधे वाऽथ गुरौ सिते।

शभसंज्ञो महायोगो यायिनां शुभदः सदा।।

उच्च स्थान में गया हुआ बुध, गुरु या शुक्र लग्न में स्थित हो जायें तो यह शुभ नामक महायोग होता है। जो यात्री को सदैव सुख देता है।

स्वोच्चे स्वोच्चांशगेर सौम्ये लग्नगे वा भृगोः सुते।

आये वा कीर्तियोगोऽयं यायिनां श्रीप्रदः सदा।।

अपने उच्च या अपने उच्चांश में बुध या शुक्र लग्न में गये हो अथवा लाभ स्थान में स्थित हो तो यह कीर्ति नामक योग होता है। यह यात्री को सदैव लक्ष्मी देने वाला होता है।

शुभग्रहे द्वये लग्नसंस्थे वा त्रितयेऽपि वा।

योगोऽतियोगसंज्ञोऽयं विजयोऽखिलभूप्रदः।।

यदि दो शुभग्रह अथवा तीन शुभग्रह लग्न में स्थित हो तो इस योग को अतियोग संज्ञा दी गयी हैं यह सम्पूर्ण पृथ्वी देने वाला तथा विजय देने वाला होता है।

त्रिषष्ठलाभगेष्वेषु रविमन्दकुजेषु च।

पूर्णचन्द्र महायोगः पूर्णराज्यप्रदः सदा।।

तीसरें, छठें या लाभ स्थान में सूर्य, शनि या मंगल स्थित हो तो यह पूर्ण चन्द्र नामक महायोग होता है। जो सदैव पूर्ण राज्य को देने वाला होता है।

यत्रैकादशगे चन्द्रे भानौ वा प्रबले शुभे।

अभयो नाम योगोऽयं भवत्यरिविनाशकृत्।।

जिसके ग्यारहवें स्थान में प्रबल हो करके चन्द्रमा या सूर्य स्थित हो तो इसे अभय नामक योग कहते हैं। यह सम्पूर्ण शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है।

परिघदण्डचक्रलक्षण –

अग्नेयानिलकोश्च विलिखेदेकां च रेखां चतु

ष्कोणे प्राग्लिखिते प्रसिद्धपरिघादण्डाख्यचक्रे शुभे।

तत्प्रागादिषु सप्तसप्तगमने वह्न्यादिततारालिखे।

दष्टाविंशति संख्ययैव परिघादण्डो न लंघ्योऽध्वगै:।।

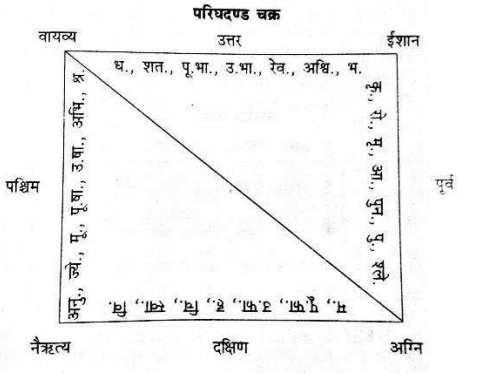

नक्षत्रराशियों का दिग्द्वार निर्णय –

यत्काष्ठास्थितभानि यानि गमने द्वाराणि तस्या दिश:

प्राक्चक्रे विहितस्य पुष्यदिनकृन्मित्राद्यतारास्सदा।

सर्वद्वारे शुभास्सुखार्थपशुदा: प्रागादिमेषादयो

दिग्द्वाराख्यगृहा: प्रदक्षिणविधावेकैकशोऽनर्थदा।।

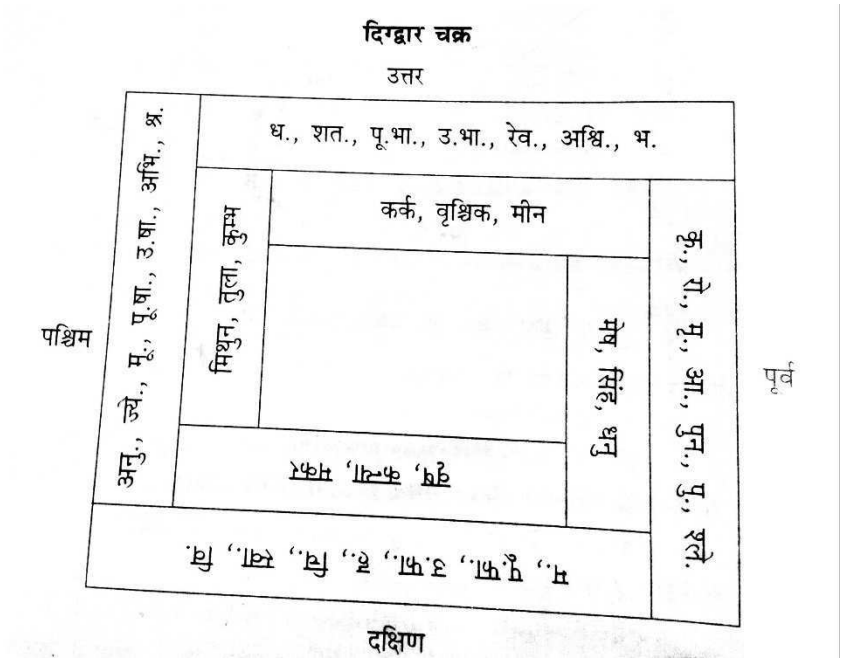

जिस दिशा में जो जो नक्षत्र है उस दिशा के वे दिग्द्वार नक्षत्र कहे जाते हैं। दिग्द्वार नक्षत्रों में तत्संबंधी दिशाओं में यात्रा करना शुभ होता है। पुष्य, हस्त, अनुराधा और अश्विनी नक्षत्रों में सभी दिशाओं में यात्रा शुभ होती है। इन्हें सर्वदिग्द्वार नक्षत्र कहा जाता है।

बोध प्रश्न

1. त्रिविध यात्रा से तात्पर्य है।
   क. ३ प्रकार की यात्रा ख. २ प्रकार की यात्रा ग. ४ प्रकार की यात्रा घ. कोई नहीं
2. यात्रा में पंचकशुद्धि विचार में कितने प्रकार के विचार किये गये हैं।
   क. २ ख. ३ ग. ४ घ. ५
3. जिसके ग्यारहवें स्थान में प्रबल हो करके चन्द्रमा या सूर्य स्थित हो तो इसे कौन सा योग कहते हैं।
   क. अभय ख. भय ग.काल घ. सुख
4. यदि दो शुभग्रह अथवा तीन शुभग्रह लग्न में स्थित हो तो इस योग को क्या कहते है।
   क. दुर्गम ख. अति ग. अभय घ. महायोग
5. महायोग नामक योग का क्या फल है।
   क. सदा विजय ख. हार ग. भीषण हार घ. विजय

3.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि त्रिविध यात्रा से तात्पर्य है – तीन प्रकार से की गयी यात्रा। पूर्व के इकाईयों में आपने दो मुख्य यात्रा के प्रकार सामान्य, विजयपरक यात्रा का अध्ययन कर लिया है। तीसरा यात्रा प्रयोजन के अनुसार होता है। जिस कार्य के उद्देश्य से यात्रा की जा रही हो, उसमें सफलता मिलेगी या नहीं। यह होता है प्रयोजनोद्देश्य यात्रा। यात्रा में मुख्यत: तिथि, वार, नक्षत्र एवं लग्न की शुद्धि देखी जाती है। पुन: उनका विविध योगों के आधार पर यात्रा के लिए मार्ग का विधान बतलाया गया है। त्रयंक और पंचकशुद्धि से सम्बन्धित यात्रा का भी उल्लेख पूर्वकालामृत में मिलता है। आइए सर्वप्रथम यात्रा करने की विधि, और प्रस्थान विधि को समझते है। पुन: त्रयंक और पंचकशुद्धि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

नारदपुराण में यात्रा करने की विधि का निर्देश करते हुए कहा गया है कि प्रज्वलित अग्नि में

तिलों से हवन करके जिस दिशा में जाना हो, उस दिशा के स्वामी को उन्हीं के समान रंगवाले वस्त्र, गन्ध, तथा पुष्प आदि उपचार अर्पण करके उन दिक्पालोंर के मन्त्रों द्वारा विधिपूर्वक पूजन करे। फिर अपने इष्टदेव और ब्राहमणों को प्रणाम करके ब्राहमणों से आशीर्वाद लेकर राजा को यात्रा करनी चाहिए।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

त्रिविध – तीन प्रकार का

आगमन - आना

पंचक – ५ प्रकार

त्रयंक – तीन प्रकार

अग्नि – आग

विदिशा – चार कोण को विदिशा के रूप में जानते है।।

त्रिषष्ठ – ३ और ६

पूर्णचन्द्र – पूर्णिमा का चन्द्रमा

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. घ
3. क
4. ख
5. क

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्त्तचिन्तामणि – यात्राप्रकरण

2. नारद संहिता – यात्राध्याय

3. प्रश्नमार्ग – यात्राप्रकरण

4. वृहद्वकहड़ाचक्र – अवधबिहारी त्रिपाठी।

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. वशिष्ठ संहिता
2. भृगु संहिता
3. पूर्वकालामृत
4. योगयात्रा

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. त्रिविध यात्रा से क्या तात्पर्य है।
2. त्रिविध यात्रा में शुद्धि विचार कैसे करते है।
3. यात्रा में शुद्धि विचार की क्यों आवश्यकता है।
4. त्रिविध यात्रा में दिशाशुद्धि के विभिन्न अवयवों का प्रतिपादन कीजिये।

इकाई - 4 यात्रा काल में भाव फल

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 यात्रा काल में भावफल परिचय
4.4 यात्रा काल में भाव फल विचार
4.5 सारांश
4.6 पारिभाषिक शब्दावली
4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.9 सहायक पाठ्यसामग्री
4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -205 के तृतीय खण्ड की पाँचवीं इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – यात्राकाल में भावफल। इससे पूर्व आपने यात्रा में दिक्शुद्धि से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'यात्राकाल में भावफल' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

जन्मकुण्डल्यां भावानां फलं भावफलं कथ्यते। सूर्यादि समस्त ग्रहों का यात्राकाल में भावफल

बतलाया गया है। यात्रा ज्ञान के अन्तर्गत हमें उक्त विषय का भी ज्ञान करना चाहिए।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'यात्राकाल में भावफल विचार' के बारे जानने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- भावफल को परिभाषित कर सकेंगे।
- यात्रा में सूर्य एवं चन्द्रमा के भावफलों को समझा सकेंगे।
- यात्रा में मंगल, बुध एवं गुरु ग्रह के भावफलों को समझ लेंगे।
- यात्रा में शुक्र एवं शनि ग्रह का भावफल बता सकेंगे।

4.3 यात्रा काल में भाव फल परिचय

यात्रा काल में तिथि, नक्षत्र, वार, लग्न, दिशा आदि शुद्धि के साथ-साथ ग्रहों के भावफल का भी उल्लेख हमें मिलता है। भावानां फलं भावफलम्। हम जानते है कि कुण्डली में द्वादश भाव होते हैं। उन द्वादश भावों में यात्रा के समय ग्रहों के स्थित होने पर क्या भावफल होगा। इसका विचार प्रस्तुत इकाई के माध्यम से आपको बताया जा रहा है। पहले द्वादश भावों की संज्ञा को जान लिजिए –

लग्नाद्भावा: क्रमाद्देहकोशधानुष्कवाहनम्।
मन्त्रोऽरिमार्ग आयुश्च हृदव्यापारानमव्यया:।।

अर्थात् १. देह या शरीर, २. कोश, ३. पराक्रम ४. वाहन, ५. मन्त्र, ६. शत्रु ७. यात्रा, ८. आयु, ९.

हृदय, १०. व्यापार, ११. लाभ और १२. व्यय। ये लग्न से आरम्भ कर क्रम से बारह भावों के नाम होते हैं।

अब यहाँ आपके ज्ञानार्थ 'प्रश्नमार्ग' ग्रन्थानुसार यात्राकाल में भावफलों का वर्णन किया जा रहा है –

यात्रायां तनुमृत्युशत्रुषु विधुं कृष्णे च खाम्ब्वस्तगं।
शुक्रं शत्रुमदागमेषु धिषणं रन्ध्रक्षत्रभ्रातृषु।।
पापा न षट् विक्रमाम्बरभवेष्वभ्रे च राह्वर्कजौ
रिष्फस्थान्नखिलान् ग्रहानशुभदान् प्रोवाच वाचस्पतिः।।

अर्थात् यात्रा लग्न में शुक्लपक्ष का चन्द्रमा लग्न, अष्टम तथा छठें भाव में नहीं होना चाहिए। साथ ही अन्य शर्तों का भी क्रमश: उल्लेख करते है –

- शुक्ल चन्द्र १०,४,४,७ में न हो।
- शुक्र ६,७,१०,१ भावों में न हो।
- गुरु ३,८,१० भावों में न हो।
- पाप ग्रह ३,६,१०,११ को छोड़कर अन्यत्र न हों।
- राहु-शनि दशम भाव में न हों।
- कोई भी ग्रह बारहवें भाव में नहीं होना चाहिए।

उक्त परिस्थितयों में यात्रा करने से अशुभ फल होता है। अत: यात्रा के समय इनका ध्यान रखना चाहिए।

अब सभी ग्रहों का भावफल का वर्णन करते है। सर्वप्रथम सूर्य ग्रह का यात्रालग्न में भावफल रणदीपिका के अनुसार यहाँ प्रतिपादित किया जा रहा है।

4.4 यात्रा में भाव फल विचार

यात्रा लग्न में सूर्य ग्रह का भावफल –

सन्तापशोकगदविकर्नकृद्युतमेऽर्कः।
कल्यार्थमानबलहानिकरो द्वितीये।।
हेमान्नविद्रुममणिक्षितिदस्तृतीये।
वैराग्यबन्धुकलहारतियश्चतुर्थे।।
पुत्रापदं सुतगृहेऽध्वनि चार्थसिद्धिं
षष्ठेऽभिवांछितफलाप्तिमरिक्षयं च।

द्यूने कलत्रकलहं धनसंक्षयं च ।
मृत्युंकरोति निधने सहितारुजं वा।।
धर्मं हिनस्ति नवमे सविताऽर्थदश्च
कृत्वा वियत्यविदितं श्रमकर्मदाता।।
रत्नागमं तु भृगुलाभगत: करोति
कृत्वाप्ययं व्ययगत: कुरुतेऽर्थमन्यम्।।

यदि यात्रालग्न के प्रथम भाव में लग्न में ही सूर्य स्थित हो तो रोग, शोक, सन्ताप तथा बाधा उत्पन्न करता है। यदि यात्रालग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो कलह, मानहानि, बलहानि तथा धनहानि होती है। यदि तृतीयस्थ सूर्य हो तो स्वर्ण, अन्न, मूँगा, मणि तथा भूमि को देने वाला होता है। चतुर्थ का सूर्य वैराग्य देता है तथा बन्धुजनों से कलह कराता है, मन में बेचैनी बनी रहती है। पंचमस्थ सूर्य सन्तान को कष्ट तथा यात्रा से धनलाभ होता है। षष्ठस्थ सूर्य से शत्रुनाश तथा मनोकामना सिद्ध होती है। सप्तमस्थ सूर्य से धन की हानि तथा स्त्री से कलह होता है। अष्टमस्थ सूर्य बीमारी तथा मृत्यु देता है। नवमस्थ सूर्य धर्म की हानि तथा धन लाभ कराता है। दशम भाव में यात्रालग्न का सूर्य अज्ञात कर्म एवं श्रम का फल प्रदान करता है। यात्रा लग्न से ११ वें भाव में स्थित सूर्य रत्नलाभ तथा भृगुलाभ कराता है। द्वादशवें भाव का सूर्य धनहानि कराता है।

यात्राकुण्डली में चन्द्र ग्रह का भाव फल

लग्ने शशिकलकविशोककरो च
स्त्रीवस्त्रान्नरत्नसुहृदात्मज: कुडुम्बे।
दुश्चिक्यगोयुवतिरत्नधनप्रदाता।
बन्ध्वाप्तिद: सुहृदि तत्क्षयदश्च कृष्णे:।।
अर्थप्रदस्तनयग: सुतशोकदश्च।
मित्रारितां प्रकुरुते न सुखश्च षष्ठे।।
अस्तेऽर्थभूयुवतिदोर्थविनाशदोऽणु।।
श्चन्द्रोऽष्टमे निधनशोकक: प्रयातु।।
प्रत्येति नाशु नवमे कुरुते च कार्यं।
क्षीणोऽत्ययं वियति वृद्धिकरोऽयथा स्थे।।
ऐश्वर्यसौख्यधनलाभमुपैति लाभे
क्लेशक्षयव्ययभयानि न रिप्फयाते।।

यदि यात्रालग्न में चन्द्रमा हो तो कलह तथा दु:खकारक होता है। द्वितीय भाव में स्त्री, वस्त्र, अन्न तथा रत्न का लाभ देता है। तृतीय भाव में स्त्री रत्न तथा धन देता है। चतुर्थ भाव में मित्रलाभ, वधुलाभ कराता है, परन्तु कृष्ण पक्ष का होने पर इन सब का हानि करता है। पंचम भाव चन्द्रमा पुत्र तथा धन देता है परन्तु कृष्णपक्ष का सन्तति की हानि करता है। छठें भाव का चन्द्रमा मित्रों को भी शत्रु बना देता है तथा सुख का अभाव करता है। सप्तम भावस्थ चन्द्र भूमि एवं स्त्री का लाभ देता है परन्तु दुर्बल होने पर अर्थहानि करता है। आठवाँ चन्द्र यात्रा करने वाले को मृत्युतुल्य कष्ट तथा दु:ख पहुँचाता है। नवमस्थ चन्द्र यदि यात्राकुण्डली में हो तो यात्री शीघ्र वापसी नहीं होता है। परन्तु उस का उद्देश्य सफल होता है। दशम का चन्द्र दुर्बल होने पर धनहानि होती है। यदि बलवान हो तो धर्म बढ़ाता है। ग्यारहवाँ चन्द्रमा ऐश्वर्य, सौख्य तथा धन का लाभ देता है।

भौम भाव फल –

लग्ने विषाग्निरुधिरागमशस्त्रबाधां
भिन्द्याद्बलं धनगतोऽर्थकरश्च पश्चात्।
दुश्चित्कगोयुवतिरत्नधनाम्बरासिं
बन्धुक्षयारिभयदो हिबुके महीज:।।
पुत्रापदं क्षितिसुत: कुरुते सुतस्थ:।
शत्रुप्रणाशमचिरादरिग: करोति।।
अर्थक्षयानरिगदादुनमस्तसंस्थो
बन्ध्वर्थनाशगदमृत्युभयानि मृत्यौ।।
धर्मं न साधयति धर्मगतो महीज:।
शस्तोऽम्बरे न शुभद: कथित: परैश्च।।
लाभेऽर्थसिद्धिविभवागमद: प्रयातु:।
वित्तक्षयं बहु करोति गतश्च रिप्फे।।

यदि यात्रा लग्न में मंगल स्थित हो तो विष, अग्नि एवं शस्त्र से बाध होती है तथा रक्स्राव होता है। यात्रालग्न से द्वितीय भाव में मंगल हो तो बल की हानि होती है, पश्चात् धनलाभ होता है। तृतीयस्थ भौम स्त्री, धन रत्न तथा वस्त्रों की प्राप्ति कराता है। चतुर्थ का मंगल बान्धवों तथा मित्रवर्ग का क्षय

कराता है। शत्रु से भय उत्पन्न होता है। पंचम भाव का मंगल सन्तान को कष्टकारक होता है। छठा भौम शत्रुओं का नाश करता है। सप्तमस्थ भौम धन हानि, रोग, शत्रुप्रकोप आदि से कष्ट देता है। अष्टम भाव का भौम बन्धुओं की हानि करता है। रोगभय तथा मृत्युभय होता है। यात्रालग्न से नवम भाव का मंगल धर्म की साधना नहीं होने देता है। दशम भाव में मंगल शुभा होता है, कुछ विद्वानों के मत से शुभ नहीं होता। एकादश भाव में स्थित भौम यात्रा में धनलाभ कराता है, वैभव की वृद्धि करता है। बारहवें भाव का मंगल यात्रा करने वाले को बहुत अधिक धनहानि देता है।

बुध भाव फल –

लग्ने कीर्णिसुखार्थलब्धिविजयान् प्राप्नोति वित्तं धने
सोत्कण्ठं स विरागमेति सहजे कामान् लभेताखिलान्।
पाताले शयनान्नपानविभवान् पुत्रागमं पंचमे।
षष्ठे यात्यरिबन्धुतां शशिसुते क्लेशश्च यातुर्भवेत्।।
जायास्थे प्रवरांगनाम्बर धनप्राप्तिर्बुधे कल्प्यते।
केचित्क्लेशमुशन्ति नैधनगते शंसन्ति केचित्शुभम्।।
धर्मे धर्मविवृद्धिरम्बरगते सिद्धिर्भवेदीप्सिता।।
विद्यार्थाप्तिरयत्नोऽथ परतो रिप्फश्च वाच्यो व्ययः।

यात्रालग्न में बुध की स्थिति सुख तथ धन का संचय कराती है तथा विजय देती है। द्वितीय भाव का बुध धनदायक होता है, कभी धनप्राप्ति चाहने पर होती है कभी बिना चाहे भी हो जाती है। तृतीयस्थ बुध से सभी मनोकामनायें पूरी होती हैं। चतुर्थ भाव के बुध से शयनसुख, भोजन, पेय पदार्थ तथा वैभव की प्राप्ति होती है। पंचम भाव का बुध पुत्रदाता होता है अर्थात् पुत्र से प्रसन्नता मिलती है। छठें भाव में बुध शत्रु से सन्धि कराता है तथा क्लेशकारक भी होता है। यात्रालग्न से सातवें भाव का बुध श्रेष्ठ स्त्रियों की प्राप्ति, वस्त्राभूषण तथा धन की प्राप्ति कराता है। अष्टम भावगत बुध की कुछ विद्वान प्रशंसा करते हैं तथा कुछ उसे अशुभ बताते है। नवम भाव का बुध धर्म की वृद्धि करता है। दशम भाव का बुध धर्म की वृद्धि करता है। दशम भाव का बुध मनोवांछित सफलता देता है। एकादश भाव का बुध बिना प्रयास के धन तथा विद्या की प्राप्ति कराता है। द्वादश भाव का बुध के समय यात्रा करने से धन का अतिव्यय होता है।

गुरु भाव फल –

कीर्णिलग्ने चार्थ लब्धिर्द्वितीये दुश्चित् कास्थेक्षु श्रमाप्ति: सुखाढये।
पातालस्थे धर्मताश्चाभिमान: कार्यं सिध्यत्यात्मजस्थेऽप्यसाध्यम्।
षष्ठे जीवे शत्रुरायाति वश्यं केचित्प्राहु: वश्यतां याति शत्रो:।
विन्दत्यस्तेऽरि: स्वयोषायशंसि मृत्यौ प्राणान् हन्त्यथान्ये जगुर्न:।।
पुत्रोत्पत्ति: धर्मवृद्धिश्च धर्मे जीवे कर्मण्यर्थसिद्धिर्यशश्च।
लाभे जीवे वांछितं याति सिद्धिं रिप्फं प्राप्ते क्लिश्यतेऽनेकदु:खै:।।

यदि यात्रालग्न युद्धयात्रा का लग्न में गुरु हो तो कीर्णि होती है। कीर्णि का अर्थ प्रसार या फैलाव होना है। अस्तु लग्न के गुरु के यात्रा करने वाले की ख्याति चारो ओर फैलती है। द्वितीयस्थ गुरु से धनप्राप्ति होती है। तृतीय भाव का गुरु यात्रा में थकान उत्पन्न करता है, जिससे उब तथा उकलाहट होती है। चतुर्थ भाव के गुरु में धार्मिक कार्यों में रूचि तथा अभिमान होता है। पंचम भाव के गुरु से कठिन कार्य मे असाधारण सफलता प्राप्त होती है। यदि युद्धयात्रा के लग्न से छठे स्थान में गुरु हो तो शत्रु वश में होता है। अन्य विद्वानों के अनुसार स्वयं यात्री शत्रु के फन्दे में फँस जाता है। यदि गुरु सप्तम भाव में हो तो प्रसिद्धि होती है, धन की तथा यश की प्राप्ति होती है। अष्टमस्थ गुरु के कारण पुत्रसुख मिलता है तथा धर्मकार्य सम्पन्न होते है। नवम भाव का गुरु से मनोवांछित सफलता मिलती है, धन तथा यश की प्राप्ति होती है। ग्यारहवाँ गुरु साफल्य देता है। बारहवाँ गुरु अनेक प्रकार के दु:ख एवं क्लेश देता है।

शुक्र भाव फल –

वेश्यार्थाम्बरमाल्यभोजनसुखप्राप्तिर्विलग्ने भृगौ।
लाभोऽर्थे सहजेन सीदति गत: प्राप्नोति चेष्टां श्रुतिम्।
पाताले सुहृदागम: सुतगृहे स्थानार्थमानाप्तय:।
षष्ठे शत्रुपराभवा रतिशुचस्त्वन्येऽन्यथाजगु:।।
दत्वा स्त्रीधनमस्तगस्वविषयव्युच्छित्तिदो भार्गव:।
कार्यं साधयतेऽष्टमेऽथ नवमे क्षिप्रं करोतीप्सितम्।।
स्वार्थं कर्मगत: प्रभूतधनदो लाभे जयार्थप्रद:।
शश्वद्द्वादशग: श्रमं प्रकुरूते शस्तोऽरैर्द्वादशे।।

यात्रालग्न में शुक्र वस्त्राभूषण, गन्ध-माल्य, भोजन, सुख तथा वेश्यादि की प्राप्ति कराता है। द्वितीय भाव का शुक्र धन का लाभ कराता है। यदि यात्रालग्न से तृतीय भाव में शुक्र स्थित हो तो शरीर में स्फूर्ति रहती है, शोक थकान नहीं आती है। खोई हुई वस्तु या तो प्राप्त हो जाती है या उसके सम्बन्ध में कोई सूचना मिल जाती है। यदि शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो मित्रों एवं बान्धवों से सम्बन्ध सुदृढ़ होते हैं। पंचम भाव के शुक्र से यात्रा में स्थान, पद एवं धन का लाभ होता है तथा सम्मान प्राप्त होता है। यदि यात्रालग्न से छठें भाव में शुक्र हो तो शत्रुओं से कष्ट होता है, दु:ख मिलता है परन्तु अन्य मत से शत्रु नष्ट होते हैं तथा सुख की प्राप्ति होती है। सप्तम भाव का शुक्र प्रारम्भ में स्त्री, धन, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति कराता है परन्तु अन्त में इनसे वियोग भी होता है। अष्टम भाव का शुक्र सफलतादायक होता है। नवम भाव का शुक्र हो तो शीघ्र ही मनोवांछित कार्य सम्पन्न होता है। यात्रालग्न से दशम भाव का शुक्र प्रभूत मात्रा में धन आदि का लाभ तथा कार्य में सफलता करता है। ग्यारहवाँ शुक्र स्थायी विजय देता है। बारहवें भाव में स्थित शुक्र कुछ विद्वानों के अनुसार अधिक परिश्रम कराता है, परन्तु अन्यों के अनुसार द्वादश शुक्र शुभ होता है।

शनि भाव फल –

बन्धुवधश्चार्कसुते विलग्ने धनेऽर्थहानिं लभते।
शुचंच शत्रोर्बलं हन्ति गतस्मृति चेच्चतुर्थगे तु।।
नार्थप्रसिद्धि: सुतभेऽर्कपुत्रे रिपुं रिपुस्थे स जयत्ययत्नात्।
उत्साहभंगोऽक्षिरुजश्च कामे विषाग्निशस्त्रादिवधोऽष्टमस्थे।।
धर्मे न धर्मं लभते सुखं वा न निवृत्ति: कर्मफलंच खस्थे।
एकादशस्थे जयवित्तलाभौ मन्देऽन्त्यगेनार्थमुपैति यात:।।

यदि यात्रालग्न में शनि बैठा हो तो बन्धुहानि का सूचक होता है, किसी प्रिय व्यक्ति का वियोग होता है। द्वितीय भाव का शनि धनहानि कराता है। तृतीय भाव का शनि शत्रुपक्ष के बल को नष्ट करता है। यात्रालग्न से चौथे भाव का शनि व्यक्ति को गुमनाम कर देता है, उसकी सुधि कोई नहीं लेता। यदि यात्रालग्न से पंचम भाव में शनि हो तो प्रत्येक कार्य को असफल करता है। छठा शनि बिना प्रयास के शत्रुओं पर विजय दिलाने वाला होता है। सप्तम भाव का शनि उत्साह भंग करता है तथा नेत्रों में पीड़ा करता है। विष, अग्नि, अस्त्र-शस्त्र आदि से घाव तथा मृत्यु होती है- यदि यात्रालग्न से शनि

आठवें स्थान में होता है। नवम भाव के शनि से धर्म तथा सुख दोनों की प्राप्ति होती है। यदि यात्रालग्न से दशम भाव में शनि हो तो किये हुए परिश्रम का फल नहीं मिलता जिससे यात्रा से वापसी भी संभव नहीं होती। ग्यारहवें भाव का शनि शत्रु पर विजय तथा धनलाभ प्रदान करता है। यदि द्वादश भाव में शनि हो तो यात्रा करने वाले का काम नहीं बनता है।

यात्राकुण्डली में ग्रहों का प्रकीर्णफल –

प्रायो जगु: सहजशत्रुदृशाय संस्था:।
पापा: शुभं सवितृजं परिहृत्य खस्थम्।।
सर्वत्रगा: शुभफलं जनयन्ति सौम्या
हित्वाऽस्तसंस्थममरारिगुरुं जिगीषो
सौम्योऽपि जन्मनि न यश्शुभवृष्टिदाता
स्थानं न तस्य शुभदं व्रजतो विलग्ने।
पापो विश: शुभफलं प्रकरोति पुंस:।।
स्थानं विलग्नगतिमिष्टमुशन्ति तस्य।

यदि पापग्रह तीसरे, छठे, दसवें तथा ग्यारहवें भाव में स्थित हों जिनमें शनि दशम को छोड़कर अन्यत्र ३,६,११ में हो तो शुभ फल प्राप्त होता है। दशम भाव में शनि शुभ फल नहीं देता है। शुभ ग्रह दशम भाव में शुभ फल प्रदान करता है परन्तु शुक्र सप्तम भाव में शुभ फल नहीं देता है। जिसकी जन्मकुण्डली में जो शुभ ग्रह शुभप्रद स्थिति में न हो वह शुभ ग्रह यदि यात्रालग्न में स्थित हो तो वह यात्रा में शुभ फल नहीं देता है। इसी प्रकार किसी जन्मकुण्डली में पापग्रह शुभफलदायी हो परन्तु वह यात्राकुण्डली के लग्न में बैठा हो तो वह भी शुभ फल देता है।

दशागोचरादि फल –

दशाधिपस्य य: शत्रुर्न जन्मनि बलान्वित:।
न गोचरे स शुभद: स हि सौम्योऽप्यनिष्टद:।।
य: साम्प्रतं शुभफलो यश्च जन्मनि वीर्यवान्।
दशापतेरतिसुहृत् पापोऽपीष्टप्रदो हि स:।।
निजरिपुजन्माधिपतीन्नीचस्थतरणिलुप्तकिरणो वा
लग्ने वा षष्ठे वा तिष्ठति यदि शोभना यात्रा।।

यात्रा समय जिस ग्रह की विंशोत्तरी दशा चल रही हो वह ग्रह यदि जन्मकुण्डली में दुर्बल हो तथा

वर्तमान गोचर में भी वह ग्रह अशुभ हो, यदि वह ग्रह यात्रा लग्न में स्थित हो तो अनिष्ट फल देनेवाला होता है। परन्तु जो ग्रह यात्राकालीन गोचर में बली हो, जन्मकुण्डली में भी बलवान हो तथा वर्तमान विंशोत्तरी दशा के भुक्तिपति का अतिमित्र हो तो भले ही वह पाप ग्रह क्यों न हो वह यात्रालग्न में बैठकर शुभ फल ही प्रदान करेगा। यदि यात्रा करने वाले राजा या सेनाध्यक्ष आदि के शत्रु की जन्मराशि का स्वामी युद्धयात्रा के समय अस्तंगत, नीच होकर यात्रालग्न में या उसके छठें भाव में बैठा हो तो यात्रा शुभफलदायक होती है। यथा - यात्रा करने वाले युद्धयात्री के शत्रु व्यक्ति की जन्मकालीन चन्द्रराशि तुला है, उसका स्वामी शुक्र यदि सूर्य के साथ ७ अंश से कम अन्तर पर हो या कन्याराशि में नीच का हो या अधिशत्रु की राशि में होकर यात्रालग्न में हो तो शुभ फल करेगा।

मुहूर्त्तचिन्तामणि में प्रतिपादित ग्रहों के भावफल विचार –

केन्द्रे कोणे सौम्यखेटा: शुभा: स्युर्याने पापास्त्रयायषट्खेषु चन्द्रः।
नेष्टो लग्नान्त्यारिरन्ध्रे शनि:खेऽस्ते शुक्रो लग्नेत नगान्तयारिरन्ध्रे।।

अर्थात् यात्राकालिक लग्न से केन्द्र और त्रिकोण १,४,७,१०,५,९ भावों में सभी शुभ ग्रह यात्रा में शुभफलदायक होते हैं। सभी पापग्रह ३,११,६,१० उपचय भावों में शुभफलदायक होते हैं। चन्द्रमा लग्न, द्वादश, षष्ठ और अष्टम भावों में अशुभ फलदायक, तथा शनि दशम भाव में, तथा शुक्र सप्तम भाव में अशुभ फलदायक होता है। लग्न का स्वामी ग्रह ७,१२,६,८ भावों में अशुभ फलदायक होता है।

बोध प्रश्न -

1. कुण्डली में भावों की संख्या कितनी होती है।
   क. १२ ख.१४ ग.१६ घ.१८
2. जन्मकुण्डली में यात्रा का विचार किस भाव से करते है।
   क. ५ ख. ६ ग. ७ घ. ८
3. यदि यात्रालग्न के प्रथम भाव में लग्न में ही सूर्य स्थित हो क्या उत्पन्न करता है।
   क. रोग ख. शोक ग. बाधा घ. सभी
4. यात्रा लग्न से ११ वें भाव में स्थित सूर्य क्या फल देता है।

क. रत्न लाभ ख. आयु वृद्धि ग. अशुभ घ. पुत्र लाभ

5. यात्रा कालिक कुण्डली के द्वितीय भाव में चन्द्रमा क्या फल देता है।

क. स्त्री ख. वस्त्र ग. अन्न घ. सभी

6. यात्राकालिक दशम भाव का शनि क्या फल देता है।

क. शुभ ख. अशुभ ग. धन लाभ घ. लाभ

4.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि भावानां फलं भावफलम्। तनु भाव अर्थात् शरीर भाव से लेकर व्यय पर्यन्त १२ भाव होते हैं। यदि यात्रालग्न के प्रथम भाव में लग्न में ही सूर्य स्थित हो तो रोग, शोक, सन्ताप तथा बाधा उत्पन्न करता है। यदि यात्रालग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो कलह, मानहानि, बलहानि तथा धनहानि होती है। यदि तृतीयस्थ सूर्य हो तो स्वर्ण, अन्न, मूँगा, मणि तथा भूमि को देने वाला होता है। चतुर्थ का सूर्य वैराग्य देता है तथा बन्धुजनों से कलह कराता है, मन में बेचैनी बनी रहती है। पंचमस्थ सूर्य सन्तान को कष्ट तथा यात्रा से धनलाभ होता है। षष्ठस्थ सूर्य से शत्रुनाश तथा मनोकामना सिद्ध होती है। सप्तमस्थ सूर्य से धन की हानि तथा स्त्री से कलह होता है। अष्टमस्थ सूर्य बीमारी तथा मृत्यु देता है। नवमस्थ सूर्य धर्म की हानि तथा धन लाभ कराता है। दशम भाव में यात्रालग्न का सूर्य अज्ञात कर्म एवं श्रम का फल प्रदान करता है। यात्रा लग्न से ११ वें भाव में स्थित सूर्य रत्नलाभ तथा भृगुलाभ कराता है। द्वादशवें भाव का सूर्य धनहानि कराता है। यदि यात्रालग्न में चन्द्रमा हो तो कलह तथा दु:खकारक होता है। द्वितीय भाव में स्त्री, वस्त्र, अन्न तथा रत्न का लाभ देता है। तृतीय भाव में स्त्री रत्न तथा धन देता है। चतुर्थ भाव में मित्रलाभ, वधुलाभ कराता है, परन्तु कृष्ण पक्ष का होने पर इन सब का हानि करता है। पंचम भाव चन्द्रमा पुत्र तथा धन देता है परन्तु कृष्णपक्ष का सन्तति की हानि करता है। छठें भाव का चन्द्रमा मित्रों को भी शत्रु बना देता है तथा सुख का अभाव करता है। सप्तम भावस्थ चन्द्र भूमि एवं स्त्री का लाभ देता है परन्तु दुर्बल होने पर अर्थहानि करता है। आठवाँ चन्द्र यात्रा करने वाले को मृत्युतुल्य कष्ट तथा दु:ख पहुँचाता है। नवमस्थ चन्द्र यदि यात्राकुण्डली में हो तो यात्री शीघ्र वापसी नहीं होता है। परन्तु उस का उद्देश्य सफल होता है। दशम का चन्द्र दुर्बल होने पर धनहानि होती है। यदि बलवान हो तो धर्म बढ़ाता है। ग्यारहवाँ चन्द्रमा ऐश्वर्य, सौख्य तथा धन का लाभ देता है।

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

भाव – जन्मकुण्डली में १२ भाव होते है।

देहस्थ - लग्न भाव में स्थित

रिपु – शत्रु

नवमस्थ – भाग्य स्थान में स्थित

यथाशीघ्र – जितनी जल्दी हो सके।

मृत्युतुल्य – मृत्यु के समान

भावस्थ - भाव में स्थित

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ग
3. घ
4. क
5. घ
6. ख

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुहूर्त्तचिन्तामणि – यात्राप्रकरण

2. प्रश्नमार्ग – यात्राध्याय

3. नारदसंहिता – यात्राप्रकरण

4. वृहद्वकहड़ाचक्र – अवधबिहारी त्रिपाठी।

4.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. वशिष्ठ संहिता

2. भृगु संहिता

3. पूर्वकालामृत

4. योगयात्रा

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. यात्राकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा का भावफल लिखिये।

2. मंगल ग्रह का भाव फल लिखिये।

3. भावफल से क्या तात्पर्य है। स्पष्ट कीजिये।

4. गुरु, शुक्र एवं शनि ग्रहों का भावफल लिखिये।

5. गोचर फल लिखिये।

6. मुहूर्त्तचिन्तामणि के अनुसार भावफल लिखिये।